अनुक्रमणिका

मुद्रक इन यू० एस० ए०

श्री जुबिली न्यागार्जी अ०३१२
९८५ सदस्य द्वारा सप्रेम भेंट
(दिनांक २९-

पश्चिमी प्रचार के "सोवियत सैनिक खतरे" के मिथक को इस सदी का सबसे बड़ा झूठ ठीक ही कहा जाता है। सचमुच, इससे ज्यादा बेहूदा बात की सोचना भी मुश्किल होगा कि जिस देश का सबसे पहला ही विधायी कार्य शांति के बारे में आज्ञप्ति रहा हो, जिसका आदर्श निःशस्त्रीकरण हो, जो लगातार नये-नये शांति-प्रस्ताव सामने रखता हो और एकपक्षीय शस्त्र-परिसीमन और कटौती का उदाहरण प्रस्तुत करता हो, उसी देश के विरुद्ध आक्रमकता का आरोप लगाया जाये। इसके बावजूद पश्चिमी प्रचार-साधन, विद्यालय, पादरी और विश्वविद्यालयों के विद्वान, बल्कि राजनेता तक, हर दिन और हर घड़ी इस मिथक को करोड़ों लोगों की चेतना में ठूसने में लगे रहते हैं।

इस सिलसिले में मुझे १९७६ की गरमियों में संयुक्त राज्य अमरीका की एक यात्रा की याद आती है। हम लोग, सोवियत पत्रकारों के एक प्रतिनिधिमंडल के सदस्य, ओजार्क्स, पाइंट-लुकआउट (मिसूरी राज्य) का एक स्कूल देखने गये हुए थे।

इस स्कूल में असहमति की कोई गुंजाइश नहीं है ...

निश्चयात्मक स्वर में कहते हैं – पूरे २८० लाख, न कम, न ज्यादा!

अंत में दीनदारों की मम्न भर्त्सना है – वे लोग भौतिक तुष्टियों के बारे में अत्यधिक सोचते हैं और चर्च की परवाह करना नहीं चाहते। निष्कर्ष एकदम व्यावहारिक है – अगर आप नहीं चाहते कि अमरीका को रूसी जीत ले और देश कम्युनिस्टों के नियंत्रण में चला जाये, तो चर्च को दान दीजिये। चर्च भी अपना "बिजनैस" करता है, मगर इस मामले में नफरत और खौफ का।

यह कोई किसी दो टके के धर्मांध का प्रलाप नहीं है। पुस्तिका को – और यह जानकारी, मानो विनम्रता दिखाते हुए, छोटे अक्षरों में दी गयी है – अमरीकी जीवन प्रणाली की बेहतर समझ फैलाने के लिए वाशिंगटन सम्मान पदक प्रदान किया गया है। बेचारी अमरीकी प्रणाली! और ओज़ार्क्स स्कूल के बेचारे छात्र

न्यूयार्क में मेरी प्रोफेसर मार्शल शुल्मान से भेंट हुई, जो उस समय कोलंबिया विश्वविद्यालय के रूसी संस्थान के प्रधान थे। इस विख्यात सोवियतविद ने तनिक संकोचपूर्वक कहा "अगर आप किसी आम आदमी से, मसलन किसी टैक्सी ड्राइवर से सोवियत के बारे में पूछें, तो वह बहुत करके वही दुहरायेगा, उसने कहीं पढ़ा या सुना है – रूस की फौजी ताकत ज्यादा है और वहां आज़ादी बहुत ही कम है। की कोई बात "

प्रधान, ग्रैहम क्वार्ड, ने हमसे साफ-साफ कहा "आपके देश के प्रति हम लोग पूर्वाग्रह रखते है और अपने छात्रों को उसके अनुसार ही पढ़ाते है। आपकी व्यवस्था के बारे में हमारा अपना दृष्टिकोण है"

कोई बात नही, सोवियत लोगों का भी "मुक्त उद्यम" – पूंजीवादी शोषण और सामाजिक असमानता की व्यवस्था के बारे में अपना ही नजरिया है। लेकिन ऐसा एक भी सोवियत स्कूल या कालेज नहीं है जहा ऐसी पुस्तिकाए या परचियां देखी जा सकें जैसी हमने इस कालेज के गिरजाघर में देखी थीं। सोवियत छात्रों में अमरीकी जनता के प्रति वैर विद्वेष उपजानेवाली कोई पुस्तक-पुस्तिका या परचा देखने को भी नहीं मिलेगी।

"यह हमारे यहां भी हो सकता है", कालेज गिरजाघर में देखी गयी एक पुस्तिका का यह भयावह शीर्षक था। छात्रों और भक्त-समुदाय के अन्य सदस्यों को उसमें क्या बतलाया गया है? "कम्युनिज्म अब दुनिया को जीतने का इरादा रखता है और उसके लिए निरंतर प्रयास किये जा रहा है", और कसी का कहना है कि "जब हम सयुक्त राज्य अमरीका को जीत लेंगे, तो छ करोड अमरीकियों का सफाया करना होगा" और इसके बाद गिरजाघरों और दीनदारों पर नाजिल होनेवाली विभीषिकाओं की एक पूरी सूची थी और किन्हीं जॉन नोबल के उद्धरण थे, जिनमें बतलाया गया है कि "लौह आवरण के पीछे २... लाख लोग दास शिविरों में है"। श्री नोबल एक

निश्चयात्मक स्वर में कहते हैं – पूरे २८० लाख, न कम, न ज्यादा।

अन्त में दीनदारों की सख्त भर्त्सना है – वे लोग भौतिक तुष्टियों के बारे में अत्यधिक सोचते हैं और चर्च की परवाह करना नहीं चाहते। निष्कर्ष एकदम व्यावहारिक है – अगर आप नहीं चाहते कि अमरीका को रूसी जीत लें और देश कम्युनिस्टों के नियन्त्रण में चला जाये, तो चर्च को दान दीजिये। चर्च भी अपना "बिज़नैस" करता है, मगर इस मामले में नफ़रत और ख़ौफ़ का।

यह कोई किसी दो टके के धर्मांध का प्रलाप नहीं है। पुस्तिका को – और यह जानकारी, मानो विनम्रता दिखाते हुए, छोटे अक्षरों में दी गयी है – अमरीकी जीवन प्रणाली की बेहतर समझ फैलाने के लिए वाशिंगटन सम्मान पदक प्रदान किया गया है। बेचारी अमरीकी प्रणाली! और ओज़ार्क्स स्कूल के बेचारे छात्र.

न्यूयार्क में मेरी प्रोफ़ेसर मार्शल शुल्मान से भेंट हुई, जो उस समय कोलंबिया विश्वविद्यालय के रूसी संस्थान के प्रधान थे। इस विख्यात सोवियतविद ने तनिक संकोचपूर्वक कहा "अगर आप किसी आम आदमी से, मसलन किसी टैक्सी ड्राइवर से सोवियत संघ के बारे में पूछें, तो वह बहुत करके वही दुहरायेगा, जो उसने कहीं पढ़ा या सुना है – रूस की फ़ौजी ताकत ... ज्यादा है और वहां आज़ादी बहुत ही कम है। ... की कोई बात ..."

आतकवाद को बढ़ावा, समर्थन और विस्तार प्राप्त होता है

विदेश विभाग (मत्रालय) के आधिकारिक प्रवक्ता ्रा लगाये गये आरोप भी बेबुनियाद और अविश्व-नीय सिद्ध हुए - उन्होने कहा था कि सोवियन सघ लस्तीनी मुक्ति सगठन को "आतकवादी कार्रवाइयो" लिए हथियार मुहैया करता है, अन्तर्राष्ट्रीय आतकवाद ा समर्थन करने के लिए क्यूबा और लीबिया जैसे शो का उपयोग करता है, तथाकथित राष्ट्रीय मुक्ति घर्षो को बढ़ावा देता है आदि।

यह अभियान जोर पकड़ता गया। अमरीकी सीनेट ने फिर से स्थापित सुरक्षा तथा आतकवाद विषयक समिति के सामने सुनवाइया शुरू हो गयी - इस समिति का कार्यभार था रूसियो के "विश्वव्यापी तिकवादी जाल" का परदाफाश करना।

लेकिन सारे जतन करके भी सी० आई० ए० (सेंट्रल इटेलीजेंस एजेंसी - अमरीकी सरकार की केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी) आतकवाद के साथ सोवियत सघ को जोड़नेवाला कोई भी सबूत न जुटा सकी। इस अभियान के लिए कोरे प्रचार के शोर-शराबे की नही, ठोस सबूत की जरूरत थी और यह सबूत कही था ही नही।

इस नाकामी की सफाई वाशिगटन ने यह कहकर देने की कोशिश की कि अमरीकी गुप्तचर्या के हाथ बधे हुए हैं, जिसके लिए अमरीकी काग्रेस (ससद) दोषी है, जिसने सी० आई० ए० के कुत्सित कार्यों

की [illegible] के [illegible]
गया है। इस [illegible]
की [illegible] है कि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
है। लेकिन फिर भी नहीं मिल पाए हैं। [illegible]
में कोई गड़बड़ नहीं है। उसके [illegible]
प्रचार पहले की तरह ही जारी है।

अभियान के [illegible] ने अपने [illegible] की पहली को पुनः समय अमरीकी और [illegible] को ध्यान में रखा। उस समय [illegible] और अतिवादी वामपंथी गुटों की आतंकवादी कार्रवाइयां पश्चिमी यूरोप और खासकर इटली को हिला रही थी और उनकी व्यापक पैमाने पर निंदा हो रही थी। अमरीकी राजनेताओं और पश्चिम के विराट प्रचारतंत्र ने इस स्थिति का लाभ उठाकर इस सब का दोष कम्युनिस्टों पर डालने का प्रयास किया। अक्तूबर १९१७ से लेकर कितने ही और अवसरों की तरह "विश्वव्यापी कम्युनिस्ट षड्यंत्र" और भयावह 'मास्को के हाथ" के लुज-पुज हौवे को एक बार फिर घसीटकर बाहर ले आया गया।

सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों को पश्चिमी जर्मनी के अराजकतावादी बादर-माइनहॉफ शहरी छापामार गिरोह से लेकर इतालवी लाल ब्रिगेड तक लगभग सारे ही आतंकवादी दलों का

"परदे के पीछे सचालक" घोषित कर दिया गया। कुछ अमरीकी अखबारो ने तो एक तुर्क नवफाशिस्त द्वारा पोप की हत्या का प्रयास भी "मास्को के हितो" के अनुरूप घोषित करने मे देर नही की।

सोवियत सघ ने सभी सुननेवालो को सुनाकर कहा कि वह सिद्धात रूप मे सरकारो के तथा उनके प्रतिनिधियो के राजनयिक कार्य-कलाप, अतर्राष्ट्रीय सचार और सामान्य अतर्राष्ट्रीय सपर्कों तथा समागम मे बाधा डालनेवाली सभी आतकवादी कार्रवाइयो के खिलाफ है और हिसा के ऐसे सभी कार्यों के विरुद्ध सामने आता है, जो किसी सकारात्मक लक्ष्य की सिद्धि मे सहायक नही बनते और जिनमे निरर्थक जाने जाती हैं। लेकिन पश्चिमी प्रचार, जो सामान्य रूप मे इतना मुखर है, इस वक्तव्य पर या तो चुप्पी साध जाता है, या उसे विकृत करता है और करोड़ो लोगो को बहकाकर उनके दिमागो मे यही विश्वास जमाने का प्रयत्न करता है कि युयुत्सु कम्युनिस्ट विचारधारा स्वभाव मे ही "आतकवाद का दर्शन" है, बोल्शेविको ने आतकवाद की बदौलत ही सत्ता प्राप्त की थी और सोवियत सघ "बस दिखावे के लिए" ही आतकवाद की निदा करता है, क्योकि वह तनाव शिथिलन को किसी भी कीमत पर इसीलिए बनाये रखना चाहता है कि वह उसके हित मे है (क्या तनाव शिथिलन अन्य राष्ट्रो के हित मे नही है?)। सबूत कोई भी नही दिया जाता, मगर इसकी वजह भी बहुत साफ है– मास्को बड़ा धूर्त है, वह बड़े गुप्त रूप मे काम करता है और

मे पहुचने के भी पहले कहा था "किसी भी दूर-दराज़ सकट स्थल की गहराई मे चले जाइये – उसकी जड मे आपको सोवियत सघ ही मिलेगा" ('न्यू रिपब्लिक', ५ अप्रैल, १९८०)।

मतलब यह कि राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक उद्धार के लिए सघर्ष आतरिक कारणो, ऐतिहासिक विकास की मागो अथवा पिछडेपन, गरीबी और परा-धीनता पर पार पाने की आकाक्षा से नही उत्पन्न होता है, बल्कि विदेश से सोवियतो द्वारा, जैसे कि रोनाल्ड रैगन कहते हैं, "अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकाक्षाओ" की पूर्ति के लिए भडकाया जाता है। मतलब यह कि इस तरह का सघर्ष "अवैध" है, उसका स्वरूप "आतकवादी" है। अत सोवियत सघ तथा अन्य समाज-वादी देशो द्वारा राष्ट्रीय स्वतत्रतासग्रामियो को दी जानेवाली सहायता "आतकवाद के समर्थन" के अलावा और कुछ नही है। और यह सब "सयुक्त राज्य अम-रीका के राष्ट्रीय हितो" के लिए गभीर खतरा है।

और इसलिए सयुक्त राज्य अमरीका को किसी भी साधन का उपयोग करने का "अधिकार" है। उसे गावो को उनमे रहनेवाले शात निवासियो सहित भस्मीभूत कर देने का, अवाछित सरकारो को उलट देने और अवज्ञाकारी राजनीतिक कार्यकर्ताओ और राजनीतिज्ञो की हत्या करने का "अधिकार" है, पूर्णतया शस्त्रसज्जित होने, "अतर्राष्ट्रीय आतकवाद से लडने" के बहाने की आड मे हज़ारो लेबनानी और फ़िलस्तीनी बूढो, बालको और स्त्रियो को कत्ल

करनेवाले इसराइली आक्रामकों को सर्वतोमुखी मदद देने का "अधिकार" है, नस्लवादी दक्षिण अफ्री के साथ साठ-गाठ करने और अफ्रीका के दक्षिण मे स्वाधीनता आदोलनो को कुचलने मे उसकी मदद कर का "अधिकार" है, निकारागुआ और सल्वादोर के देशभक्तो के खिलाफ प्रच्छन्न और खुला युद्ध चलाने अनेक लातीनी अमरीकी देशो को खून मे डुबानेवाले तानाशाहियो को वित्तीय सहायता देने और शस्त्रसज्जित करने का "अधिकार" है।

"आतकवाद के जननस्थलो" की श्रेणी मे वाशिंग टन सर्वोपरि फिलस्तीनी मुक्ति सगठन, लीबिया, निकारागुआ के सैडीनिस्टी नेतृत्व और स्वापो (दक्षिण पश्चिम अफ्रीकी जन सगठन) के नाम लेता है। लेकिन वास्तव मे अमरीकी राजनीतिज्ञो ने जनगण की अवहेलना करते हुए और उनके अधिकारो तथा आका- क्षाओ का तिरस्कार करते हुए सारे ही राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन पर यह लेबल चस्पा कर दिया है।

इन आदोलनो के प्रति वाशिगटन का रवैया रैगन प्रशासन के अधीन स्पष्टत बदल गया है। आठवे दशक के उत्तरार्ध मे, अपनी वियतनामी मुहिमबाजी ढेर होने के बाद, वाशिगटन ने विकासमान देशो सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को सीधे ही न बल्कि उसे सयुक्त राज्य अमरीका

इजारेदारों के शासन के लिए सोवियत संघ पर सैन्य श्रेष्ठता प्राप्त करने की नग्न इच्छाशक्ति का औचित्य स्थापन और समर्थन करना। साथ ही सोवियत संघ और अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के खतरे को बढ़ा चढ़ाकर पेश करनेवाले जनमत को बदलना, इन सारे अनुदार उदारों और युद्धविरोधी आन्दोलनकारियों को बंद करना और इस तरह से संयुक्त राज्य अमरीका की आक्रामक विदेश नीति के लिए व्यापक समर्थन प्राप्त करना भी है।

यहां भी नफरत और खौफ के धंधे में न उठाने की ही बात है। बिलकुल ओजार्क्स गिरजा के कठमुल्ला ज्ञानविरोधियों की ही तरह अमरीकी राजनेता अमरीकियों से अपने खीसे खाली करने की अपील कर रहे हैं—हथियारों की अभूतपूर्व होड़ के लिए, बढ़ती हुई सेना के लिए, नये फौजी अड्डों के लिए, गुप्तचर सेवाओं के लिए और घोरतम प्रतिक्रियावादी शासनों को करोड़ों डालर की आर्थिक सहायता देने के लिए। अगर नहीं चाहते कि सोवियत अमरीका को जीत ले और कम्युनिस्ट सारी दुनिया पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर ले, तो खीसे खाली करो।

इस कुत्सापूर्ण शोर-शराबे का एक लक्ष्य और है—दोष दूसरे के मत्थे मढ़ना। सामान्य रूप में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समस्या है या नहीं? निस्सन्देह है। आतंकवाद की दो किस्में हैं—सरकार और उसके अधिकारियों का अथवा सरकार द्वारा समर्थित आतंकवाद, और प्राइवेट व्यक्तियों या उनके संगठनों का

तकवाद। दोनो ही प्रकार के आतंकवाद निंदनीय हैं
र अतर्राष्ट्रीय अपराध हैं। लेकिन फिर भी पहले
ार का आतंकवाद ज्यादा खतरनाक है और दावे
साथ यह कहने का हर कारण है कि राजकीय आतंक-
खासे बड़े अरसे से अमरीकी साम्राज्यवाद की
दा नीति का एक अग बन चुका है, जिसने जगत
दार की भूमिका ग्रहण कर ली है। राजकीय
कवाद क्रांतिकारी तथा राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के
द्ध उसके संघर्ष के लगभग मुख्य साधन का अधिका-
रूप ग्रहण करता जा रहा है। साम्राज्यवाद के
स्वाधीनता तथा सामाजिक प्रगति का मुकाबला
के लिए कोई राजनीतिक, वैचारिक अथवा
मक मूल्य नही है, उसके पास राष्ट्रो को आकर्षित
के लिए कुछ भी नही है। यही कारण है कि वह
पर ही सब दाव लगाता है और आर्थिक प्रति-
त्मक कार्रवाइयो, राजनीतिक हत्याओ, अतर्ध्वंस
बलात सत्ता-परिवर्तनो द्वारा औरो पर अपनी
को थोपता है। अमरीकी केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी
० आई० ए०) क्रांतिकारी तथा प्रगतिशील शक्तियो
रुद्ध इस ध्वंसकार्य मे मुख्य हथियार का काम
है।

लेकिन हम वाशिंगटनी राजनीतिज्ञो का अनुकरण
करेंगे, जो प्रमाण की अवहेलना करते हैं। आइये,
र कम विकासमान देशो मे सी० आई० ए० की
इयो के प्रमाण पर नजर डाले।

नवरी, १९८१ तक अखडनीय रूप मे प्रमाणित

हो चुका था कि निम्नलिखित अन्तर्राष्ट्रीय अपराध सी०
आई० ए० की सहभागिता में या उसके निर्देश
किये गये थे : ईरान में राज्य-परिवर्तन और मुसद्दिक
सरकार का उलटा जाना (१९५३), ग्वाटेमाला
सैन्य राज्य-परिवर्तन और आर्बेंस सरकार का उल
जाना (१९५४), मिस्र के राष्ट्रपति नासिर
हत्या का षड्यन्त्र (१९५८), सीलोन (अब श्रीलंका)
के प्रधान मन्त्री सोलोमन भंडारनायक की ह
(१९५९), भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेह
के विरुद्ध षड्यन्त्र, कांगो लोकतान्त्रिक गणराज्य (ज़
आइर) के प्रधान मन्त्री पत्रीस लुमुम्बा की हत्या,
डोमिनिकन गणतन्त्र में बलात् राज्य-परिवर्तन (१९६१),
मोज़ाम्बीक मुक्ति मोरचा (फ़्रेलीमो) के अध्यक्ष ए
आर्दो मोंदलाने की हत्या (१९६९), गिनी तथ
केप वर्द द्वीप समूह की अफ़्रीकी स्वतन्त्रता पार्टी के
महासचिव आमील्कार कब्राल की हत्या (१९७३),
चिली में जन एकता सरकार का उलटा जाना और
राष्ट्रपति सल्वादोर अल्येंदे की हत्या (१९७३), बांगला-
देश के पहले राष्ट्रपति शेख़ मुजीबुर्रहमान की हत्या
(१९७५), कांगो लोक गणराज्य के राष्ट्रपति एम०
न्गूआबी की हत्या (१९७७)।

बेशक, यह पूरी सूची नहीं है – इसमें और नाम
भी जोड़े जा सकते हैं, लेकिन अगर विश्व जनमत
को ज्ञात सारी ही सी० आई० ए० कार्रवाइयों का
भी उल्लेख कर दिया जाये, तो भी यह समुद्र में तैरते
हिमखंड के दिखायी देनेवाले ऊपरी सिरे के समान

ही होगा, जिसका अधिकांश पानी के नीचे रहता है। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा "आतंकवाद के खिलाफ जिहाद" शुरू किये जाने के बाद अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके खुफिया गुर्गों के अन्तर्राष्ट्रीय अपराध किसी भी तरह घट नहीं गये हैं, बल्कि सिर्फ उनका कपटावरण ही बेहतर हो गया है। सी० आई० ए० खुद पीछे रहने और अपने कठपुतलों के जरिए ध्वंसकार्य करने को ही ज्यादा तरजीह दे रही है।

उदाहरण के लिए, १९८१ में दो षड्यंत्रों का भेद खुला था—एक भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के खिलाफ और दूसरा जाम्बिया के राष्ट्रपति कैनेथ काउंडा के विरुद्ध। प्रथमोक्त षड्यंत्र का मुख्य आयोजक आनंद मार्ग था, जो सी० आई० ए० तथा अन्य पश्चिमी गुप्तचर सेवाओं से घनिष्ठत सबद्ध एक घोर प्रतिक्रियावादी संगठन है, दूसरे षड्यंत्र में सी० आई० ए० की अपने दक्षिण अफ्रीकी समवर्ती संगठन के साथ मिलीभगत थी। सी० आई० ए० और दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर सेवा की सेशैल्स द्वीपसमूह गणराज्य पर भाड़े के सैनिकों के हमले में शिरकत थी, सी० आई० ए० ही प्रीटोरियाई नसलवादी हुकूमत और उसकी गुप्तचर सेवाओं के साथ घनिष्ट रूप से मिलकर अंगोली लोक गणराज्य के विरुद्ध पार्थक्यवादी यूनीटा और अंगोली राष्ट्रीय मुक्ति मोरचा (एफ० एन० एल० ए०) गुटों के जरिए ध्वंसकार्य कर रही है।

बस, तभी आसमान फट पडा। सत्ताच्युत तानाशाह
सोमोसा के हजारो ही भूतपूर्व राष्ट्रीय रक्षादलियो
(सैनिको) को गिरोहो मे जल्दी-जल्दी सगठित किया
गया। हाडुरास मे स्थित अड्डो मे वे लोग छिपकर
निकारागुआ मे प्रवेश करने, तोडफोड करने और
किसानो और शिक्षको को कत्ल करने लगे। इन आ-
तंकवादी गिरोहो को गुप्त रूप मे प्रशिक्षित करने,
उन्हे पैसा और हथियार मुहैया करने का जिम्मा सी०
आई० ए० ने लिया। बाद मे पैटागॉन (अमरीकी
सशस्त्र सेनाओ का मुख्यालय) ने १०० सैनिक सलाह-
कार हाडुरास भेजे, ताकि वे निकारागुआ पर सशस्त्र
आक्रमण करने के लिए प्रतिक्रातिकारी उत्प्रवासियो मे
से सशस्त्र दलो के सगठन के काम को पूरा कर सके।

कैरीबियन सागर मे बडे पैमाने पर नौसैनिक
अभ्यास किये गये, जिन्हे स्पष्टत आक्रमक शक्ति-
प्रदर्शन की ही सज्ञा दी जा सकती है। वाशिंगटन ने
निकारागुआ को पहले से तय ऋण देना स्थगित कर
दिया, खाद्यसामग्री की सप्लाई को रोक दिया और
अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा सगठनो द्वारा निकारागुआ को ऋण
दिये जाने मे अडगे लगाये। निकारागुआ के भीतर सी०
आई० ए० एजेटो ने "उदारो"—सरकारविरोधी गुटो
और मालिको के सघो—को मुक्तहस्त वित्तीय सहायता
प्रदान की और उन्हे आर्थिक रूपातरणो का ध्वंस
करने के लिए प्रोत्साहित किया। सब कुछ बिलकुल वैसे
ही हो रहा है कि जैसे चिली मे हुआ था।

इतना ही नहीं। राष्ट्रपति रैगन ने निकारागुआ

के विरुद्ध प्रच्छन्न सक्रियाओं की योजना को अनुमो
किया जिसके अनुसार सी० आई० ए० को मु
सामोसाइयों और क्युवाई तथा अन्य प्रतिक्रांतिकारि
के अर्धसैनिक भाड़े के दस्ते स्थापित करने का अधि
प्रदान किया गया। इन भाड़े के सैनिकों को हाडु
से निकारागुआ में महत्वपूर्ण ठिकानों – पुलों, बिज
घरों, बांधों और औद्योगिक उद्यमों – पर हमले क
और सीमांतवर्ती इलाकों पर छापे मारते थे। इ
लोगों के इन दस्तों को संगठित करने के लिए
१६० लाख डालर की रकम विनियुक्त की ग

निकारागुआ के विरुद्ध ध्वंसकार्य में संयुक्त
अमरीका ने उसके पडोसी देशों को भी खींच लि
अमरीकी "सलाहकारों" के निदेशन में हाडु
सेना सीमा पर लगातार भड़कावे की कार्रवा
करती रहती है। हाडुरास और कोलंबिया की सर
के साथ उनके देशों में नये सैनिक अड्डे कायम
और पुरानों का आधुनिकीकरण किये जाने के बा
वार्ताएं हुई। फौजी हैलीकॉप्टरों द्वारा पनामा नह
से छतरीधारी सैनिक कोस्टा रीका पहुंचाये गये
वहां युद्ध अभ्यासों का सिलसिला शुरू किया

सभी तरफ से दबाव बढ़ाया गया। हाडुरा
लगे निकारागुआ के उत्तर-पूर्वी सीमांत पर
शुरू हो गयी। अमरीकी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशि
आतंकवादियों ने निकारागुआ में दो पुलों को
दिया और राजधानी में अनेक उद्यमों को उड़ाने
गणराज्य के नेताओं की हत्या करने की कोशिशें

वैरेट्स (हरी टोपियां) नामक विशेष सैन्य दल मे अफसर और उसके बाद अंगोला, मोजांबीक, ज़ाविया तथा रोडेशिया मे भाड़े का सैनिक और कमांडर रहा। "मै जो भी पैसा दे, उसके लिए लडने को तैयार हू – कम्युनिस्टो को छोड़कर," वह कहता है। 'यह इसलिए है कि इस देश मे हमारी परवरिश ही इसी ढग मे होती है – हम और वे, हम भले और वे बुरे, हम अमरीकी और वे रूसी। मेरे दिल मे ये विचार मजबूत जड़े जमाये हुए है।"

कहीं ये बटमार ओज़ार्क्स गिरजाघर तो नहीं जाया करते थे? पर महत्व की बात यह नहीं है। ये लोग, ये लकेट और अर्ली जैसे लोग रट तो यह लगाते है कि वे "नाखुदा कम्युनिज़म" और "अनर्राष्ट्रीय आतंकवाद" के खिलाफ, "स्वतंत्र विश्व" के आदर्शों के लिए लड़ रहे हैं, मगर नज़रें डालरो की गड्डी पर टिकाये रहते है और उसी के लिए सी० आई० ए० और उसी जैसे सगठनो के आदेशो पर वे हत्या, लूटमार, अत्याचार, बलात्कार और आगज़नी करते हैं

नहीं, राजनीतिक आतंकवाद कम्युनिस्टो के लिए समाजवाद के लिए या विकासमान देशो के लिए किसी काम का नहीं है – ससार के क्रातिकारी रूपांतरण के लिए, सामाजिक प्रगति तथा राष्ट्रीय मुक्ति के लिए लड़नेवाले सभी जानते हैं कि इतिहास की गति उन्ही के साथ है और इसलिए वे आतंकवाद को सिद्धातत अस्वीकार करते हैं। आतंकवाद सिर्फ साम्राज्यवाद

बोरीस स्वेतोव

हिंसा और आतंक का सिंडीकेट

बिना नियमों का खेल

दूसरे विश्वयुद्ध में साम्राज्यवाद कमज़ोर होकर निकला। उसके सर्वोत्कृष्ट आक्रामी दस्तों — नात्सी जर्मनी, फ़ाशिस्त इटली और सैन्यवादी जापान की पराजय और सोवियत संघ की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा विश्व समाजवादी व्यवस्था के उदय ने संयुक्त राज्य अमरीका के शासक हलकों को काफ़ी परेशान कर दिया। कम्युनिस्ट विचारधारा और सोवियत विदेश तथा आंतरिक नीति को बदनाम करने के लिए अटलांटिक के पार एक विराट प्रचारतंत्र को चालू कर दिया गया और जल्दी-जल्दी मनोवैज्ञानिक युद्ध की रणनीति तथा कार्यनीति को निरूपित किया गया।

इस प्रचार अभियान की पच्छन्न सक्रियाओं से अनुपूर्ति करने का निश्चय किया गया, अर्थात विश्वव्यापी पैमाने पर अतर्ध्वंस, षड्यंत्रों, हत्याओं और "छापामार" किस्म के अर्द्धसैनिक दलों की स्थापना सहित ध्वंसकार्य। इस ध्वंसकार्य को वैधता का आवरण पहनाने और जनमत को छलने के लिए उपयुक्त "विधि-व्यवस्था" की गयी।

संयुक्त राज्य केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी — सी० आई० ए० [illegible] धित राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम

की हो। मूल विचार यह था कि आरंभ ही से अधि-
नियम के अन्तर्गत की जानेवाली कार्रवाइयों को ध्यान-
पूर्वक सीमित और नियंत्रित रखा जाये अधिनियम
की इबारत में यह व्यवस्था है कि यह 'सर्वग्राही'
धारा सिर्फ उसी हालत में लागू हो कि जब राष्ट्रीय
सुरक्षा का सवाल हो।"*

इस तरह से राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम की "सर्व-
ग्राही" धारा उन लोगों के लिए एक तरह का कानूनी
बचाव का रास्ता बन गयी, जिन्होंने बिल्कुल आरंभ
से भी सी० आई० ए० की अमरीकी विदेश नीति के
एक गुप्त उपकरण की तरह कल्पना की थी।

दिसंबर, १९४७ में ही अमरीकी विदेश विभाग
ने यह सलाह दी थी कि राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद (रा०
सु० प०) विदेश नीति के परंपरागत तरीकों की प्रच्छन्न
सक्रियाओं से अनुपूर्ति करने के उपायों पर विचार करे।
उसी महीने परिषद ने रा० सु० प० निदेश सं० ४ जारी
किया, जिसने अमरीकी विदेश मंत्री को गुप्तवार्ता
सूचना के संग्रह से संबंधित कार्यों के समन्वयन में
काफी व्यापक अधिकार प्रदान किये। १४ दिसंबर,
१९४७ को अंगीकृत रा० सु० प० निदेश सं० ४/अ
ने सी० आई० ए० को मनोवैज्ञानिक युद्ध चलाने का
अनन्य अधिकार प्रदान किया और वह वास्तव में संयुक्त
राज्य अमरीका के बाहर प्रच्छन्न सक्रियाएं चलाने
के लिए एक कोरा परवाना था।

रा० सु० प० निदेश स० ४/अ ने मनोवैज्ञानिक युद्ध को इस प्रकार परिभाषित किया था

"प्रचार से लेकर अर्द्ध-सैनिक कार्रवाइयो तक, आर्थिक कार्रवाई से लेकर विदेशी राजनीतिक पार्टियो सूचना-माध्यमो और श्रमिक सगठनो को आर्थिक सहायता और समर्थन तक प्रच्छन्न कार्य प्रविधिया, विदेशी राजनीतिक पार्टियो को अमरीकी समर्थन, 'आर्थिक युद्ध', अतर्ध्वंस, शरणार्थी मुक्ति दलो को सहायता ..."*

जून, १९४८ से मार्च, १९५५ तक राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने सी० आई० ए० की प्रच्छन्न सक्रियाओ के बारे मे निदेशो की एक पूरी शृखला जारी की। १८ जून, १९४८ को रा० सु० प० निदेश स० १०/२ ने तथाकथित १०/२ परिषद का गठन किया, जो राष्ट्रपति फोर्ड के अधीन स्थापित तथाकथित "विदेश गुप्तचर्या कार्य परामर्शदातामडल" की पहली पूर्वगामी थी। इस परिषद के अधिदेश मे प्रस्तावित प्रच्छन्न कार्रवाइयों पर विचार करना सम्मिलित था। २३ अक्तूबर, १९५१ को रा० सु० प० निदेश स० १०/५ जारी किया गया, जिसने प्रच्छन्न कार्रवाइयो के सारे दुनिया मे और अधिक प्रसार की व्यवस्था की** और उनके समन्वित किये जाने के ढगों में कुछ

* *Final Report* — pp 142, 144

** इसके पहले सी० आई० ए० का प्रच्छन्न कार्य अधिकाशत मनोवैज्ञानिक युद्ध से ही सबद्ध था और लगभग पूरी तरह से जन सूचना माधनो से जुड़ा हुआ था, जिसमे जाली प्रकाशनो और व्याज

निष्क्रमण उपाय भी आते है विरोधी राज्यों
ध्वंसकार्य जिसमे ध्वंसकार्य तथा शरण
दलों की सहायता भी शामिल है और स
के सरकारी देशो मे स्थानीय कम्युनिस्टवि
का समर्थन। *

प्रच्छन्न सक्रियाओं के विस्तारित पैमा
न केवल अतियोग्यताप्राप्त ध्वंसकार्य विशेषज्ञ
बल्कि इन कार्रवाइयों का दुनिया भर मे स
संचालन करने के वास्ते एक विशेष निकाय
भी आवश्यक था।

ठीक इन्ही उद्देश्यों से पाचवें दशक
अर्धस्वायत्त नीति समन्वयन कार्यालय (नी०
की स्थापना की गयी, जो राजनीतिक
निदेश सीधे विदेश विभाग और प्रतिरक्षा
प्राप्त करता था। नी० स० का० की सस्थाप
वाले निदेश मे "सोवियत ध्वंसकार्य"
और "सोवियत खतरे" के बारे मे लबे प
थे। निदेश के रचयिताओं के विचार मे यह
का० को राजनीतिक, आर्थिक तथा विचा
ध्वंसकार्य सहित विभिन्न प्रकारों के प्रच्छन्न
लिए हरी झडी दिखाने का पक्का आधार प्र
था।

१९४९ मे नी० स० का० मे कुल ३
थे, १९५२ मे उनकी संख्या बढकर २,८१२

* *Final Report* pp 131-132

इनके अलावा विदेशों में सविदा के अतर्गत विभिन्न काम करनेवाले ३,१४२ लोग और थे। १९४९ में नी० स० का० बजट ४७ लाख डालर था, १९५२ में वह उछलकर एकदम ८२० लाख डालर पर पहुच गया। १९४९ मे विदेशों में उसके ७ केंद्र थे, १९५२ में नी० स० का० के कर्मी ४७ केंद्रों में काम कर रहे थे।

विदेशों में सी० आई० ए० की कार्रवाइया बिलकुल आरभ में ही प्रचड सोवियतविरोध पर आधारित थीं। ह्वाइट हाउस ने अध्यवसायपूर्वक सोवियत सघ को एक "आक्रामक शक्ति" के रूप में चित्रित किया और अपनी प्रच्छन्न सक्रियाओं की तैयारी और क्रियान्विति में नी० स० का० ने इसे ही अपना प्रस्थान बिंदु बनाया। रा० सु० प० के ध्वसात्मक कार्रवाइयों को अनुमोदित करनेवाले निदेशों में "सोवियत चुनौती का सामना करने" की आवश्यकता का सीधे-सीधे उल्लेख था। १९५० और १९५१ में जारी किये गये रा० सु० प० के निदेशों में इन सक्रियाओं को सब तरह से बढाने का आग्रह किया गया था। जल्दी ही विदेश विभाग तथा पैंटागॉन द्वारा नी० स० का० की कार्रवाइयों का निदेशन औपचारिक ही रह गया, जिससे नी० स० का० के लिए कितनी ही सक्रियाओं का सचालन अपने निर्णयानुसार करना सभव हो गया।

भिन्न-भिन्न अभिकरणों के हितों में विशेष नी० स० का० सक्रियाए चलायी जाती थी। विदेश विभाग अपने राजनयिक लक्ष्यों की सिद्धि के लिए राजनीतिक

निष्क्रमण उपाय भी आते हैं विरोधी राज्यों के विरुद्ध ध्वंसकार्य, जिसमें छापामार तथा शरणार्थी मुक्ति दलों की सहायता भी शामिल है और स्वतन्त्र विश्व के संकटग्रस्त देशों में स्थानीय कम्युनिस्टविरोधी तत्वों का समर्थन।"*

प्रच्छन्न सक्रियाओं के विस्तारित पैमाने के लिए न केवल अतियोग्यताप्राप्त ध्वंसकार्य विशेषज्ञों का ही, बल्कि इन कार्रवाइयों का दुनिया भर में संगठन और संचालन करने के वास्ते एक विशेष निकाय का होना भी आवश्यक था।

द्वारा एक ऐसे महत्वपूर्ण स्थानीय अधिकारी को अपने दल में लाने के प्रयास में पैदा हुआ था, जिसके नी० प० का० के साथ घनिष्ठ संबंध थे।

१९५० और १९५१ के बीच सी० आई० ए० के निदेशक, जनरल वाल्टर बैडेल स्मिथ ने दोनों सेवाओं के बीच समन्वयन सुधारों के लिए कई कदम उठाये। अगस्त, १९५२ में नी० स० का० और वि० स० का० का योजना निदेशालय में विलयन कर दिया गया। इस विलयन के परिणामस्वरूप ध्वंसात्मक संक्रियाओं की संख्या सहसा बढ़ गयी और प्रच्छन्न आसूचना संग्रहण कार्रवाइयों को क्षति पहुंची। एजेंट ध्वंसकार्य को अकारण ही तरजीह नहीं देते थे, क्योंकि उसके परिणाम जल्दी ही प्रत्यक्ष हो जाते थे, जब कि अपने लिए भेदियों को भरती करना लंबा, धीमा और श्रमसाध्य काम था, जो कोई तात्कालिक परिणाम नहीं उत्पन्न करता था।

१९५३ तक सी० आई० ए० ने समूचे तौर पर वह आकार प्राप्त कर लिया, जो अगले २० साल लगभग अपरिवर्तित बना रहा। कोरियाई मुहिमबाजी और चीन युद्ध के तीव्रीकरण ने सी० आई० ए० की तीव्र वृद्धि में योग दिया – १९४७ की तुलना में उसका आकार छ गुना अधिक हो गया।

सी० आई० ए० में तीन निदेशालयों की स्थापना की गयी। बजट, कर्मियों तथा अन्य साधनों का सबसे बड़ा हिस्सा योजना निदेशालय को मिला। १९५२ में सी० आई० ए० के बजट का ७४% और उसके

कार्रवाई और प्रचार अभियानों को प्रोत्साहित करता था, तो प्रतिरक्षा विभाग कोरियाई युद्ध के समर्थन में अथवा कम्युनिस्टों से संबद्ध छापामारों से लड़ने के लिए अर्द्ध-सैनिक सक्रियाओं की माग करता था। लक्ष्यों की इस विविधता ने सी० स० का० के लिए विशेषकर प्रशिक्षित कर्मीदल और उसके प्राविधिक साज-सामान सहित व्यापक साधनों को तैयार करना आवश्यक बना दिया।

सी० स० का० की स्थापना और सी० आई० ए० में उसकी विशेष स्थिति ने दो गंभीर प्रशासनिक समस्याओं को पैदा किया—सी० आई० ए० के निदेशक और सी० स० का० के बीच प्रतिद्वंद्विता और सी० स० का० तथा विशेष सक्रिया कार्यालय (वि० स० का०) के बीच वैमनस्य।

स्थानीय स्तर पर विवाद विशेषकर गंभीर थे। हर कार्यालय के विदेश स्थित सी० आई० ए० केंद्रों में अपने अलग प्रतिनिधि थे। अक्सर ऐसा होता था कि इन कार्यालयों को समान कार्यभार दिये जाते थे जिनके लिए वे उन्हीं एजेंटों का उपयोग करते थे और कभी-कभी ऐसा भी होता था कि कोई एक कार्यालय किसी एक एजेंट की सेवाओं का सिर्फ अपने लिए उपयोग करने की कोशिश करता था। १९५२ अगस्त में सी० स० का० और वि० स० का० के एक प्रचंड विवाद में तो सी० आई० ए० के अधिकार निदेशक जनरल वाल्टर बेडेल स्मिथ के आकस्मिक हस्तक्षेप की नौबत आ गयी थी। पर विवाद वि० स० का०

जाये और वे इसे समझे तथा समर्थन दे।"*

अमरीकी लोगों को इस अप्रीतिकर दर्शन के बारे में बहुत बाद में पता चला। अभाग्यवश, अपनी प्रच्छन्न कार्रवाइयां करने के लिए सी० आई० ए० को उनकी अनुमति की आवश्यकता नही थी।

१९५५ में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने ध्वंसात्मक कार्य के बारे मे एक नया निदेश – रा० सु० प० निदेश स० ५४१२ – जारी किया, जो फरवरी १९७० तक लागू रहा, जब तथाकथित समिति-४० की स्थापना हुई। निदेश मे सी० आई० ए० की ध्वंसात्मक कार्रवाइयों के मुख्य लक्ष्य सैन्यादेशो जैसी संक्षिप्तता और सटीकता से सूचीबद्ध थे

"अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म के लिए समस्याए पैदा करना और उनका लाभ उठाना।

"अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म को बदनाम करना और उसकी पार्टियो तथा सगठनो की शक्ति को घटाना।

"संसार के किसी भी इलाके पर अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट नियंत्रण को घटाना।

"सयुक्त राज्य अमरीका की ओर स्वतंत्र विश्व के राष्ट्रो के झुकाव को मजबूत करना, जहा भी संभव हो, वहा इन राष्ट्रो और संयुक्त राज्य अमरीका के बीच हित-साम्य पर बल देना और इसी प्रकार, जहा उचित हो, वहां ऐसे पारस्परिक हितो के उन्नयन की हिमायत और वस्तुतः कामना करनेवाले समूहो

* *Final Report ... p 50*

कर्मीदल का ६०% गुप्त आसूचना संग्रहण और ध्वंसात्मक कार्यों के लिए ही विनियुक्त था।

छठे दशक के मध्य तक प्रच्छन्न सक्रियाएं सोवियत संघ तथा समाजवादी बिरादरी के दूसरे देशों के साथ "स्थायी द्वंद्व" का अभिन्न अंग बन चुकी थीं। सितंबर, १९५४ में प्रच्छन्न सी० आई० ए० सक्रियाओं के बारे में एक गुप्त रिपोर्ट राष्ट्रपति आइजनहॉवर के सामने पेश की गयी। रिपोर्ट की प्रस्तावना में प्रच्छन्न कार्रवाई की आवश्यकता का अत्यंत कुटिल औचित्यस्थापन किया गया था

"जब तक यह (प्रच्छन्न कार्रवाई–अनु०) राष्ट्रीय नीति बनी रहती है, एक ऐसा आक्रामक प्रच्छन्न मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक तथा अर्द्ध-सैनिक संगठन स्थापित करना बहुत जरूरी है, जो अधिक कारगर अधिक अनन्य, और अगर आवश्यक हो, तो अधिक निर्मम भी हो। इस लक्ष्य की तत्काल सफल और सुनिश्चित सिद्धि में किसी को भी बाधक नहीं होने देना चाहिए।

"अब यह स्पष्ट है कि हमारा एक दुर्दम शत्रु से सामना है ऐसे खेल में कोई नियम नहीं होते। इसमें मानव आचरण के अब तक स्वीकार्य मानक लागू नहीं होते हमें कारगर जासूसी और जासूसीविरोधी सेवाएं विकसित करनी चाहिए और अपने शत्रुओं का उच्छेदन, अंतर्ध्वंस और नाश करना सीखना चाहिए। यह आवश्यक हो जा सकता है कि अमरीकी लोगों को इस मूलतः अ

जाये और वे इसे समझे तथा समर्थन दे।"*

अमरीकी लोगों को इस अप्रीतिकर दर्शन के बारे में बहुत बाद में पता चला। अभाग्यवश, अपनी प्रच्छन्न कार्रवाइयां करने के लिए सी० आई० ए० को उनकी अनुमति की आवश्यकता नहीं थी।

१९५५ में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने ध्वसात्मक कार्य के बारे में एक नया निदेश – रा० सु० प० निदेश सं० ५४१२ – जारी किया, जो फरवरी, १९७० तक लागू रहा, जब तथाकथित समिति-४० की स्थापना हुई। निदेश में सी० आई० ए० की ध्वसात्मक कार्रवाइयों के मुख्य लक्ष्य सैन्यादेशों जैसी संक्षिप्तता और सटीकता से सूचीबद्ध थे

"अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म के लिए समस्याएं पैदा करना और उनका लाभ उठाना।

"अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म को बदनाम करना और उसकी पार्टियों तथा संगठनों की शक्ति को घटाना।

"संसार के किसी भी इलाके पर अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट नियंत्रण को घटाना।

"संयुक्त राज्य अमरीका की ओर स्वतंत्र विश्व के राष्ट्रों के झुकाव को मजबूत करना, जहां भी संभव हो, वहां इन राष्ट्रों और संयुक्त राज्य अमरीका के बीच हित-साम्य पर बल देना और इसी प्रकार, जहां उचित हो, वहां ऐसे पारस्परिक हितों के उन्नयन की हिमायत और वस्तुतः कामना करनेवाले समूहों

* *Final Report ..., p 50.*

[illegible] का १०° [illegible]
[illegible] के लिए ही [illegible] था।
[illegible] प्रच्छन्न संक्रिया [illegible]
[illegible] विभागों में पूरी तरह से [illegible]
[illegible] बन चुकी थी। नि[illegible]
१९५५ में प्रकाशित [illegible] समितियों में [illegible]
दे एक गुप्त रिपोर्ट [illegible] आइजनहावर के [illegible]
पेश की थी। रिपोर्ट की प्रस्तावना में प्रच्छन्न कार्रवाई
की आवश्यकता का अत्यन्त कुटिल औचित्यस्थापन कि-
या गया था:

जब तक यह (प्रच्छन्न कार्रवाई–अनु०) रा-
ष्ट्रीय नीति बनी रहती है एक ऐसा आवश्यक प्रच्छन्न
मनोवैज्ञानिक राजनीतिक तथा अर्द्ध-सैनिक संगठन स्था-
पित करना बहुत जरूरी है जो अधिक कारगर,
अधिक अनन्य और अगर आवश्यक हो, तो अधिक
निर्मम भी हो। इस लक्ष्य की तत्काल सफल और
सुनिश्चित सिद्धि में किसी को भी बाधक नहीं होने
देना चाहिए।

अब यह स्पष्ट है कि हमारा एक दुर्दम शत्रु
से सामना है ऐसे खेल में कोई नियम नहीं होते।
इसमें मानव आचरण के अब तक स्वीकार्य मानक लागू
नहीं होते हमें कारगर जासूसी और जासूसीविरोधी
सेवाएं विकसित करनी चाहिए और अपने
उच्छेदन, अन्तर्ध्वंस और नाश करना
यह आवश्यक हो जा सकता है
को इस मूलतः अप्रीतिकर

जाये और वे इसे समझे तथा समर्थन दे।"*

अमरीकी लोगो को इस अप्रीतिकर दर्शन के बारे मे बहुत बाद मे पता चला। अभाग्यवश, अपनी प्रच्छन्न कार्रवाइया करने के लिए सी० आई० ए० को उनकी अनुमति की आवश्यकता नही थी।

१९५५ मे राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने ध्वसात्मक कार्य के बारे मे एक नया निदेश – रा० सु० प० निदेश स० ५४१२ – जारी किया, जो फरवरी, १९७० तक लागू रहा, जब तथाकथित समिति-४० की स्थापना हुई। निदेश मे सी० आई० ए० की ध्वसात्मक कार्रवाइयो के मुख्य लक्ष्य सैन्यादेशो जैसी सक्षिप्तता और सटीकता मे सूचीवद्ध थे

"अतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म के लिए समस्याए पैदा करना और उनका लाभ उठाना।

"अतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म को बदनाम करना और उसकी पार्टियो तथा सगठनो की शक्ति को घटाना।

"ससार के किसी भी इलाके पर अतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट नियत्रण को घटाना।

"सयुक्त राज्य अमरीका की ओर स्वतत्र विश्व के राष्ट्रो के झुकाव को मजबूत करना, जहा भी सभव हो, वहा इन राष्ट्रो और सयुक्त राज्य अमरीका के बीच हित-साम्य पर बल देना और इसी प्रकार, जहा उचित हो, वहा ऐसे पारस्परिक हितो के उन्नयन की हिमायत और वस्तुत सामना करनेवाले समूहो

* *Final Report ... p. 50*

को प्रोत्साहन देना और ऐसे राष्ट्रो तथा राज्यो की अतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म का प्रतिरोध करने की क्षमता और इच्छा को बढाना।

"सुस्थापित नीतियो के अनुसार और जहा तक व्यवहार्य हो, उन इलाको मे भूमिगत प्रतिरोध विकसित करना और प्रच्छन्न तथा छापामार कार्रवाइयो मे सहायता पहुचाना, जहा अतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म का प्रभुत्व है अथवा उसकी आशका है ।"*

निदेश के एक विशिष्ट हिस्से मे इन लक्ष्यो की सिद्धि मे सहायक उपायो और विधियो की चर्चा थी : 'विशिष्ट रूप मे ऐसी प्रच्छन्न सक्रियाओ मे प्रचार, राजनीतिक कार्रवाई, आर्थिक युद्ध, अतर्ध्वंस, अतर्ध्वंसविरोध, ध्वस, पलायन, बचाव और निष्क्रमण उपायो सहित निरोधक सीधी कार्रवाई, विरोधी राज्यो अथवा दलो के विरुद्ध भूमिगत प्रतिरोध आदोलनो, छापामार तथा शरणार्थी मुक्ति दलो को सहायता सहित ध्वसकार्य, स्वतत्र विश्व के सकटग्रस्त देशो मे स्थानीय तथा कम्युनिज्मविरोधी तत्वो का समर्थन, इन योजनाए तथा सक्रियाए और पूर्वोल्लिखित की सिद्धि के लिए आवश्यक सभी सगत कार्रवाइया सम्मिलित है।"**

निदेश ने प्रच्छन्न सक्रियाओ के नियत्रण और अनुमोदन मे महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। कार्रवाई समस्त

---

* Ibid p. 41

यन परिषद के कृत्य विदेश मंत्री, प्रतिरक्षा मंत्री और राष्ट्रपति के प्रतिनिधियों को हस्तान्तरित कर दिये गये। सी० आई० ए० की प्रच्छन्न सक्रिया योजनाओं पर विशेष दल को, जो इस निकाय को दिया गया नया नाम था, विचार करना और अनुमोदन देना था।

लग सकता है कि सी० आई० ए० की हर बड़ी कार्रवाई अब सरकार के सख्त नियंत्रण के अधीन थी। लेकिन रा० सु० प० निदेश स० ५४१२ में यह निर्धारित करने का कोई स्पष्ट मानदंड नहीं था कि किन प्रच्छन्न सक्रियाओं को विशेष दल के अधीन किया जाना चाहिए और किन्हें नहीं।

इसके बारे में १९६७ के एक सी० आई० ए० ज्ञापन में कहा गया है

"किन प्रच्छन्न कार्यों का विशेष दल द्वारा अथवा विदेश विभाग तथा अमरीकी सरकार के अन्य अंगों द्वारा अनुमोदन आवश्यक है, इसका निर्धारण करने की प्रक्रियाएं १९५५ से मार्च, १९६३ तक की अवधि में कुछ अस्पष्ट थीं और इसलिए उन्हें सी० आई० ए० के निदेशक के मूल्य-निर्णयों पर आधारित बताना ही शायद सबसे बेहतर रहेगा।"*

---

* *Final Report* .., p. 52

मार्च, १९५७ में समन्वय प्रक्रियाओं में कुछ परिवर्तन किये गये। विशेष महत्व के कार्यों को अनुमोदन प्रदान करने का अधिकार विदेश मंत्री को दिया गया। इसके अलावा सी० आई० ए० के लिए सभी अनुमोदित प्रच्छन्न कार्रवाइयों के बारे में प्रतिरक्षा मंत्री और विदेश विभाग को रिपोर्ट करना आवश्यक हो गया।

आरम्भ में विशेष दल की बैठकें कभी-कभी होती थीं – सी० आई० ए० निदेशक ऐलेन डलेस और उनके भाई और तत्कालीन विदेश मंत्री जॉन फॉस्टर डलेस और राष्ट्रपति आइजनहावर के मधुर संबंधों के कारण निर्णय लेने के लिए औपचारिक प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं थी।

१९५९ में विशेष दल की बैठकें नियमित हो गयीं। इससे प्रच्छन्न सक्रिया योजनाओं के बारे में विशेष दल के अधिकार निर्धारित करने के मानदंडों को और विकसित करने में सहायता मिली।

जनवरी १९६१ में राष्ट्रपति कैनेडी के सत्तारोहण के साथ विशेष दल की बैठकें ह्वाइट हाउस में होने लगीं। अब वे राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा के निजी विशेष सहायक मैकजॉर्ज बंडी की अध्यक्षता में होती थीं (कुछ समय तक राष्ट्रपति के विशेष सलाहकार जनरल मैक्सवेल टेलर अध्यक्ष रहे थे मगर उनके संयुक्त स्टाफ-अध्यक्ष समिति के प्रधान बना दिये जाने के बाद यह पद बंडी को फिर मिल गया)।

क्यूबाई प्रतिक्रान्तिकारियों की कोचीनोस की खाड़ी (बे ऑफ पिग्ज) की कार्रवाई की घोर विफलता के बाद प्रच्छन्न कार्रवाइयों पर सरकारी नियंत्रण को दृढ़ करने के लिए कदम उठाये गये। विशेष दल ह्वाइट हाउस में अपनी साप्ताहिक बैठकें करता रहा, और राष्ट्रपति कैनेडी को प्रस्तावित प्रच्छन्न कार्रवाइयों के बारे में अधिकाधिक प्राथमिकता से सूचित किया जाने लगा। साथ ही अनुमोदन तथा नियंत्रण व्यवस्था को

अध्यक्षता राष्ट्रपति व विशेष राष्ट्रीय सुरक्षा मामल
द्वारा ही की जाती थी। लेकिन प्रच्छन्न कार्यवा
की योजनाओं के बनाने में मुख्य भूमिका अब ह्व
हाउस में साप्ताहिक मंगलवारीय लंच (मध्या
भोजन) अथवा कहे जाने लगे–इन 'लंचों'
राष्ट्रपति जॉनसन, विदेश मंत्री डीन रस्क, प्रति
मंत्री रॉबर्ट मैकनमारा और राष्ट्रपति के विशेष राष्ट्री
सुरक्षा सहायक मैकजार्ज बंडी की अनौपचारिक बैठ
का रूप ले लिया था। कालांतर में इन बैठकों
राष्ट्रपति के प्रेस सचिव, सी० आई० ए० निदेश
और संयुक्त स्टाफ-अध्यक्ष समिति के प्रधान भी भ
लेने लग गये, जिनमें वियतनाम के विरुद्ध सी० आई
ए० की प्रच्छन्न कार्रवाइयों से सबंधित योजनाओं प
विचार किया जाता था।

१७ फरवरी, १९७० को एन० एस० ए० एम० निदेश सं० ४० जारी किया गया, जिसने 'समिति-४०' की स्थापना की। इस निदेश ने प्रच्छन्न कार्रवाइयों के बारे में सभी पूर्ववर्ती रा० सु० प० निदेशों का स्थान ले लिया। उसमें कहा गया था कि अमरीकी सरकार के प्रत्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय कार्यों की भविष्य में भी प्रच्छन्न कार्रवाइयों से अनुपूर्ति होती रहनी चाहिए।

एन० एस० ए० एम० निदेश सं० ४० ने प्रच्छन्न सक्रियाओं के नियंत्रण तथा समन्वयन का उत्तरदायित्व सी० आई० ए० के निदेशक को दे दिया। लैंग्ली के बॉस को अमरीकी विदेश तथा गृह नीति के लक्ष्यों के अनुसार प्रच्छन्न कार्रवाइयों की योजना बनाने और

सचालन करने का जिम्मा मिला। उसे सभी सबद्ध अभिकरणो तथा सगठनों से परामर्श करना था और उनमें से प्रत्येक पर जितना विश्वास किया जा सकता था, उसको सतर्कतापूर्वक आकने के बाद प्रत्येक की सहमति प्राप्त करनी थी।

नये निदेश ने 'समिति-४०' की भूमिका की भी रूपरेखा दी। उसमें खासकर यह कहा गया था कि सी० आई० ए० के निदेशक को प्रच्छन्न कार्रवाई के
सभी महत्त्वपूर्ण और ... नाजुक
कार्यक्रमों का 'समिति- ... करना
होगा। यह अपेक्षा एक ... े कि
अनुमोदित प्रच्छन्न कार्य ... मिति-
४०' द्वारा प्रति वर्ष ... हिए।

जहा तक प्रच्छन्न ... मिति-
४०' के सामने रखने ... , उसे
सी० आई० ए० के एज ... ापित
किया गया था। इसके ... आई०
ए० के निदेशक को ... र्रवाई
का यह या वह प्रस्ता ... लिए
'समिति-४०' के आगे रखा जाये या नही।

सी० आई० ए० के आतरिक निदेश मे स्पष्टत निर्दिष्ट किया गया था कि इसके पहले कि प्रस्ताव 'समिति-४०' में रखे जाने के लिए सी० आई० ए० के निदेशक को दिये जाये, उनका "विदेश विभाग के साथ समन्वय किया जाना चाहिए। इसके अलावा, अर्द्धसैनिक कार्रवाई के कार्यक्रम प्रतिरक्षा विभाग के

साथ समन्वित किये जाने चाहिए और, सामान्यतया, सबद्ध देश में (अमरीकी) राजदूत की सहमति आवश्यक होगी।'*

इस तरह से तीस साल से अधिक समय तक प्रच्छन्न सक्रिया तन्त्र को बनाया और तोड़ा जाता रहा, जो अमरीकी राजनीतिक व्यवस्था का एक मूलभूत तत्व बन गया। केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी की गैरकानूनी और आपराधिक पहलों पर अमरीकी राष्ट्रपतियों और उनके उच्चस्तरीय सहायकों के अनुमोदन के "ठप्पे" लग जाते थे।

तथापि यह सोचना गलत होगा कि प्रच्छन्न कार्रवाइयां अमरीकी विदेश नीति की सिर्फ अनुपूरक ही थी। बल्कि अधिक ठीक कहें, तो वे ही उसे सक्रियतापूर्वक रूप देती थीं। लैंग्ली के चालाक विश्लेषकों द्वारा "अदूरदर्शी" राजनीतिज्ञों को उल्लू बनाये जाने की सारी बात कल की तरह आज भी सर्वथा अविश्वसनीय प्रतीत होती है। पूरे के पूरे देशों और राष्ट्रों के विरुद्ध सी० आई० ए० द्वारा चलाया जानेवाला गुप्त युद्ध, जिसे राष्ट्रपति आइजनहावर द्वारा एक रिपोर्ट में "बिना नियमों का खेल" कहा गया है, अमरीकी विदेश नीति का एक अभिन्न अंग रहा है और अब भी है।

१९७५ में व्हाइट हाउस ने अपने को सी० आई० ए० की आपराधिक गतिविधियों से सार्वजनिक रूप

* *Final Report ... p 54*

से अलग करने की कोशिश की – अमरीकी और विश्व जनमत को इनमें से बहुतों का चिली में सैन्य हुंता द्वारा सत्ता हथियाये जाने के बाद पता चला। विदेशों में सी० आई० ए० के घृणाजनक कार्यों की जाच करने के लिए सीनेटर फ्रैंक चर्च की अध्यक्षता में एक विशेष सीनेट समिति की स्थापना की गयी, जिसकी अमरीकी जन-सूचना साधनों ने तुरत ही एक स्वतन्त्र और सत्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में छवि बना दी। सी० आई० ए० की गंदी कारसाजियों पर से परदा उठाकर अमरीकी शासक हलके एक साथ दो शिकार करना चाहते थे – एक तो जनता को यह विश्वास दिलाना कि लैंग्ली की गैरकानूनी कारस्तानियों से उनका कोई सरोकार नहीं है और इस तरह से दोष के भागी होने से बचना, और, दूसरे, "निष्पक्ष न्याय" का, जिसे चिल्ला-चिल्लाकर अमरीकी लोकतान्त्रिक व्यवस्था की अन्तर्निहित विशेषता बताया जाता है, दिखावा करना।

चर्च समिति की रिपोर्ट २० नवबर, १९७५ को प्रकाशित हुई। जैसे कि पहले ही से कहा जा सकता था, उसने अमरीकी राजनीति में कोई सनसनी नहीं पैदा की। उसके भंडाफोड करने के उत्साह को और ध्वंसात्मक कार्यों की मिसालों के तौर पर उसके द्वारा उद्धृत तथ्यों को सी० आई० ए० के सेंसर की कैंची ने, खासकर विशेष सी० आई० ए० के परामर्शदाता मिशेल रोगोविन ने सीमित कर दिया था। इसका निर्णय रोगोविन को ही करना था कि कौनसे तथ्य सीनेटर जनता के सामने ला सकते

अथवा संकटस्थ इलाकों में कम्युनिस्टविरोधी दलों का समर्थन"* भी करता था। बाद में, सी० आई० ए० की आंतरिक संरचना के विकसित होने के साथ-साथ ये कृत्य अमरीकी गुप्तचरी कार्रवाई कार्यालय के ढांचे के भीतर स्थापित एक विशेष प्रभाग के सुपुर्द कर दिये गये।

कुदरती तौर पर इस तरह के "नाजुक" कामों को क्रियान्वित करने के लिए सी० आई० ए० को सुप्रशिक्षित कर्मियों की आवश्यकता थी और उसने इस आवश्यकता को अविलंब पूरा किया। संयुक्त राज्य अमरीका में, और बाद में, विदेशों में, आतंकवादियों, अनध्वंसकों और हत्यारों को प्रशिक्षित करने के लिए विशेष अड्डे और शिविर स्थापित किये गये। उनमें विशेष सक्रिया प्रभाग के नियमित कर्मियों और इसी प्रकार तथाकथित अर्द्ध-सैनिक सक्रियाओं अथवा अन्य "नाजुक" कार्यों में इस्तेमाल किये जानेवाले विदेशी एजेंटों तथा भाड़े के सैनिकों को भी प्रशिक्षण दिया जाता था।**

ऐसे ही एक शिविर में प्रशिक्षित भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट फिलिप एजी ने अपनी पुस्तक 'कंपनी के राज सी० आई० ए० की डायरी' में उसका इस तरह वर्णन किया है

---

* *Final Report*, p 144

** Victor Marchetti and John D Marks *The CIA and the Cult of Intelligence*, Alfred A Knopf, New York, 1974, p 124

मुराग छोड़ती हैं।"*

ऐसे ही विशेष पाठ्यक्रम के एक और "स्नातक" ने अपने प्रशिक्षण के बारे में 'रैंपर्ट्स' पत्रिका को विस्तार में इस प्रकार बताया है

"अर्द्धसैनिक विद्यालय का घोषित लक्ष्य हमें उन ग्रामीण किसानों के शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षित और सज्जित करना था, जो छापामारों से अपनी रक्षा करना चाहते थे। मैं इसमें विश्वास कर सकता था

"लेकिन फिर हम सी० आई० ए० के ध्वसकार्य प्रशिक्षण मुख्यालय में जा पहुंचे और यहीं हमें ऐसी युक्तियों तथा कामों में प्रशिक्षित किया गया जिनकी जेनीवा समझौते से शायद ही कोई संगति थी।

"हमें जिन अनेक विधिवर्जित शस्त्रों से परिचित कराया गया, उनमें लगते ही फट जानेवाली गोलियां, आवाज न होने देनेवाली युक्ति से सज्जित मशीनगनें, हस्तनिर्मित विस्फोटक और नपाम भी थे

"और फिर एक ऐसी शैतानी ईजाद भी थी, जिसे लघु तोप कहा जा सकता है। यह युक्ति एक सुनम्य विस्फोटक से भरे इस्पात के नतोदर टुकड़े से बनी थी उसे पेट्रोल की टंकी के साथ इस तरह से जकड़ दिया जाता था कि दाहक गोला टंकी को

---

* Philip Agee, *Inside the Company CIA Diary*, Penguin Books Baltimore, 1975, pp 45-46, 83-84

"ऑ० एस० डी० का आपातकालीन सभा प्रभाग इन
[illegible]योजनो के लिए तरह-तरह के हथियार और साधन
[illegible]यार करता है। सभा कक्षो मे काच की छोटी-छोटी
[illegible]ीशियो मे भरे अत्यन्त दुर्गंधमय तरल फेके जा सकते
हैं। सभा होने की जगह पर एक बेहद महीन पारदर्शक
[illegible]ाउडर छिड़का जा सकता है, जो नीचे बैठने पर
[illegible]दृश्य हो जाता है, मगर लोगों की भीड की आमद-
[illegible]फ्त से हिलने पर अश्रु गैस का असर पैदा करता है।

"विशेषकर निर्मित टिकियों पर एक दाहक पाउडर
[illegible]ुता हो सकता है और जलने पर यह सयोग बडी
मात्रा मे ऐसा धूआ पैदा करता है, जो आखो और
श्वसनपथो पर सामान्य अश्रु गैस की अपेक्षा कही जोर-
दार असर करता है। भोजन मे एक स्वादहीन तथा
गधहीन द्रव्य मिलाया जा सकता है, जिससे त्वचा मे
सूजन आ जाती है। और एक निर्मल द्रव की कुछ
ही बूदो से आदमी तनावमुक्त होकर बेझिझक बाते
करने लगता है। मोटरगाडियो के स्टीयरिंग पर अथवा
शौचालयो मे सीटो पर एक अदृश्य खुजलीकारी पाउडर
बुरका जा सकता है, और एक अदृश्य मलहम के
त्वचा पर लगते ही सख्त जलन होने लगती है। सिगरेटो
और सिगारो मे रसायन-ससाधित तबाकू मिलाया जा
सकता है, जो श्वसन रोग पैदा करता है।"**

---

* 'सक्रिया सेवा विभाग'। (Operational Services Division)—स०

** Philip Agee, *op cit* pp 84-85

हर नियत मामले मे प्रयोग मे लाया जानेवाला हत्या-प्रविधि विकसित करनी थी।"*

लोगों को जान से मारने के परिष्कृत तरीके विकसित करने के लिए केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी अनेक अनुसंधान संस्थानों और कंपनियों की सेवाओं का उपयोग करती है, जिनमे विविध क्षेत्रों मे उच्च योग्यता-प्राप्त विशेषज्ञ काम करते हैं। पत्रकारों को इनमे से एक से भेंट करने का अवसर मिला। उसका असली नाम न जान पाने के कारण पत्रकारों ने उसे "मिस्टर डैथ" ("श्री मृत्यु") नाम दे दिया।

यहां "मिस्टर डैथ" के साथ इस भेंटवार्ता का, जो एक अमरीकी पत्रिका मे प्रकाशित हुई थी, संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

प्रश्न सीनेट प्रवर समिति द्वारा सी० आई० ए० के जासूसी कार्यों की जांच के दौरान समिति के अध्यक्ष फ्रैंक चर्च को सी० आई० ए० के भूतपूर्व निदेशक विलियम कॉल्बी ने एक विषलिप्त डार्ट पिस्तौल (डार्ट अथवा छोटे-छोटे शर फेंकने की पिस्तौल) दिखलायी थी उसे टेलीविज़न पर भी दिखलाया गया था और उसके चित्र देश भर के समाचारपत्रों के पहले पन्ने पर छपे थे। आप इस पिस्तौल के बारे मे कुछ जानते हैं?

---

*'आगवोरी स्पेरेंक' ('सी० आई० ए० षड्यत्र'), मास्को, १९७९, पृ० १८१, (रूसी मे)।

उत्तर : मैंने समय-समय पर कम से कम ...
दर्जन हार्ट पिस्तौलें देखी होंगी, क्योंकि मैं या तो प्रार्...
की परीक्षा करता था या विषाक्तीकरण विधियों...
चर्च समितिवाली उस पिस्तौल की विज्ञप्तिवाली...
गया है। मुझे इसमें बहुत शक है। मैंने जो...
पिस्तौलें देखी हैं, वे चुम्बकीय गोलियां इस्तेमाल...
थीं और आकार में अधिक बड़ी थीं।

प्रश्न : आपने कहा था कि आपका काम...
से ताल्लुक रखता था। यह किस तरह का काम...

उत्तर : बुनियादी तौर पर सी० आई० ए...
मुझसे हत्या की कई विधियां और युक्तियां नि...
के लिए कहा था। मैंने जिन भी चीजों पर काम...
लगभग वे सभी लोगों को मारने के लिए थीं। ...
जिन तीन मुख्य हत्या-प्रविधियों से सरोकार था, वे...
गोली से मारने, जहर से मारने और विस्फोटक युक्तियों...
से मारने की प्रविधियां थीं।

प्रश्न : क्या आप हमें किसी ऐसे हथियार की...
मिसाल दे सकते हैं, जो जहर का उपयोग करता...
था ?

उत्तर : हां। छठे दशक के मध्य में मुझसे संपर्क
रखनेवाला सी० आई० ए० का एक एजेंट एक समस्या
लेकर मेरे पास आया, जिसे वह हल करवाना चाहता
था। ये बातें हमेशा परिकल्पनात्मक रूप में रखी
जाती थीं। मिसाल के लिए, मान लीजिये कि आप
किसी को हवाई जहाज पर बिना बहुत ध्यान आकर्षित
किये मारना चाहते हैं। खैर, इसका सबसे सीधा

ाय है कोई सपर्क-विष। मुझे एक द्रव्य दिया गया, ह तरल, जो त्वचा मे प्रवेश कर जाता है और समें आप जो भी मिला दे, वह उसे अपने साथ जाता है। किसी के कपड़ो पर, उसके जूतो मे र एक बूद डाल दीजिये। यह इस तरह के काम के ाए सबसे बुनियादी औजार होगा।

प्रश्न आपने अपना ऐसा विष तैयार किया?

उत्तर: हा, बल्कि मै एक कदम और आगे गया। ने सर्प-विषो के साथ प्रयोग करना शुरू किये। हले मैने हिमशुल्कित व्याघ्र-सर्प-विष का अध्ययन या। अतत मैने जिसे चुना, वह बूमस्लैग (अफ्रीकी नो का एक वृक्षवासी महानाग) नामक एक और ी साप था, क्योकि उसके विष के लक्षण बहुत ही ूक्ष्म होते है। वह आतरिक रक्तस्राव पैदा करता है और आदमी की मौत कई दिन बाद ही जाकर होती है। बताना भी मुश्किल होगा कि उसके साथ हुआ या था।

प्रश्न आपको बूमस्लैग का विष कहा से मिला?

उत्तर: उस समय, छठे दशक के आरभ मे, विदेशी जीवो को पालतू जीवो की दूकानो से पाना सामान्य हुआ करता था।

प्रश्न आपने कहा कि सी० आई० ए० ने आपको ऐसे काम करने को दिये, जिनके उद्देश्य के बारे मे

उत्तर जिस अपने तौर पर उस मुझसे मदद मान लीजिये मैं बजाय कुछ निश्चित रूप में कहना पड़ा, वह सब था अब वह एक काले आदमी को हटाना चाहता था जो जैगुआर कार चलाया करता था।

प्रश्न हटाना?

उत्तर जी हां यह बात को मोटी बनाने का उनका अदाज था बहरहाल इस काले आदमी को अपनी यात्रा में एक निश्चित घड़ी पर कह लीजिये कि स्टार्ट करने के आठ मिनट बाद, मरना था—क्यों—यह मैं नहीं जानता फिर भी मुझे काफी कुछ जानना जरूरी था—उसका वजन, वह मच्चा तो नहीं है, ऐसी ही सारी बातें। आखिर उन्होंने मुझे एक जैगुआर कार का स्टीयरिंग लाकर दिया और कार चलाते एक आदमी का फोटो भी;
स्टीयरिंग पर उसके हाथों का
जाना कि वह काला है। पता
यह अजीब लगा।

बहरहाल, मैंने एक
चक्के पर वहां लगा
तौर पर अपने
रखी थी कि .
हों, उसमें
उसमें खुद

प्रश्न :

उत्तर :

की तैयारी मे जुट गया। प्रसगत, इन जुगनो का हमारी बोली मे नाम भी यही था – "मिथिन दुप्ट-ताए"। यह चीज थी कोई ०४५ इची (११४ मि० मी०) कारतूस के आकार का एक अतिलघु बम। आपने फेका कि वह फट गया। उसमें दृढीकृत इस्पात के छर्रे भरे हुए थे, जो ज़हर में बुझे थे।

प्रश्न क्या यह बम फेकनेवाले के लिए भी खतरनाक नही था?

उत्तर. बेशक था। वह उसे भी वही का वही मार सकता था।

प्रश्न: क्या एजेसी ने इस खामी पर आपत्ति नही की?

उत्तर नही। और मुझे यह दिलचस्प लगा। प्रसगत, उन्होंने कहा कि मै उसकी और किस्मे तैयार करू, जिनमे एक ऐसी हो, जो फेकनेवाले को ज़िदा रहने का मौका दे। इसमे एक पलीते जैसी चीज़ थी, जिसे आप सिगरेट से या किसी और चीज़ से सुलगा सकते थे। एक और रूपातर दूसरे ढग से सुलगता था। बस, टेप को उखाडना होता था, जिसके नीचे माचिस की तीलियो पर लगे मसाले जैसी ही एक सामग्री लगी थी – बस, उसे तीली की तरह रगड़िये और फेक दीजिये। तीसरे रूपातर मे मैंने पलीते के साथ लाल फॉस्फोरस मिला दिया। अगर आप इसे क्लोरोफॉर्म मे तर कर दे, तो कारतूस नही फटेगा। लेकिन अगर पलीते को आप सूख जाने दे, तो यह अत्यत विस्फोटक हो जाता है। बस कारतूस कमरे के बीच मे फेक

दीजिये और वह फट जायेगा। आप उसे किवाड़ के ऊपर, शौचालय मे सीट के नीचे और कही भी रख सकते थे, जहां उस पर रगड़ लग सके। एक बार सक्रिय कर दिये जाने पर उसे अक्रिय करना आसान नही था।

प्रश्न आपने ये कितने बनाये?

उत्तर यही कोई १५ या २०।

प्रश्न सी० आई० ए० के लिए आपने और क्या चीजे बनायी थी?

उत्तर कई बहुत बार अजीब अनुरोध भी आते थे। मैंने कुछ ऐसे कारतूस तैयार किये, जिनमे ट्रैटिल नामक विस्फोटक भरा था, जिससे कि अगर आप ऐसे कारतूस को छोडे, तो वह आपको और साथ मे हथियार को भी उडाकर सीधे छत तक फेंक दे। मै जिन सी० आई० ए०-वालों को जानता था, उनका सामान्य हथियार ५.६ मि० मी० व्यास की वाल्टर पिस्तौल थी। मुझे जो पिस्तौल मिली हुई थी, उसकी नाल मे सायलैंसर लगाने के लिए चूडियां कटी हुई थीं। और एक बार मुझे एक पिस्तौल मे इस तरह की तबदीली करने को कहा गया कि जिससे चलाये जाने पर उसका नालपृष्ठ फटकर पीछे की तरफ उड़े और चलानेवाले को मार दे। मेरा खयाल है कि वह हमारे लोगो मे से ही किसी के लिए था।

प्रश्न: क्या आपके कहने का यह मतलब है कि वे अपने ही लोगों की हत्या कर रहे थे?

उत्तर: मै इसके बारे मे कुछ नही कह सकता कि

उन्होंने उस युक्ति को – या मेरे द्वारा बनायी गयी सारी ही युक्तियों में से किसी को भी – किस तरह इस्तेमाल किया। मैं तो उन्हें सिर्फ बनाना ही था। लेकिन एजेंसी में कई आदमियों ने मुझे यह स्पष्ट आभास दिया था कि अगर जरूरी होगा, तो वे अपने ही लोगों को भी "अलग" कर देंगे।

प्रश्न: आपने कहा कि आपको सी० आई० ए० से एक पिस्तौल मिली हुई थी। मगर किसलिए?

उत्तर: वह भी शायद एक तरह का इनाम थी। मैंने कुछ काम किया, जो उन्हें पसंद आया। फिर मेरा एक परिचित – वही, जो मुझे कराकस ले गया था – एक दिन मुझे दोपहर खाना खिलाने ले गया। उसने बताया कि वे मेरे काम से खुश हैं। फिर उसने मुझे एक पैकट दिया। उस समय मैं अनुसंधान संस्थान में काम करता था। मैं यह पैकट वहां लाया और यह देखने के लिए उसका एक्स-रे किया कि उसमें क्या है।

प्रश्न. आपने उसे सीधे ही क्यों नहीं खोल लिया?

उत्तर: बात यह है कि मैंने सोचा कि अगर वे इतने खुश हैं, तो वे मुझे जन्नत भी भेजना चाह सकते हैं। सच पूछें, तो यह बस सामान्य सावधानी ही थी। और देखता क्या हूं! – एकदम नयी वाल्टर पिस्तौल और उसके साथ खासकर बना बढ़िया, नया सायलेंसर।

प्रश्न अभी तक आपने जिस काम के बारे में बताया है, क्या वह उसका नमूना है, जो आप पचास

थे और बाहरी लोग आ-जा सकते थे।

प्रश्न आपने मिनिएचर डिटोनेटरों का उल्लेख किया। वे सी० आई० ए० के लिए थे या संस्थान के लिए आपके औपचारिक काम में आते थे?

उत्तर दोनों ही बातें थीं। औपचारिक रूप में मैं मिसाइलों (प्रक्षेपास्त्रों) के आयुध शीर्ष और तोप-गोलों के लिए डिटोनेटर विकसित कर रहा था। अनौपचारिक रूप में मैं शक्तिशाली विस्फोटक पदार्थों को स्फोटित करने के लघुकृत टाइमर और डिटोनेटर विकसित कर रहा था।

प्रश्न. तो संस्थान के लिए विकसित किये जाने-वाले और सी० आई० ए० के लिए विकसित किये जानेवाले डिटोनेटरों में क्या फर्क था?

उत्तर बुनियादी तौर पर सिर्फ रूप का। सी० आई० ए० के लिए निर्मित मॉडेलों को अधिकतर मार्लबोरो सिगरेट की डिबियाओं का रूप दिया जाता था। उन्होंने अनुरोध किया था कि मैं उन्हें ऐसा बनाऊं कि जिससे वे सिगरेट की डिबिया जैसे लग सकें और इसके लिए सबसे सुविधाजनक मार्लबोरो की डिबिया ही थी।

इसके बाद कुछ और अजीब अनुरोध आये। बाद में, संस्थान में मेरे काम करने के आखिरी दिनों में, ग्रेवल सुरंग को विकसित किया जा रहा था। ग्रेवल चाय की पुड़िया के आकार की स्थल सुरंग को दिया गया कूटनाम था। इन सुरंगों को हवाई जहाजों से गिराया जाता था और जमीन पर पहुंचकर

वे अपने को उद्वाष्पन द्वारा सक्रिय कर लेती थीं। उनका प्रयोजन यह था कि हवाई जहाजों द्वारा विशाल मात्राओं में उन्हें गिराकर किसी इलाके को शत्रु के लिए अगम्य बना दिया जाये। ये सुरंगें आदमी की जान नहीं लेती थीं। लेकिन अगर उस पर कदम पड़े, तो वह फट जाती थी और पैर की एक-एक हड्डी को चूर-चूर कर देती थी। दर असल, मेरा काम उनके लिए एक अक्रियकरण पद्धति विकसित करना था। और सो भी इसलिए कि एक बैठक में मैं यों ही पूछ बैठा था "भाई, अगर आप कहीं अरबों-खरबों प्रेषल सुरंगें गिरा देते हैं और बाद में उस इलाके को सर करने के लिए जाते हैं, तो आप वहां क्या करेंगे? क्या वहां पैरवासों पर चलेंगे?"

प्रश्न: यह काम संस्थान के लिए था या सी० आई० ए० के लिए?

उत्तर: यह भी दोनों ही के लिए था। मेरा काम अक्रियकरण पद्धति विकसित करना था। मैंने कुछ ऐसी प्रेषल सुरंगें बनायीं, जो इन अर्थों में सामान्य थीं कि वे उसी तरह से काम करती थीं कि जैसे उन्हें करना चाहिए था। इसके अलावा मैंने कुछ सुरंगें सी० आई० ए० के लिए भी बनायीं, जिनमें ज़हर में बुझे कांच की किरचें भरी हुई थीं। मैंने कुछ इस तरह की भी बनायी थीं, जो देखने में तो अक्रियकृत लगती थीं, पर असल में थीं नहीं। एक पद्धति के अनुसार अक्रियकृत होने पर प्रेषल सुरंग अपना रंग बदल लेती थी। इसलिए मैंने कुछ ऐसी

ग्रेवल सुरगे बनायी, जो रग तो बदल लेती थी, पर अक्रिय नहीं होती थी। मै उन्हे अपने हाथ से बनाया था और मैक्सवैल हाउस कॉफी के डिब्बो मे रखकर अपने सपर्क आदमी के सिपुर्द कर देता था। किसी अजीब कारण से यही निर्दिष्ट था कि वे इन डिब्बो मे सीलबद हो। सस्थान मे मेरे काम के बारे मे किसी को कोई जानकारी नही थी। मुझे मैक्सवैल हाउस कॉफी खरीदनी होती, डिब्बो को खोलकर खाली करना होता, फिर सुरगे भरकर डिब्बो की दुबारा भराई और घिसाई करनी होती और उन पर फिर से रोगन करना होता, जिससे ऐसा लगता कि उन्हे खोला नहीं गया है। किस मकसद के लिए करना था, यह मै नहीं जानता। मुझे पता चला है कि ग्वाम द्वीप पर, जहा ग्रेवल सुरगे विशाल मात्राओ मे विशेष गोदामो मे लोहे के विशेष बक्सो मे अब भी सग्रहीत हैं, उनमे से कुछ सक्रिय हो गयी है। उन्हें जब तैयार किया जाता है, तब उनमे भरा मसाला गीला होता है और अगर वह सूख जाता है, तो सुरग सक्रिय हो जाती है। प्रत्यक्षत, वहा ऐसा ही हुआ होगा।

प्रश्न: क्या ये सुरगे कभी इस्तेमाल मे आयीं?

उत्तर: भगवान मेरे, बेशक! वियतनाम शायद ग्रेवल सुरगो का एक विराट मैदान बना हुआ था। वह कोई प्राणघातक चीज नहीं थी। वह तो बस पैर की हड्डी-हड्डी का मलीदा ही बना देती थी। मेरा मतलब है जैली। मै यह इसलिए जानता हू कि

जानकारी हासिल करनी पड़ी। आखिर उसने मुझे बहुत ही मोटी रूपरेखा देनी शुरू की, जिससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इन लोगों तक के लिए वह एक ग़ैरकानूनी चीज़ थी। मेरी यह जानने की इच्छा थी कि वह मुझे क्या दे रहा है। 'अगर इसमें बाटुलिम्मस टॉक्सिन* या ऐसी ही कोई और चीज़ है, तब तो भैया, मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहता," मैंने कहा। लेकिन, बहरहाल, आखिर उसने पैकट मुझे दे ही दिया। खैर, मैंने एल० एस० डी० को खामी की गोलियों में मिला दिया और डिब्बों को फिर सीलबंद कर दिया। मेरे पास निओ-सिनेफ्रीन स्प्रे की बोतलों का एक पूरा डिब्बा था, जिनमें मैंने एल० एस० डी० मिलाया। यह स्प्रे ज्यादातर जुकाम में इस्तेमाल होता है।

प्रश्न. आप कैसी मात्राओं का उपयोग कर रहे थे?

उत्तर: भारी मात्राओं का। इतनी कि आपकी चेतना शायद हमेशा के लिए खत्म कर दे।

प्रश्न. आपने दो खतरनाक रसायनों की बात कही थी। दूसरा रसायन कौनसा था?

उत्तर. दूसरे का नाम बी० ज़ेड० था। उसके साथ वायुरुद्ध बक्से में दस्ताने पहनकर ही काम करना होता था, क्योंकि वह मास के साथ दिया जाता था। मैंने

---

*बाटुलिज़्म अथवा डिब्बाबंद खाद्यसामग्रियों में मौजूद खाद्य-रोगों को पैदा करनेवाला जीवविष।—स०

तो आपको कैसे मालूम हुआ कि वह सी० आई० ए० का है?

उत्तर: उसने मुझे सी० आई० ए० का कार्ड दिखाया था। वह एक तरह का पहचानपत्र था। इसके अलावा एक तरह से अन्दाज भी हो जाता है कि वे लोग देखने में कैसे लगते हैं। जब वह कमरे में आया तो वह ऐसा अजीब लग रहा था कि मेरी सेक्रेटरी ने कहा: बाहर एक आदमी आया है जो शायद पुलिस का है। और वह निश्चय ही पुलिसवाला लगता था – चौकोर जबड़ा, कठोरतापूर्ण आंखें।

प्रश्न: आप इन लोगों को उनके हुलिये से ही पहचान सकते थे?

उत्तर: और कुछ और भी संकेत थे। जब वह शख्स आया, तो उसके साथ एक बहुत ही बुरा आदमी था जो देखने में कुछ-कुछ गिरा-बाग जैसा लगता था। जब वह कुरसी पर बैठा, तो कुछ भनभनाया, जिस पर मैंने कुछ ऐसी टिप्पणी की थी "आपकी परतली पेटी में जो भी है, वह कोई देखने लायक चीज होनी चाहिए।" वह बस मुसकराया और उसने अपना कोट खोला और वहां ०.४४ इंची मैग्नम पिस्तौल थी। मैंने उसके पहले या बाद में कभी कोई ऐसा आदमी नहीं देखा कि जो इतना बड़ा हो कि ऐसी पिस्तौल को परतली पेटी में छिपा सके। बहरहाल, मैंने उसे देखना चाहा – उसने उसे निकाला और मेरे हाथ में दिया। उस पर कोई नंबर नहीं था। नंबर को मिटाया नहीं गया था, क्योंकि कोई नंबर ही नहीं

युद्ध में लड़े थे, तो यह उम्र कोई इतनी कम है भी नहीं। जासूसों की लोग हमेशा चालीस साल के प्रौढ़, जेम्स बांड किस्म के लोगों के रूप में ही कल्पना करते हैं। छोड़िये भी, वह साइकिल पर जाता छोकरा भी अपनी बैल्ट में स्वचालित पिस्तौल खोंसे हो सकता है—मों भी राष्ट्रीय सुरक्षा के बहाने। बहरहाल, मेरा दोस्त मुझे एक रविवार पाठशाला ले जाया करता था। वहां एक गिरजाघर था, जिसे हम आड़ की तरह इस्तेमाल करते थे और हम वहां जाकर बुनियादी शिक्षण, विचारधारात्मक शिक्षण, आग्नेयास्त्रों और विस्फोटकों, आदि में शिक्षण पाते थे।

प्रश्न: किनसे?

उत्तर. मैं नहीं जानता कि वे कौन थे, अलबत्ता पारदर्शियां, चार्टों, साहित्य, आदि से वे अवश्य अच्छी तरह से लैस थे।

प्रश्न: जब आप इतने छोटे थे, तब सी० आई० ए० आपसे क्या काम कराती थी?

उत्तर. अधिकांशत सायलेंसर बनाने का मेरा दोस्त समय-समय पर मेरे पास आता और कहता कि उन्हें ऐसी-ऐसी पिस्तौल के लिए सायलेंसर चाहिए और मैं उसे तैयार कर देता। वे इस तरह के बनाये जाते थे कि आसानी से अलग-अलग किये जा सकें, जिससे इस्तेमाल के बाद फेंकें भी आसानी से जा सकें, इसलिए भी कि आप उन्हें हवाई जहाज पर सामान में ले जा सकें और कोई देखे, तो शक पैदा करे। मैक्सिम का सायलेंसर बस मोटर-

जिसे कालीन के नीचे छिपाकर रखा जा सकता था
प्रश्न ऐसी चीज भला किस काम में लायी
सकती थी ?

उत्तर कौन जाने ? शायद विदाई पार्टियों
सजीव बनाने के लिए। जैसे कि मैं कह चुका हूँ
मुझे सचमुच इसकी कोई सीधी जानकारी नहीं है कि
इन युक्तियों में से किसे कैसे इस्तेमाल किया गया

प्रश्न आपने सी० आई० ए० के लिए काम कर
कैसे शुरू किया था ?

उत्तर: जब मैं कोई १७ साल का था, मेरी
एक सहपाठी से दोस्ती थी, जो आग्नेयास्त्रों के मामले
में उस्ताद था। उसे बन्दूकों-पिस्तौलों की, खास
तौर से हथियारों की विलक्षण जानकारी थी। वह पक्का
फासिस्ट था। और एक दिन उसने मुझे बताया कि
वह सी० आई० ए० के लिए काम करता है। प्रसंगत
वही वह शख्स था, जो मुझे कराकस ले गया था

प्रश्न क्या आप यह कहना चाहते हैं कि सी०
आई० ए० ने आपको तब भरती किया, जब आप
१७ साल के थे ?

उत्तर. लगभग उसी समय। तब मैं हाई स्कूल
में था।

प्रश्न क्या यह आम तरीका है ?

उत्तर मुझे पता नहीं। मुझे बस इतना मालूम
है कि उनके लिए इसके भी पहले से काम कर
रहा था। अगर आप इस पर गौर करें कि १७ साल
के कितने ही छोकरे वियतनाम में और दूसरे विश्व

प्रकार के सपर्कों की स्थापना हुई। अमल मे ज्यादा औपचारिक। इस बीच मेरे अनुरोध पर मेरे काम मे एक जनरल मैनेजर को भी सम्मिलित किया गया। सारे काम को मै अकेला ही नही कर सकता था। मै सिर्फ अनुसधान ही करना चाहता था। मुझे स्पष्ट निर्देश दिया गया कि किसी भी और को इस तरह के काम के बारे मे हरगिज पता नही चलना चाहिए। सी० आई० ए० का दिया हुआ पहला ही कार्यभार खासा बडा था। मुझे एक गुटका तैयार करनी थी, जिसे मैने 'शैतान की डायरी' का नाम दिया। यह गुटका हाथ से गढ़े जानेवाले हथियारो से सबधित गुटका का ही सिलसिला था, मगर उसमे विस्फोटक और गोला-बारूद के सश्लेषण के बजाय विशेषकर रासायनिक तथा जैविक अस्त्रो और प्रणालियो के इस्तेमाल के बारे मे बताया जाना था। यह ऐसे लोगो के लिए लिखी जानी थी, जिन्हे हाई स्कूल स्तर से *अधिक रसायन का ज्ञान नही है। मै आपको ईमानदारी* से अभी ही बता दू कि मै इस सारे विचार के बहुत पक्ष मे नही था। मै यह महसूस करने लगा कि एक जगह सग्रहीत करने के लिए यह सचमुच खतरनाक जानकारी है। मतलब यह है कि ऐसी गुटका, जो अगर कही बाहर चली गयी और आतकवादियों की किसी टोली के हाथ लग गयी, तो वह उन्हे बहुत कम ही समय और कम से कम धन लगाकर बडे-बडे शहरो को नियत्रण मे ले लेने और बरबाद तक कर देने की क्षमता प्रदान कर देगी। मगर मुझे आदेश,

गाड़ियों के मायनेमारी जैसा ही होता है एक बार मैंने एक ऐसा मायनेमार तैयार किया, जिसमें गुरिल्ले में पहनने की माला पर लटके हुए थे, जिसे देखने में वह आधुनिक किस्म के जेवर जैसा लगता था। सचमुच वह मामा आकर्षक था। एक और बम लेकर मैंने छेददार जापानी सिक्कों से बनाया था

प्रश्न और हाई स्कूल के बाद आप उस संस्था में गये?

उत्तर, हां, विस्फोट करके चीजों को उड़ा रहने और ऐसी ही और शरारतों के कारण हाई स्कूल से निकाल दिये जाने के बाद। पहले मैंने संस्था में काम किया, फिर दंगा-नियंत्रण साधन बनाने की कंपनी में, उसके बाद खुद अपनी फर्म में, और आखिर में, आग्नेयास्त्र निर्माता के यहां।

प्रश्न. लेकिन आपने कहा था कि जब आप आग्नेयास्त्र कंपनी में काम शुरू किया, तो उस समय आपका सी० आई० ए० से कोई संपर्क नहीं था।

उत्तर शुरू में नहीं। लेकिन एक दिन कंपनी में काम करनेवाला एक आदमी मेरे पास आया जिसने कहा कि मेरी "एक दिलचस्प भेंट" होगी और मेरे पास पांच लोगों का एक दल आया और हमने बातचीत की। उन्होंने अपना परिचय नहीं दिया मगर जो कहा जा रहा था, उससे मैं समझ गया कि वे सी० आई० ए० के हैं। बहरहाल, वे ज्यादातर दुनियादारी बातों की ही टोह ले रहे थे "आप क्या कर रहे हैं?" "कहां काम कर रहे हैं?" एक नये

मिला, "लिखिये। एक ही प्रति। कोई कार्बन प्रतिलिपि नहीं।"

इसलिए पहले मैंने जो किया, वह था पादप विषों का सर्वेक्षण। पादप विष इतने सारे हैं कि सिर चकरा जाता है। सबसे आम पौधे भी, जिन्हें आप अपने घर के अहाते में ही पा सकते हैं, उचित समाधान किये जाने पर बहुत घातक विष उत्पन्न कर सकते हैं, जिनका आसानी से पता नहीं चलाया जा सकता। मेरे खयाल से मैंने गुटका में कोई ४० पौधों और उनको उपयोग में लाने से संबधित निर्देशों का समावेश किया था। एजेंसी उससे बहुत खुश हुई।

इसके बाद मैं जैविक प्रणालियों पर आया। मैंने कई संक्रामक रोगों के जैव उत्प्रेरक सुझाये, जिन्हें बिना किसी खास दिक्कत के उत्पन्न किया जा सकता है। इसकी संख्या खासी बड़ी है। बेशक, अपने बचाव के लिए कुछेक सख्त पूर्वोपाय करने होते हैं, नहीं तो आप अपना ही सफाया कर बैठेंगे। यह बहुत खतरनाक धंधा है।

बहरहाल मैंने यह सब लिख डाला और उसे भेज दिया और वे बेहद खुश हुए। फिर उन्होंने कहा, 'अब आप रासायनिक विषों और प्रणालियों को ले सकते हैं।' और तब मैंने अत्यंत साधारण सामग्रियों का उपयोग करते हुए उन पदार्थों को बनाने पर कुछ काम किया।

प्रश्न: आपको कुछ पता है कि उन्हें यह दस्तावेज किसलिए चाहिए थी?

••

उत्तर: यह तो मैं नहीं जानता। अलबत्ता 'शैतान की डायरी' के बारे मे एक अजीब बात थी और वह यह कि मुझे खासकर निर्देश दिया गया था कि मैं देश मे ही उपलब्ध सामग्रियों और पौधो पर जोर दू। ऐसे पौधे, जो संयुक्त राज्य अमरीका मे उगते है, और ऐसी प्रारंभिक सामग्रिया, जो संयुक्त राज्य अमरीका मे बिकती हैं। इसका क्या मतलब है, यह तो मैं नहीं जानता, पर यह सोचने की बात है।

प्रश्न: 'शैतान की डायरी' के लिए आपको कितना पैसा मिला

उत्तर उस समय मुझे सी० आई० ए० से सीधे पैसा नहीं मिलता था। पैसा आग्नेयास्त्र बनानेवाली कंपनी को दिया जाता था। मैं परियोजना की लागत तैयार करता, इसके बारे मे अपने सुपरवाइजर को रिपोर्ट करता और सभी प्रशासनिक ब्यौरो की देखरेख करता। मैं इसके बारे मे कुछ नहीं कह सकता कि पैसे कहा जाते थे, उसके बारे मे किसको मालूम था और वे उनके साथ क्या करते थे।

प्रश्न: मतलब, यह एक मूक समझौता-सा था कि आप सी० आई० ए० के लिए काम अपने काम के हिस्से के तौर पर करेंगे?

उत्तर सही है। मेरा वेतन खासा अच्छा था। मैं उससे खुश था। मुझे बहुत सी अतिरिक्त सुविधाएं प्राप्त थी। मसलन, टेलीफोन और रूपांतरिक उपकरण फलक से, जिसमे एक पिस्तौल छिपी रखी थी, युक्त एक बड़ी कार। बहुत बढ़िया कार। इसके अलावा

ज्यादा बड़ा ह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

से एक अनिवार्य विनिर्दिष्ट किया बन्द दी। [illegible] गोलियों के पहले बैच को मुद्द मैंने माओलिक फार्चेन मर्सी हाई स्टैंडर्ड रिम्पीर में बनाया था। मेरा कद लब २००० पन्ने की टेलीफोन डायरेक्टरी को लिए आगन में ले गया और मैंने उस पर कोई १५ फुट की दूरी से गोली चलायी। और गोली ने उसमें इतना बड़ा छेद कर दिया कि आप अपनी मुट्ठी घुमा लें। उसने कोई ज्यादा शोर भी नहीं किया—बस धप्प की सी अजीब आवाज। गोली में ऐसा मसाला भरा गया था कि उसकी गति अवध्वनिक रहे, ताकि कम शोर पैदा करें। "हे भगवान, हैरत की चीज है!" मेरे

• रिम फायर ([illegible] ऐसी गोली है, जो निशाने पर पहने [illegible]

सपर्क ने कहा। फिर उसने जानना चाहा कि क्या वह फौजी ओवरकोट को या रूसी फौजी ओवरकोट को भेद सकती है और फिर भी चोट कर सकती है कि नही, क्योकि गोली की प्रारंभिक गति बडी कम थी।

बहरहाल, मुझे इन गोलियो की वैसे ओवरकोट पहने जिंदा निशानो पर परीक्षा करनी थी। इसलिए मैने अपने सपर्क आदमी से ऐसे ओवरकोट लाकर देने को कहा। माने या न माने, हमने ये ओवरकोट पहनायी चार भेडो पर परीक्षाए की। कपनी मे और किसी को इसके बारे मे मालूम नही था। यह धन्यवादज्ञापन दिवस* की बात है। मेरे साथ दो लोग थे – मेरा सपर्क और एक और आदमी, जो गवाह था। उसके पास एक बोलैक्स सिने कैमरा और एक ३५ मि० मी० मूवी कैमरा था। हमने एक सायोनिक सायलेंसरयुक्त हाई स्टैंडर्ड पिस्तौल, एक सायोनिकयुक्त वाल्टर पिस्तौल और एक वीनस सबमशीनगन का प्रयोग किया। इनमे वीनस सबमशीनगन दोहरे क्लिपो से चलनेवाले बडी रायफलो के २२ रिम-फायर कारतूसो के असख्य राउड प्रति मिनट छोडनेवाला एक अल्पज्ञात, बहुनाल हथियार है।

प्रश्न: वीनस की वास्तविक दागने की रफ्तार क्या है?

---

*सयुक्त राज्य अमरीका का एक राष्ट्रीय पर्व। यह अमरीका में अंग्रेज आदिउपनिवेशको (पिलग्रिम फादर्स) के आगमन के उपलक्ष्य मे नवबर महीने के चौथे सप्ताह मे पडता है (चौथा बृहस्पतिवार)। – स०

हुआ कि वह भी तत्क्षण मर गयी।

फिर बीनम मे गोलिया भरी गयी। उसमे दोहरे मायलेमर लगे थे, जिसमे वह एक ऐमा अजीब शोर पैदा करती थी कि उसे आप कभी गोली की आवाज समझ ही नही सकते थे। और जब उसे चलाया गया तो भेड एकदम चरबी के ढेर मे बदल गयी और वह रोंगटे खडे करनेवाला नज़्ज़ारा था। यह सर्वथा अविश्वसनीय था। १२ सैकड मे सौ राउंड। भेड की शब्दश धज्जिया उडकर सब ओर बिखर गयी। हमने अनचाहे ही दो भेडों को मार दिया था, क्योंकि पहली भेड इतनी जल्दी गिरी और गोलियो के क्लिप इतनी जल्दी खाली हुए कि गोलिया पहली के ऊपर मे निकलकर दूसरी को भी जा लगी।

प्रश्न. सी० आई० ए० को सतोष हुआ?

उत्तर हा, बिलकुल पूरी तरह से। सी० आई० ए०-वालो ने उसके ५,००० राउंडो का ऑर्डर दिया और इसलिए मैंने उन्हे तैयार कर दिया। बाद मे वे फिर आये और बोले, "इस चीज के साथ आप और क्या कुछ कर सकते है? क्या आप उसकी 'साघातिकता' को और बढा सकते हैं?" मैंने पूछा, "हे भगवान, इस साली को आप कितना और ज्यादा साघातिक कराना चाहते हैं?" उन्होंने कहा, "बात यह है कि हमे कुछ ऐसी चीज चाहिए, जो जरा कम नाटकीय हो। हवाई जहाज मे किसी की छाती मे मुट्ठी बराबर छेद करना जरा ज्यादा ही प्रत्यक्ष हो जाता है।" मैंने कहा, "हा, बात तो है। यह जरा ज्यादा ही

गदगी पैदा करती है।" इसलिए मैंने कुछ ऐसी गोलिया तैयार की, जिनमे बहुत ही कम मसाला था और वे बहुत ही कम आवाज करती थी। उनकी गति भी बड़ी कम थी। जब ऐसी गोली प्रवेश करती, तो उसका एक सिरा फट से खुल जाता और आप जो भी चाहें शरीर मे इजैक्ट हो जाता। इनमे से कुछ गोलियो हिमशुष्कित नागविष भरा हुआ था। कुछ मे व्याघ्र सर्पविष भी था। मैं यह बिलकुल भी नही समझ रहा था कि सी० आई० ए०-वाले विषयुक्त गोलिया आखिर चाहते क्यो है। मुझे लगा कि मेरा जेम्स बॉ सरीखे लोगों से पाला पड़ा है, जो बस नयी-नयी जुगते ही चाहते है। उन्हे वह गोली बहुत पसद आयी और बहुत सुविधाजनक लगी।

प्रश्न: बहरहाल, वह खासा परिष्कृत हथियार था। क्या आपने उससे भी अधिक परिष्कृत हथियार बनाये ?

उत्तर: हा। सवाल फिर परिकल्पना रूप मे रख गया था "अगर कही आप किसी ऐसी जगह मे जा फसे, जहा आप शत्रु, कामोन्मत्त अल्बानी बौनो या बेरहम जगली भीड़ से घिर जाये, तो आप क्या करेगे ?" मैंने खासी अक्ल दौड़ायी। आखिर मैंने कहा, "ढोलाफेंक हथियार मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत कारगर होते है। जेबी आकार का ढोलाफेंक बनाने का भी कोई तरीका निकाला जा सकता है।"

यह विचार उन्हे बहुत दिलचस्प लगा। लेकिन उनके

का आरभ तब हुआ, जब मैंने आग्नेयास्त्र बनाने के
लिए काम करना शुरू किया। मेरी लोगों के
जिनमें मैं खुद भी आ जाता हूं, जान से मारने के
चीजें बनाने की बनिस्बत जीने में कहीं ज्यादा दिलचस्पी
थी। कुछेक अवसरों पर मैं अपने को करीब-करीब
उड़ा ही बैठा था।

प्रश्न यह सोचकर कि हो सकता है, यह कोई
संयोग न था, आप कभी पैरानॉइड (मनोविभ्रमग्रस्त)
तो नहीं हुए?

उत्तर बेशक, मगर अपना ध्यान रखना जरूरी
है, नहीं तो आप पागल हो जायेंगे। बहरहाल,
शारीरिक और मानसिक रूप से इस हद तक निढाल
हो गया था कि किसी न किसी चीज का जवाब
जाना अवश्यभावी था और तभी मुझे दिल का दौरा
पड़ा। एक साल बाद लगभग उसी दिन मुझे दिल
का दूसरा दौरा पड़ा। तीन महीने बाद मैं काम पर
वापस गया, मगर अलग हो जाने के पक्के इरादे
से।

मेरे ख्याल में यह मेरे औपचारिक रूप से का
से अलग होने के कुछ ही दिन बाद की बात है कि
फोन आया और मैं एक सी० आई० ए०-वाले से मिला
और कहने को वह बस मेरे स्वास्थ्य के बारे में
पूछ-ताछ कर रहा था। मगर उसकी दिलचस्पी
सामाजिक जीवन में थी। जानते हैं न, बहुत अस्पष्ट
अनौपचारिक-से प्रश्न, मगर यह सब असामान्य था।
सो मैंने कह दिया बस, मैं हथियारों का काम अ

प्रश्न : [illegible] मगर आपकी धमकी [illegible]
खोखली थी ?

उत्तर : आखिरी मुठभेड़ तब हुई, जब मैंने [illegible]
का ध्यान इस तरफ गया कि उसका पीछा किया [illegible]
है। यह दूसरी बार था कि जब उसने महसूस कि[illegible]
कि कोई हर वक्त उसके पीछे लगा रहता है और [illegible]
हद थी। बस इसी ने सब कुछ तय कर दि[illegible]
मैंने फोन किया और सी० आई० ए० वालों से
एक रेस्तरां में भेंट निश्चित की। मैं अंदर [illegible]
और बैठ गया। उन्होंने पीने के लिए कुछ मंगवा[illegible]
और मुझसे पूछा कि क्या मैं भी पीना चाहता हूं।
मैंने कहा 'शुक्रिया नहीं मैं बस एक बात कह[illegible]
यहां आया हूं जो यह है अत्यन्त गंभीर मे—अ[illegible]
आप मुझे निगरानी में रखना और इस तरह [illegible]
आचरण करना जारी रखते हैं कि जैसे मैं कि[illegible]
राजनीतिक बकवास में शामिल हूं, खासकर अ[illegible]
जब कि आपने मेरे परिवार को भी उसमें घसीट लि[illegible]
है, तो मैं आपको अब यहां खरे-खरे बता रहा हूं [illegible]
मैं लैंग्ली की सैंट्रल एयर कंडीशनिंग प्रणाली में छिपा
YX के कनस्तर को उड़ा डालूंगा। अगर मेरे सा[illegible]
या मेरे परिवार के साथ कोई भी असाधारण बा[illegible]
होती है, तो मैंने व्यवस्था कर रखी है कि यह विस्फो[illegible]
हो और वह होकर रहेगा।" और मैं उठा और बाह[illegible]
निकल आया।

प्रश्न : आप झांसा दे रहे थे ?

उत्तर : नहीं, मैं सच कह रहा था। मैं जीवरासायनि[illegible]

की दीना (DINA) तथा ऐसी ही अन्य गुप्त सेवाओं के जो सभी कभी न कभी सी० आई० ए० द्वारा कायम की गयी थी और उसकी कठपुतलियां हैं, भाड़े के हत्यारों की तरह काम किया है।

"लेकिन सी० आई० ए० और एफ० बी० आई० (फेडरल ब्यूरो ऑफ इनवैस्टीगेशन – संघीय अन्वेषण कार्यालय) तक को यह अनुभव हो गया है कि उन्होंने एक फ्रैंकेंस्टाइन दानव* को पैदा किया है। विदेशों में आतंकवाद की निंदा करने में तनिक भी कोताही न करनेवाली अमरीकी सरकार दुनिया के एक सबसे दुष्ट आतंकवादी संगठन को आश्रय दे रही है। ये लोग खतरनाक, पेशेवर मुजरिम, किराये के हत्यारे और मादकद्रव्य विक्रेता हैं। वे न सिर्फ क्यूबा के लिए ही, जो वास्तव में पूर्णतः सुरक्षित है, बल्कि संयुक्त राज्य अमरीका में क्यूबाई समुदाय की भारी बहुसंख्या के लिए भी, जो उनसे कोई सरोकार नहीं रखना चाहती और उन अमरीकी तथा विदेशी नागरिकों के लिए भी खतरनाक हैं, जिनका क्यूबा के साथ कारबार हो सकता है।

"साठ के दशक के आरंभ से इन आतंकवादियों ने एजेंसी की छत्रछाया में अपने विस्फोटक पदार्थों के उपयोग में, ध्वंस और बम-निर्माण में और एजेंसी के

*फ्रैंकेंस्टाइन – अंग्रेज लेखिका मेरी शैली के १८१८ में लिखित एक उपन्यास का नायक, जिसके चित्र के आधार पर पश्चिम में बहुत सी दहशत फिल्में बनी हैं। भस्मासुर की ही भांति फ्रैंकेंस्टाइन भी अपने सर्जक के लिए ही खतरा बन जाता है। – सं०

ग्लभ में आतंकवाद का यह रोमहर्षक और उन्मत्त सूत्रा आह्वान सी० आई० ए० द्वारा पिछले पचीस वर्षों में पैदा किये गये और पोषित एक छोटे से, मगर घातक गुट द्वारा किये जानेवाले दुष्कृत्यों में सिर्फ सबसे ताजा ही है अमरीकी पत्रिका 'कॉवर्ट एक्शन इन्फॉर्मेशन बुलेटिन (प्रच्छन्न कार्य सूचना पत्रिका') ने इंगित किया।

दो दशकों से," पत्रिका ने आगे कहा, "क्यूबाई निर्वासित-अतिवादी पश्चिमी गोलार्ध में लगभग प्रत्येक और यूरोप तथा अफ्रीका में भी अनेक सनसनीखेज आतंकवादी कार्रवाइयों के केंद्र में या केंद्र के निकट रहे हैं। पुलिस सूत्रों का विश्वास है कि इस दल के केंद्र में कोई १०० लोग है, जो न्यूयॉर्क, न्यूजर्सी, मियामी और प्वेर्टो रीको में निर्वासित समुदायों के भीतर बिखरे हुए है। मगर वे ऐसे लोग है, जो एक-दूसरे को पचीस साल से जानते है, उनमें घुसपैठ करना बहुत मुश्किल है उन्होंने बेखौफी के साथ चार महाद्वीपों पर बमकांड किये है और लोगों को अपाहिज किया और जान से मारा है।

"सातवें दशक भर और आठवें दशक में भी काफी समय तक इस क्यूबाई निर्वासित जालसूत्र ने सी० आई० ए० और उसके सहयोगियों के लिए न केवल क्यूबा पर असंख्य हमलों में, जिनमें कोचीनोस की खाड़ी (बे ऑफ पिग्ज) का विफल हमला सबसे उल्लेखनीय है, बल्कि कांगो और वियतनाम में भाड़े के सैनिकों की तरह, वाटरगेट के प्यादों की तरह, और चिली

ह, अमरीका में उत्पन्न सगठनकर्ता, जिसने विस्फोटकों ा गया था और जिसके सी० आई० ए० के साथ बंध सुस्थापित साबित हो गये थे, कुछ ही साल कैद ी सजा पाकर छूट गया।

लेकिन लेनेनियेर-मोफिन अन्वेषण के अलावा स जालसूत्र के खिलाफ बहुत कम ही कार्रवाई हुई । संभवत वाटरगेट काड से संबद्ध बहुत से लोगों ी ही तरह इस जालसूत्र के नेतागण भी बहुत ज्यादा ानते हैं। तिस पर भी यही प्रतीत होता है कि सयुक्त ाज्य अमरीका के लिए जोखिम बहुत ज्यादा है। ये ातकवादी सयुक्त राष्ट्र सघ में और वाशिंगटन में हुत से राजनयिकों के लिए खतरा हैं

"अधिकारियो ने इस जालसूत्र के खिलाफ कदम ही उठाये हैं, यद्यपि उसके सदस्यों के बारे में अधिकाधिक ज्ञात होता जा रहा है। क्यूबाई निर्वासित मुदाय और क्यूबा सरकार के बीच गत वर्ष के अत ा वार्ता आरभ होने के बाद से उनकी नीति अधिक कट – और अधिक उन्मत्त – हो गयी है। आतक-ादियों द्वारा इस वार्ता की निंदा किये जाने के बावजूद उसके परिणामस्वरूप तीन हजार कैदियो की रिहाई हुई है, उन सभी को तथा कई औरों को निष्क्रमण वीज़ा प्रदान किये गये हैं और देश के बाहर रहनेवाले सभी क्यूबाइयों को अपने सबंधियों से मिलने के लिए वापस आने की सर्वग्राही अनुमति प्रदान की गयी है। आतकवादियों का रवैया धमकी भरा रहा है, कोचीनोस की खाडी में हमले के एक सहभागी ने खुले तौर पर

तथा स्वयं अपने मार्गदर्शक संगठनों के बीच अन्तर में
हत्या की कार्रवाइयों में संलग्न पाते। उन्होंने क्यूबाई,
अर्जेंटीना, इटली और अन्य राजनयिकों की हत्या
की है। उन्होंने बार्बेडोस में एक क्यूबाई यात्री विमान को
आकाश में ध्वस्त किया है जिस पर सवार सभी ७३
मर गये थे।

और हाल के महीनों में उन्होंने क्यूबा के साथ
किसी भी तरह के संपर्क के विरुद्ध सीधा हमला बोल
दिया है। उन्होंने न्यूयॉर्क में क्यूबाई संयुक्त राष्ट्र मिशन
और वाशिंगटन में क्यूबाई हित विभाग पर बम फेंके
हैं उन्होंने इसी कारण यात्रा एजेंसियों पर बम फेंके
हैं उन्होंने क्यूबा के बारे में सहानुभूतिपूर्ण वक्तव्यों के
लिए अखबारों पर बम फेंके हैं उन्होंने क्यूबा को
दवाइयों के भेजे जाने का विरोध करने के लिए
न्यूजर्सी में एक औषधालय तक पर बम फेंके हैं।"

पत्रिका आगे लिखती है, "उनकी अकेली गलती
यह धृष्टतापूर्ण विश्वास था कि वे वाशिंगटन तक
में, जो परंपरा में राजनयिकों के लिए एक निरापद
आश्रयस्थल रहा है, बेखौफ हत्याएं कर सकते हैं।
सितंबर, १९७६ में ओरलान्डो लेतेलियेर और उनके
सहायक रोनी मॉफिन की वाशिंगटन के केंद्र में हत्या
ने न्याय मंत्रालय को इस आतंकवाद के खिलाफ जरा
सक्रिय कार्रवाई करने को विवश कर दिया। क्यूबाई
आतंकवादियों ने दिखला दिया था कि अमरीकी सरकार
का अपने द्वारा ही सर्जित दानव पर अब कोई नियंत्रण
नहीं था। चार दुष्टभैये पकड़े गये और दंड के भागी

'कोवर्ट एक्शन इन्फार्मेशन बुलेटिन' ने हमें बताया : अमरीकी अधिकारी कोई भी कदम उठाने का इरादा नहीं रखते – क्यूबाई प्रतिक्रान्तिकारियों से वही युद्ध है और यदि राष्ट्रपति तथा सिनेट सही है वक्तव्यों को ध्यान में रखा जाये तो अमरीकी प्रशासन ने क्यूबा के सन्दर्भ में एकदम शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाया हुआ है। मैंग्नी के लोग जिन्होंने क्यूबा के विरुद्ध आतंकवादी कार्यों की योजना बनायी है, भविष्य में काफी व्यस्त दिनों की अपेक्षा कर सकते हैं। विगत में अमरीकी राष्ट्रपतियों ने फीदेल कास्त्रो की हत्या के प्रयासों में किसी भी तरह से अमरीकी सरकार का हाथ होने से साफ इन्कार किया था यद्यपि उन्हें, निस्सन्देह, बहुत कुछ मालूम था। वर्तमान प्रशासन अपने खुले तौर पर आक्रामक क्यूबाविरोधी वक्तव्यों पर गर्व करता प्रतीत होता है। "*

पहले यह सब ऐसा लगा करता था। (हम यह उद्धरण 'न्यूयॉर्क टाइम्स' से दे रहे हैं)

"सीनेटर फ्रैंक चर्च ने आज बतलाया कि सैंट्रल इंटैलीजेंस एजेंसी ने तीन राष्ट्रपतियों के प्रशासनों में प्रधान मंत्री फीदेल कास्त्रो की हत्या करने के वास्तविक प्रयास किये थे।

"सीनेट की गुप्तचर्या विषयक प्रवर समिति के अध्यक्ष ने कहा कि समिति के समक्ष ड्वाइट डी०

---

* *Covert Action Information Bulletin*, 1979, No 6.

मोरचा नामक प्रतिक्रांतिकारी संगठन के एक एजेंट का क्यूबा में चोरी से आगमन हुआ, जो अपने साथ प्रधान सेनापति फीदेल कास्त्रो की हत्या करने के सी० आई० ए० के आदेश को लेकर आया था।

यह आदेश हुआन बमीगालुपी होर्नेदो, हिगीनीओ मेनेंदेस बेलत्रान, गीलेर्मो कोऊला फेरर तथा अन्यों द्वारा कार्यरूप में परिणत किया जाना था।

उन्होंने कल्जादा-दे-रावो-वोयेरोस और माता कतलीना सड़कों के चौराहे पर हत्या करने की योजना बनायी। इस काम में इस चौराहे पर स्थित एक मोटरकार धुलाईखाने के मालिक को उनकी सहायता करनी थी। इसके लिए कई कारें, एक छोटा ट्रक, दो बन्दूकें, फ्रैगमेंटशन बम*, मशीनगनें और दूसरे हथियार मौके पर पहुंचा दिये गये, इनमें से ज्यादातर धुलाईखाने के पास ही जमीन के एक खाली टुकड़े में छिपाकर रखे गये थे।

पकड़े जाने पर गीलेर्मो कोऊला और हिगीनीओ मेनेंदेस ने कबूल किया कि षड्यन्त्र को सी० आई० ए० द्वारा निर्देशित किया जा रहा था। षड्यन्त्रकारी सी० आई० ए० अधिकारियों के साथ संपर्क रखते थे, जो उन्हें गुआनतानेमो स्थित अमरीकी नौसैनिक अड्डे और क्यूबा में एक पूंजीवादी देश के दूतावास के जरिए निर्देश और साज-सामान पहुंचाते थे।

४. जुलाई, १९६१ के उत्तरार्ध से तीस नवम्बर,

*फटने पर छोटे छोटे टुकड़ों में बंट जानेवाला बम। – सं०

५. कोचीनोस की खाड़ी की मुहिमबाज़ी की विफलता के बाद सी० आई० ए० ने हमारे देश के विरुद्ध अपनी ध्वंसात्मक कार्रवाइयों को बढ़ाया और तेज़ किया और बिखरे हुए प्रतिक्रान्तिकारी संगठनों का प्रतिरोध संघ नामक संगठन के इर्द-गिर्द पुनर्गठन करना शुरू किया।

यह काम क्यूबा में चोरी से प्रविष्ट सी० आई० ए० एजेंटों – एमीलीओ अदोल्फ़ो रीवेरो कारो (ब्राड), अदोल्फ़ो मेंदोज़ा (राऊल), होर्हे गार्मीआ रूबीज़ (टोनी) और अल्फ़ेदो इज़ागिरे दे ला रीवा (तीतो) तथा कुछ अन्यों को सौंपा गया। इन लोगों को भांति-भांति की प्रतिक्रान्तिकारी कार्रवाइयां शुरू करनी थी, जिनमें २६ जुलाई, १९६१ को ओरियेंते में अंतोनीओ मासेओ स्टेडियम में एक प्रांतीय रैली के दौरान राऊल कास्त्रो की हत्या भी शामिल थी। इसकी असफलता की सूरत में उन्होंने सांतीआगो हवाई अड्डे के रास्ते पर हत्या का एक और प्रयास करने की योजना बनायी थी। इसके बाद उन्हें गुआनतानेमो नौसैनिक अड्डे पर हमला करके भड़कावे की कार्रवाई करनी थी।

उनकी योजना यह थी कि दुनिया को यह विश्वास हो जाये कि राऊल कास्त्रो की मौत से क्रोधाध होकर क्यूबाई सरकार के अन्य नेताओं ने गुआनतानेमो पर हमला करने का आदेश दे दिया है। यह संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा क्यूबा पर प्रत्यक्ष आक्रमण का औचित्य-स्थापन करने के लिए किया जाना था। इसी के साथ-साथ यथासंभव अधिक राष्ट्रों को विवाद में घसीटने

जनसाधारण की सतर्कता की बदौलत अधिकांशत विफल रही। कुछेक छुट-पुट विस्फोट ही हो पाये – दूकानों मे अग्निबम विस्फोटित करने की योजना धरी रह गयी, क्योंकि मुख्य व्यापारिक केंद्रो और प्रतिष्ठानो मे रखे गये बमों का समय रहते पता चल गया था।

प्रधान मंत्री की हत्या के लिए २६, अवेनीदा दे लास मिस्योनेस की आठवी मंजिल पर स्थित फ्लैट ८-अ को चुना गया था। निर्धारित तिथि के कुछ दिन पहले अंतोनीओ वेसीआना प्रस्तावित मंत्रिया के बारे मे सी० आई० ए० को विस्तार से बताने के लिए फ्लोरिडा गया।

बजूकाएं साझ घिरने के साथ चलायी जानी थी। षड्यत्रकारियों ने ठीक यही समय इसलिए चुना था कि उनके हिसाब से सभा के शुरू हो जाने के बाद सभास्थल पर तैनात प्रहरियों का ध्यान उसी की तरफ लग जायेगा और वे इतने चौकन्ने नही रहेंगे। बजूकाएं चलाने के बाद दहशत फैलाने के लिए भीड पर हथगोले फेंके जाने थे। षड्यंत्रकारियों को सेना और मिलीशिया की वरदियों मे होना था।

योजना को अंतोनीओ रेनोल्दो गजालेस, बरनार्दो परादेला इबार्रे, राऊल वेता दे माजो और हुआन एम० इस्कर्येदो दीआस द्वारा कार्यरूप दिया जाना था। वे सभी पकड लिये गये। अपनी गिरफ्तारी के समय उनसे ये चीजे बरामद की गयी अमरीका मे निर्मित एक बजूका, चेकोस्लोवाकिया मे बनी दो मशीनगनें, तीन मिलीशिया वरदियां, पांच फ्रैगमेंटेशन हथगोले,

अधिकारियों ने इन योजनाओं के कार्यान्वियन के लिए षड्यन्त्रकारियों को बड़ी मात्रा में सैनिक साज-सामान और गोला-बारूद मुहैया किया।

अड्डे में मौजूद अमरीकी अधिकारियों ने कई टन हथियार भेजे जाने में सक्रिय भाग लिया था, जो षड्यन्त्रकारियों की गिरफ्तारी के समय उनसे बरामद किये गये।

६ अक्तूबर, १९६१ में एस्केंब्रे का दूसरा मोरचा और क्रान्तिकारी पुनर्स्थापना आंदोलन नामक प्रति-क्रान्तिकारी संगठनों ने सी० आई० ए० के निदेशन में क्यूबाई राजधानी में अनर्थवाद करने की एक संयुक्त योजना बनायी, जो जानबूझकर नगरवासियों में नाराजी पैदा करने की ओर लक्षित थी, जिनका राष्ट्रपति ओस्वाल्दो दोर्तीकोस की समाजवादी देशों की यात्रा से वापसी के अवसर पर उनका स्वागत करने के लिए बड़ी संख्या में एकत्र होना अवश्यभावी था।

प्रतिक्रान्तिकारियों की योजना भूतपूर्व राष्ट्रपति प्रासाद के सामने स्वागत सभा के दौरान फीदेल कास्त्रो तथा क्रान्तिकारी सरकार के दूसरे नेताओं पर बंदूकें चलाना था। इस योजना को पूरा करने का दायित्व सी० आई० ए० एजेंट अंतोनीओ वेसीआना (विक्टर) पर था।

यह योजना ४ दिसंबर को कार्यान्वित की जानी थी। इससे पहले २९ सितंबर को तोड़फोड़ की कई सारी कार्रवाइयां की

डॉक्टर राऊल रोआ को चुना गया। योजना को कार्यरूप देने के लिए तीस लोगों को पांच-पांच के छ दलों में विभाजित किया गया था। पंद्रह षड्यंत्रकारियों को राष्ट्रीय क्रांतिकारी मिलीशिया की वर्दियों में होना था।

८. १९६३ के पहले दिन हैं। देश ने अभी हाल ही में राष्ट्रीय मुक्ति दिवस की चौथी वर्षगांठ मनायी है और साल के आनेवाले महीनों के लिए फ़ीदेल द्वारा निर्धारित कार्यभारों की पूर्ति के पथ पर उत्साहपूर्वक बढ़ना शुरू किया है, जिसे संगठन-वर्ष की संज्ञा दी गयी है।

दिन के तीन बजे हैं। वेदादो में एम और पचीसवीं सड़कों के संगम पर स्थित कार पार्क में दो आदमी आपस में मज़े में बातें कर रहे हैं। दोनों ही हिल्टन होटल – अब हवाना लीब्रे होटल – के कर्मचारी थे – सालीम दे ला करीदाद पेरेस नून्येस, जो होटल की कैफ़ेटेरिया में काम करता था, और मान्वेल दे हेसूस कंपानीओनी मोऊरा, जो उसके कैसीनो में काम करता था।

"हमारा एक गुप्त संगठन है, जिसमें कुछ होटलों और कैफ़ेटेरियाओं में काम करनेवाले शामिल हैं," कंपानीओनी कहता है। "तुम उसमें शामिल क्यों नहीं हो जाते?"

"मैं पहले ही ऐसे एक संगठन में शामिल हो चुका हूं," पेरेस नून्येस जवाब देता है।

एक फौजी वरदी और एक एम-१७ कारबाइन की कारतूस पेटी।

७ १९६२ के आरंभ में सी० आई० ए० और गुआनतानामो नौसैनिक अड्डे से निर्देश पाकर प्रतिक्रांतिकारी होर्हे लुईस कुएर्वो काल्वो ने तथाकथित क्रांतिकारी इकाई संघ की स्थापना करने के उद्देश्य से कुछेक प्रतिक्रांतिकारी दलों और संगठनों का पुनर्गठन करना शुरू किया।

कुएर्वो काल्वो कार्य-योजनाओं को तैयार करने और हथियार तथा साज-सामान प्राप्त करने के वास्ते नौसैनिक अड्डे से कायम किये गये संपर्कों के बारे में सूचित करने के लिए उबेर्तो रोमेरो पेना, राऊल वेग हेर्नांडेज, राऊल वेग हिमनेज तथा और लोगों से मिला।

सी० आई० ए० क्युबाई क्रांति के नेता की हत्या करने और गुआनतानामो नौसैनिक अड्डे पर हमले के लिए भड़कावा देने की अपनी योजनाओं से विरत नहीं हुई। उसके आदेशों पर चलते हुए कुएर्वो काल्वो ने तीन अन्य संगठनों से संपर्क स्थापित किया और तथाकथित जेड योजना को तैयार करना शुरू किया।

योजना यह थी कि क्युबाई क्रांति के नेताओं में से एक की हत्या कर दी जाये और उसके बाद सारे देश में [illegible] की, जो स्वाभाविकतया मृतक की [illegible] की [illegible] में शामिल होंगे, एक साथ हत्या कर दी जाये।

हत्या प्रयत्न के पहले [illegible]

६ कम्युनिस्टविरोधी नागरिक प्रतिरोध ब्लाक, जिसमे क्रान्तिकारी पुनर्स्थापना आदोलन, मोतेक्रीस्ती दल, केंद्रीय राष्ट्रीय परिषद, क्रान्तिकारी एकता, गुप्त कमाडो तथा राष्ट्रीय मुक्ति सेना सम्मिलित थे, सी० आई० ए० के निर्देश उसके एजेंट नीनो दीआस के जरिए प्राप्त करता था।

१९६३ में सी० आई० ए० ने ब्लाक को ऐसी कई कार्रवाइया करने का आदेश दिया, जिससे यह लगे कि क्यूबा मे सक्रिय जन-प्रतिरोध हो रहा है। वास्तविक प्रयोजन यह था कि अमरीकी राज्य-सघ के सदस्य-राज्यो के राष्ट्रपतियो के सम्मेलन मे क्यूबा के विरुद्ध सशस्त्र हस्तक्षेप करने का सवाल उठाया जा सके।

इन योजनाओ मे तीन चरणो की परिकल्पना की गयी थी।

सबसे पहले १३ मार्च* की समारोही सभा मे भाषण देते समय फीदेल कास्त्रो की हत्या। इसके लिए षड्यत्रकारियो के पास पाच गोले और एक तोप थी जिसे हवाना विश्वविद्यालय के पास एक मकान मे लगाया जाना था।

इसके बाद क्रान्ति रक्षा समितियो की शाखाओ और जिला केंद्रो पर एक पूजीवादी देश के दूतावास के जरिए प्राप्त अमरीकी फ्रैगमेटेशन हथगोलो से हमले किये जाने थे।

---

*१३ मार्च १९५७ को क्रान्तिमना छात्रो ने राष्ट्रपति प्रासाद पर हमला किया था। इस तिथि को क्यूबा में एक राष्ट्रीय उत्सव की तरह मनाया जाता है। —स०

कपानीओनी उससे पूछता है कि क्या सच है
फीदेल कास्त्रो होटल में अकसर आया करते हैं। व
कहता है कि उसके पास शासक के नेता की हत्या क
की कोई बढ़िया चीज " है।

मतलब ? " दूसरा प्रतिक्रांतिकारी पूछता

यह चीज है घातक विषभरे कैपस्यूल।"

और अगर वे असर न करें तो ? "

इसका सवाल ही नहीं उठता " कपानीओ
बताता है, मुझे ये अमरीकियों ने दिये हैं।"

और वह फौरन ये कैपस्यूल देने को तैय
हो जाता है ताकि यह अपराध किया
सके।

पेरेस नून्येस प्रस्ताव मान लेता है। तीन दिन ब
वे उसी जगह फिर मिलते हैं। कपानीओनी उसे कैपस्
देता है जो रूप-चित्र रखने के डिब्बे में छिपाये
है।

कैपस्यूल लेने के बाद पेरेस नून्येस होटल वा
चला आता है। वह उन्हें अपनी मेज में रख देता है
फिर वह उन्हें रोज कैफेटेरिया म ले जाने लगता
और उन्हें आइसक्रीम फ्रीजर की प्रेशर गैस सप्लाई
नलियों में छिपा देता है। शाम को वह उन्हें निका
लेता है और वापस मेज में रख देता है।

आखिर एक दिन दोनों ही षड्यंत्रकारियों क
राजकीय सुरक्षा अधिकारियों ने धर पकड़ा। जाँच
पड़ताल के दौरान इस षड्यंत्र में सी० आई० ए० के
हिस्सेदार का अकाट्य प्रमाण मिला।

स्तोवल कार्बाइन और बहुत भारी मात्रा में गोली-रुद।

१० विश्वविद्यालय में हत्या प्रयास के असफल होने के बाद कम्युनिस्टविरोधी नागरिक प्रतिरोध ब्लॉक के कुछ सदस्यों ने सी० आई० ए० के निदेशन में फीदेल कास्त्रो की हत्या की एक और योजना बनायी। इस बार यह प्रयास ७ अप्रैल, १९६३ को लातीनो-अमरीकानो स्टेडियम (लातीन अमरीका स्टेडियम) में किया जाना था। उसे पिस्तौलों और ग्रेनेडों से लैस १६ लोगों द्वारा कार्यरूप दिया जाना था।

षड्यन्त्रकारी आशा कर रहे थे कि इस दिन फीदेल कास्त्रो राष्ट्रीय बेसबॉल चैंपियनशिप के फाइनल को देखने के लिए आयेंगे।

इस प्रयास में जिन लोगों को भाग लेना था, उनमें एनरीके रोद्रीगेस वाल्देस (मूल्यादो के नाम से विख्यात), रीकार्दो लोपेस काब्रेरा, एस्तेबान रामोस केस्सेल, गीदो वालीएते त्रिस्तान, होसे मेर्वानिस बार्रोसो, रल्फेदो एदुगे फ़ारोत, ओर्लैदो वालेरो बार्सोला और जोसे घील्यार दे फ़ाकी मुख्य थे। ये सभी पकड़े गये।

११ प्रतिक्रांतिकारी संगठनों के कम्युनिस्टविरोधी नागरिक प्रतिरोध ब्लॉक ने १९६३ में २६ जुलाई समारोहों के समय क्रांति चौक में फीदेल और राऊल कास्त्रो की हत्या करने की योजना बनायी।

इसके अलावा तामारीदो सड़क पर स्थित एक फौजी भंडार पर भी हमला किया जाना था और देश भर में तोड़-फोड़ की कई कार्रवाइयां की जानी थीं।

इस मामले की तफ्तीश और हिरासत में लिये गये लोगों से पूछ-ताछ से यह सिद्ध हुआ कि इस योजना को सी० आई० ए० का अनुमोदन प्राप्त था और यह उक्त राजनयिक मिशन और गुआनतानेमो नौसैनिक अड्डे की कमान की जानकारी में तैयार की गयी थी।

इस मामले में गिरफ्तार किये जानेवालों में सबसे प्रमुख थे सुर्रेम दवीद रोद्रीगस गजालेस – राष्ट्रीय संयोजक, क्रांतिकारी पुनर्स्थापना आंदोलन, रीकार्दो आल्मेदो मोरेनो – राष्ट्रीय संयोजक, मोंतेक्रीस्ती दल, तोमास गोयेदो मार्तीन – राष्ट्रीय संयोजक, क्रांतिकारी एकता और अध्यक्ष, कम्युनिस्टविरोधी नागरिक प्रतिरोध ब्लाक, होसे मामोरा तोमा [illegible] राष्ट्रीय संगठन, क्रांतिकारी पुनर्स्थापना आंदोलन, [illegible] तोमास सान हिल का सहायक होसे मार्तीनि [illegible] (दूसरा नाम से भी विज्ञात) [illegible] आदो गार्सिया – रवाना और [illegible] के सक्रिय दस्युओं का सरगना [illegible] और सी० आई० ए० एजेंट [illegible] कार्लोस मोरेनो।

गिरफ्तार किये जानेवालों से ये हथियार बरामद किये गये – दो टामसन मशीनगनें, एक ३.५ मि० मी [illegible] [illegible] दूरबीनी [illegible] [illegible] [illegible] हथगोले [illegible]

इस प्रयास में रेने सिगलर साचेस एवीआन, हेमूस माताने दे ओका क्रूज, ओस्कर सिबीला सोरीआ और एलीसर रोद्रीगेस स्वारेस के नेतृत्व में चार गु को भाग लेना था। इब्रहीम माचीन हेर्नांदिस इन मं गुटो का नेता था।

गिरफ्तारी के समय इन लोगो से बहुत बडी मा में सी० आई० ए० द्वारा मुहैया किये गये हथिया और गोला-बारूद बरामद किये गये।

१२ सितंबर, १९६३ में राजकीय सुरक्षा विभा को पता चला कि क्रान्तिकारी एकता के आतरि मोर्चे और "तीन ए" सगठनो के सदस्यो ने क्रां रक्षा समितियो की स्थापना जयती समारोह सभा मच को विस्फोट द्वारा उडा देने की योजना बनाय है। इस कार्य के लिए ६० पाउड प्लास्टिक विस्फोटव (सी-४) का प्रयोग किया जाना था।

सुरक्षा विभाग के अधिकारियो ने षड्यन्त्रकारिय को तुरत गिरफ्तार करने का आदेश दिया। ओलांदी मार्तीनीभानो दे ला क्रूज साचेस, हुआन इसराएल रमान्यास सेओन, हेमूस प्लासिदो रोद्रीगेस मोन्तेरा, र्दुम वेल्त्रान आरेनगीवीआ पेरेस फ्रासीस्को ब्लाको ै साम कुएलोस, इजीनियर फेदेरीको हेर्नांदेस गढान्देस था अन्य प्रतिक्रान्तिकारियो को गिरफ्तार कर लिया गया। इन लोगो का हमारे देश में निवास करनेवाले हासीसी नागरिक, सी० आई० ए० एजेंट पियेर आवेल शेतम दे ऊरे में सपर्क था, जिसने कबूल किया कि

चैंपियनशिप के उद्घाटन के अवसर पर कार्यान्वित किया जाना था।

वे लोग मशीनगनों और फ्रैगमेंटेशन हथगोलों से लैस थे। उनका इरादा दहशत और अव्यवस्था फैलाने के लिए साथ ही दर्शकों पर गोलीवर्षा करने का भी था।

१६. १९६४ में सी० आई० ए० ने बिखरे हुए प्रतिक्रांतिकारी संगठनों को तथाकथित उनीदाद रेसिस्तेंसीआ के अंतर्गत एक बार फिर पुनर्गठित करने का प्रयास किया।

१९६५ के आरंभ में राजकीय सुरक्षा अभिकरणों को पता चला कि इस संगठन के सदस्य २० जनवरी से क्रांति के नेताओं के हत्या प्रयासों का एक सिलसिला शुरू करनेवाले हैं।

इन योजनाओं में २१ वीं सड़क और पहली सड़क के संगम पर वीता नोवा रेस्तरां में फीदेल कास्त्रो की हत्या भी शामिल थी।

षड्यंत्रकारियों को प्रधान सेनापति के पहुंचने पर रेस्तरां के एक कर्मचारी, प्रतिक्रांतिकारी रीकार्दो गर्रीगा देल कस्तीलों से इशारा मिलना था।

हत्या योजना को एनरीके आब्रेऊ विलायी (हेनरी) द्वारा कार्लोस वीसेंते साचेस हेर्नांदेस, ह्लीओ दे लास नीएवेस रूईस पीनालूगा तथा अन्यों के सहयोग से कार्यरूप दिया जाना था।

गिरफ्तार कर लिये जाने पर इन लोगों ने अपनी कारगुज़ारियों और सी० आई० ए० के साथ अपने संबंधों को कबूल किया। इन लोगों से ये हथियार

पर मैत्री के नये कार्यभारों की पूर्ति करने के लि
आपस में विलयीकरण हो गया। ये सगठन सी० आ
ए० के लिए आर्थिक और सैनिक सूचनाए एकत्र कि
करते थे।

सी० आई० ए० के निर्देशानुसार नेल
बूवेन्त्यास पेरेस, एल्तेल मीग्वेल आरेनसीबीआ वि
रोलादो गाल्दोस रामोला, अल्फोसो तोर्कमादा तें
मरिनो वैलाक वाल्देस तथा अन्य प्रतिक्रातिकारियो
फीदेल कास्त्रों की हत्या करने की तैयारिया कर
शुरू किया।

यह प्रयास ११ वी सडक पर किया जाना था
जहा राष्ट्रपति के सचिवालय की प्रधान और मत्रिपरिषद
की सचिव सेलीआ साचेस का निवास था।

पकडे जाने पर इन लोगो ने पूरी तरह से इकबाल
कर लिया और सी० आई० ए० के साथ अपने सपर्कों
को स्वीकार किया।

१५. जनवरी, १९६५ के आरभ मे हूलीओ
तोमार रूज सेसीलीम, फेर्मीन गजालेस कार्बाल्लो
और हिराल्दो रेनाल्दो दीएगो सोलानो नामक प्रतिक्राति-
कारियो ने, जो राष्ट्रीय मुक्ति सेना के सदस्य थे,
लीआगो दे लास वेगास मे फीदेल कास्त्रो की हत्या
एक और योजना को अतिम रूप देना शुरू किया।
कुछ समय बाद उन्होंने पुरानी योजना को त्याग
और एक नयी योजना तैयार की, जिसे ३१
री को, ... स्टेडियम मे बेसबॉल

मारीओ मलाबारीआ को आर्नूरो वरोना के जरिए, जो एक ज्ञात सी० आई० ए० एजेंट था, १०,००० पेसो, एक सायलेंसर लगी पिस्तौल, चार मैग्नम रिवॉल्वर और बहुत बड़ी मात्रा में कारतूस और वाकी-टाकी प्राप्त हुए।

पूछ-ताछ के दौरान मारीओ मलाबारीआ ने अपने जुर्म को और सी० आई० ए० से प्राप्त सहायता को स्वीकार किया।

१८ जून, १९६५ में सी० आई० ए० एजेंटो के एक जाल का भेद खुला, जो रामोन (मोंगो) और लीओपोल्दीना (पोलीता) ग्राऊ अल्मीना के निदेशन में भांति-भांति की शत्रुतापूर्ण और असामाजिक कार्रवाइयों में लगे हुए थे और क्यूबा में कुछ पूंजीवादी दूतावासों के जरिए सी० आई० ए० के साथ संपर्क रखते थे।

ये लोग सी० आई० ए० से निर्देश और पैसा पानेवाले रेस्काते, कम्युनिस्टविरोधी क्रांतिकारी आंदोलन और दूसरे प्रतिक्रांतिकारी संगठनों के सदस्य थे।

सी० आई० ए० ने पोलीता ग्राऊ को अन्य कामों के अलावा प्रधान सेनापति फीदेल कास्त्रो की हत्या की योजना तैयार करने का भी आदेश दिया। इसके लिए उसे सी० आई० ए० से जहर के कैपस्यूल प्राप्त हुए। ये कैपस्यूल विमी आल्वेर्तो क्रूज कामो को दिये गये थे, जिसने अपनी बारी में उन्हें एक डॉक्टर को दिया, जो सी० आई० ए० एजेंटों के एक दल का नेता था।

गाद जहाज़ संयुक्त राज्य अमरीका वापस लौट गये।

मई, १९६६ में इन्ही तत्वो ने मीरामार में पाचवें एवेन्यू (महामार्ग) पर फीदेल कास्त्रो की हत्या करने क उद्देश्य से देश में चोरी से प्रवेश किया।

लेकिन इस बार उन्हे उतरने के साथ ही दबोच लिया गया। मुठभेड़ में आर्मांदो रोमेरो मार्तीनेस और मानादालीओ हेर्मीनो दीआस गार्सीआ नामक प्रतिक्रांतिकारी मारे गये और कमाडोस-एक के प्रधान अनोनिओ कुएस्ता वाल्ये और एऊहेनिओ एनरीके माल्दीवार कार्देनास को हथियारो और सैनिक साज़-सामान की विशाल मात्रा के साथ गिरफ्तार कर लिया गया।

इन प्रतिक्रांतिकारियो को प्वेर्तो रीको में प्रशिक्षण दिया गया था। इनमे से कुछ ने वाणिज्यिक पोत 'मान पास्कुआल' पर गोलाबारी करने में हिस्सा लिया था, जो इस हमले के परिणामस्वरूप कैबारियान (लास वील्यास) बदरगाह में डूब गया था।

२० १९६६ मे राजकीय सुरक्षा अभिकरणो ने भूतपूर्व कमाडेंट रोलादो कूबेला सेकादेस को गिरफ्तार किया, जो फीदेल कास्त्रो की हत्या की एक और साज़िश का सरगना था।

यह योजना सी० आई० ए० द्वारा तैयार की गयी थी। कूबेला की मैड्रिड यात्रा के समय उसे मान्वेल [illegible]म, होर्हे ("एल मार्गो") रोब्रेन्यो, लूईस एनरीके [illegible]कोस और कार्लोस तेपेदीनो नामक सी० आई० [illegible]जेटो ने अपने साथ मिला लिया था।

हलचल मची हुई है, जिससे संयुक्त राज्य अमरीका में क्यूबाई प्रतिक्रांतिकारी संगठनों को सरकारी आर्थिक सहायता पाने का बहाना मिल सके।

क्यूबा में अपने कामों को अंजाम देने के लिए सी० आई० ए० ने उन्हें 'एम-३०-११', रेसे, लोम पीनोस नुएवोस, कमांडो सेरो, 'आल्फा-६६' तथा अन्य संगठनों में प्रशिक्षण दिया था।

उन्हें अपने काम के लिए आवश्यक सभी हथियारों और साज-सामान से लैस किया गया था।

२२. १९७१ में फीदेल कास्त्रो की चिली यात्रा के समय उनकी हत्या का प्रयास किया गया। इस प्रयास में सी० आई० ए० के निदेशन में चिलीआई फासिस्तों ने 'आल्फा-६६' के प्रतिक्रांतिकारियों के साथ मिलकर काम किया।

इस योजना के कार्यान्वयन में मुख्य भूमिका हेसूस दोमीनेस बेनीतेस (एल इस्लेन्यो) की थी, जिसके लिए वेनेजुएला में रहनेवाले क्यूबाई प्रतिक्रांतिकारियों के जरिए जाली कागजात हासिल किये गये थे, जिनमें उसे वेनेजुएलाई पत्रकार बताया गया था, जो मानो क्यूबाई प्रधानमंत्री की यात्रा की रिपोर्ट करने के लिए आया था।

पहली योजना के अनुसार हत्या टेलीविजन कैमरा में छिपायी पिस्तौल से की जानी थी, मगर उसे बाद में इस कारण त्याग दिया गया कि वह षड्यन्त्रकारी की निरापदता को प्रत्याभूत नहीं करती थी।

हत्या की इस योजना की तैयारी में मैक्सिको में क्यूबाई दूतावास के कर्मचारी होसे लुईस रदामस गल्यारेना और आल्वेर्नो ("तल लोसो") क्वा भी शामिल थे।

आर्तीमे ने कूबेला से अपनी मुलाकात में प्रधान सेनापति फीदेल कास्त्रो की हत्या के बाद घंटे के भीतर शुरू होनेवाले आक्रमण के लिए जहाज, हथियार और लोग मुहैया करने की गारंटी दी।

हवाना लौटने के पहले गल्यारेना ने कूबेला को दूरबीनी लक्ष्यदर्शी और सायलेंसरयुक्त रायफल दी, जो उसके पकड़े जाने के समय कई और हथियारों और गोलाबारूद के साथ उससे बरामद हुई।

गल्यारेना और आल्वेर्नो क्वासो को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

२१ १७ मार्च, १९६७ को क्यूबाई सीमा प्रहरियों ने फेलिक्स अस्सेन्सीओ पेस्सो विल्फ़ेदो मार्तीनि दीआस और गुस्तावो अरेसेस अल्वारेस नाम प्रतिक्रांतिकारियों को धर दबोचा, जिन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका से आकर बायो-फ़ागोसो के इलाके चोरी से घुसने की कोशिश की थी।

उनका मुख्य कार्यभार क्यूबा के प्रधान मंत्री की हत्या करना और प्लास्टिक विस्फोटकों का उपयोग करके बाकायदा तोड़फोड़ अभियान छेड़ना था।

इन सभी कार्यों का उद्देश्य विदेशों में यह छाप पैदा करना था कि देश में ज़बरदस्त व्यवस्थाविरोधी

कार्लोस रफाएल के साथ बैठे साथियो ने षड्यन्त्रकारियों की गोलियो का जवाब देते हुए उनमे से एक, हुआन होसे मार्तोरी सील्वा, को घायल कर दिया, जो कुछ घंटे बाद इमर्जेंसी अस्पताल के आपरेशन कक्ष मे मर गया।

मौके की जाच के दौरान राजकीय सुरक्षाकर्मियो को और चीजो के अलावा एक ४५ मि० मी० व्यास की एम-३ सबमशीनगन और कारतूसभरे क्लिपो सहित एक ४५ मि० मी० व्यास की कोल्ट पिस्तौल मिली

पूछ-ताछ के दौरान अभियुक्तो मे से एक ने कबूल किया कि यह अपराध करने के लिए षड्यन्त्रकारी, जिनमे क्रातिकारी पुनर्स्थापना आदोलन के प्रतिनिधि और इसी इलाके के मुख्य जासूसी दल के प्रधान शामिल थे, एक सी० आई० ए० एजेंट से मिले थे, जिसने उन्हें आदेश दिये थे।

योजना पहले ही तैयार कर ली गयी थी, क्योकि रेडियो और प्रेस रिपोर्टों से दो दिन पहले ही पता चल गया था कि कार्लोस रफाएल उस दिन मानासास मे माउन्टो थियेटर मे होगे। कई तथ्य यह भी दिखाते है कि पहले यह प्रयास सभवत फीदेल कास्त्रो के विरुद्ध लक्षित किया जाना था, मगर षड्यन्त्रकारियो ने इस अपने-आप हाथ आये मौके को ही पकड लिया और साथी कार्लोस रफाएल रोद्रीगेस की हत्या करने का निश्चय कर लिया।

* * *

अमरीकी अधिकारियों ने दोमीगेस बेनीतेज़ को जो पोदेर कूबानो नामक आतंकवादी संगठन से संबद्ध था, इस संगठन के सदस्य की हैसियत से संयुक्त राज्य अमरीका तथा दूसरे देशों में गैरकानूनी कार्रवाइयों के लिए उत्तरदायी ठहराया था। इस सिलसिले में वह १९६८ में संघीय अन्वेषण ब्यूरो (एफ० बी० आई०) द्वारा गिरफ्तार भी किया गया था।

१९७० में उसने 'आल्फा-६६' द्वारा ओरियेंटे देश में प्रवेश करने के असफल प्रयत्न में हिस्सा लिया और फिर भागकर गुआनतानेमो नौसैनिक अड्डे में शरण ली जहां उसे फिर गिरफ्तार कर लिया गया इस बार जमानत के बाद फरार हो जाने के लिए।

इसके बावजूद वह आज़ाद ही रहा और क्यूबाई प्रधान मंत्री की हत्या के एक नये प्रयास में भाग लेने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका से दक्षिण अमरीका जाने और वहां से वापस आने में उसे किसी भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा।

संगठन अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किसी भी साधन और तरीके से परहेज नहीं करते।

हिंदचीन में अमरीकी आक्रमण अमरीकी साम्राज्य-वाद के इतिहास के जघन्यतम अध्यायों में एक है। वाशिंगटन की वियतनामी मुहिमबाज़ी को "गर्हित युद्ध" की संज्ञा दी गयी है। किंतु इसे अभूतपूर्व पैमाने का अंतर्राष्ट्रीय आतंक का कार्य कहना अधिक सही होगा, क्योंकि इसमें मुख्य भूमिका अमरीकी गुप्तचर्या ने, और सर्वोपरि सैनिक गुप्तचर्या तथा सी० आई० ए० ने अदा की थी। उन्होंने वियतनाम में प्रच्छन्न कार्यों का एक व्यापक कार्यक्रम – आतंकवादी कार्यों और अंतर्ध्वंस से लेकर दक्षिण वियतनाम में राजनीतिक विरोधियों के सामूहिक भौतिक निर्मूलन तक पूर्ण हिंसा का कार्यक्रम चलाया था। इसे वास्तविक जनसंहार कहना सर्वथा समीचीन है।

"जनसंहार – सामूहिक निर्मूलन – के कम से कम दो ज्ञात और प्रमाणीकृत मामले हैं," अर्जेंटीनी पत्रकार ग्र्वाल्लेरीओ मार्देनिस अपनी पुस्तक 'मुखौटे के बिना सी० आई० ए०' में लिखते हैं, "जिनमें सी० आई० ए० की शिरकत थी – इंडोनेशिया में सत्ता पर्युत्क्षेपण, जिसने राष्ट्रपति सुकार्णो को सत्ताच्युत किया और दक्षिण वियतनाम में तथाकथित फीनिक्स 'प्रशमन' कार्यक्रम।

"फीनिक्स कार्यक्रम सी० आई० ए० के तत्का-लीन उपनिदेशक विलियम कोल्बी के निर्देशानुसार लैग्ली द्वारा १९६६ में अनुमृत दक्षिण वियतनामी

देहातों के 'प्रशमन' की नीति का ही विनिर्
था। यह 'प्रशमन' प्रांतीय निरीक्षण दल नामक टोलियों
द्वारा किया जाता था, जिनमें अनियमित दक्षिण
वियतनामी सैनिक काम करते थे, जो आबाद इलाकों
पर ताबड़तोड़ हमले किया करते थे। इन दलों (अथवा
अधिक सटीक शब्दों में कहें, तो सशस्त्र चरम दक्षिण
पंथी गिरोहों) की सहायता के लिए ४४ प्रांतीय जाँच
पड़ताल केंद्र (प्रत्येक प्रांत में एक) थे, जिनके कर्म
चारी अपने संदिग्ध देशवासियों को व्यवस्थित तरीके
यातनाएं देते थे

लेकिन कुछ लोग इन उपायों को कदाचित
पर्याप्त समझते थे। इसलिए कोल्बी ने नेतृत्व औ
रणनीतिक योजना के पहलुओं पर सावधानीपूर्वक सो
विचार करने के बाद फीनिक्स कार्यक्रम तैयार किया
कार्यक्रम में दक्षिण वियतनामी पुलिस और गुप्तच
सेवाओं और इसी प्रकार दक्षिण वियतनामी और अमरीकी
सैन्य दलों को भी शिरकत शामिल थी। १९७
में सीनेट समिति के सामने साक्ष्य देते हुए कोल्बी
स्वीकार किया कि फीनिक्स कार्यक्रम के क्रियान्वय
के दौरान २०४८७ संदिग्ध व्यक्ति मार डाले ग

ड्रगमेंटेशन बमो, गोलाफेंको और दूसरे हथियारो का प्रयोग भी जनसहार ही है।"*

फीनिक्स कार्यक्रम मे जहा सैनिक गुप्तचर सेवाओ की सक्रिय सहभागिता थी, वहा इसमे भी कोई शक नही कि सामूहिक हत्याओं मे प्रमुख भूमिका सी० आई० ए० ने निभायी। यह एक तथ्य है कि स्वय विलियम कोल्बी ने नागरिकों के निर्मूलन के अनिवार्य मासिक कोटा निर्धारित किये थे। सी० आई० ए० के भावी प्रमुख द्वारा स्थापित अमानुषिक प्रक्रिया की कम से कम कुछ सफाई देने के प्रयास मे 'पैरेड' पत्रिका ने लिखा

"फीनिक्स कार्यक्रम के कार्यान्वयन मे कुछ ज्यादतिया हुई, और कोल्बी ने स्वय यह स्वीकार किया है लेकिन ज्यादतिया तो सभी युद्धो मे होती है, और हमे कोल्बी पर 'सामूहिक हत्यारा और युद्ध-अपराधी' होने की तोहमत लगाना प्रकटत अनुचित लगता है दूसरे विश्वयुद्ध मे किसीने हमारे सैनिको पर ऐसी तोहमत नही लगायी थी, जब वे जर्मनो को मार रहे थे।"**

द्वितीय विश्वयुद्ध के सैनिको की बात अलग रहने दे, उन्हे ऐसी "तोहमत" लगाये जाने का कोई खतरा नही है, पर यह "तोहमत" अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या

---

*ग्वाल्तेरीओ मार्शेनिस, 'मुखौटे के बिना सी० आई० ए०', सीस्त प्रकाशन, मास्को १९७१, पृ० ९५-९६ (रूसी मे)।

** *Parade*, July 21, 1974, p 6

फ्रैगमेंटेशन बमों, ¹   दूसरे हथियारों का प्रयोग भी जनसंहार

फीनिक्स कार्यक्रम में जहां सैनिक गुप्तचर सेवाओं की सक्रिय सहभागिता थी, वहां इसमें भी कोई शक नहीं कि सामूहिक हत्याओं में प्रमुख भूमिका सी० आई० ए० ने निभायी। यह एक तथ्य है कि स्वयं विलियम कोल्बी ने नागरिकों के निर्मूलन के अनिवार्य मासिक कोटा निर्धारित किये थे। सी० आई० ए० के भावी प्रमुख द्वारा स्थापित अमानुषिक प्रक्रिया की कम से कम कुछ सफाई देने के प्रयास में 'पैरेड' पत्रिका ने लिखा

"फीनिक्स कार्यक्रम के कार्यान्वयन में कुछ ज्यादतियां हुईं, और कोल्बी ने स्वयं यह स्वीकार किया है लेकिन ज्यादतियां तो सभी युद्धों में होती हैं, और हमें कोल्बी पर 'सामूहिक हत्यारा और युद्ध-अपराधी' होने की तोहमत लगाना प्रकटतः अनुचित लगता है दूसरे विश्वयुद्ध में किसीने हमारे सैनिकों पर ऐसी तोहमत नहीं लगायी थी, जब वे जर्मनों को मार रहे थे।"**

द्वितीय विश्वयुद्ध के सैनिकों की बात अलग रहने दें, उन्हें ऐसी "तोहमत" लगाये जाने का कोई खतरा नहीं है, पर यह "तोहमत" अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या

---

*ग्वान्तेरीओ मार्टेलिस, 'मुखौटे के बिना सी० आई० ए० सीम्स प्रकाशन, मास्को, १९७९, पृ० ६५-६६ (रूसी में)।

** *Parade* July 21, 1974, p 6

अधिकारियो पर भी बखूबी लगायी जा सकती है, जो अपने सी० आई० ए० सहकर्मियो मे किसी भी तरह कम निष्ठुर नही थे।

'काउटरस्पाई' ('प्रतिगुप्तचर') पत्रिका ने वियतनाम मे सैनिक गुप्तचर सेवा के गर्हित काम के बारे मे एक लेख प्रकाशित किया था। यहा हम उसका सक्षिप्त रूप दे रहे है

"**प्रश्न** क्या आपने वियतनाम गणराज्य मे कभी फील्ड टेलीफोन* के तार कैदियो या हवालातियो के बदनो मे जोडकर और टेलीफोन को चालू करके, जिससे तारो से होकर बिजली गुजरे, उनसे जानकारी हासिल करने की कोशिश की है?

उत्तर हा, मैने इस तरीके को कई बार इस्तेमाल किया है, क्योकि वियतनाम मे सभी पूछ-ताछ करनेवालो ने यही किया है।"**

यह प्रश्न सैनिक गुप्तचर सेवा के एक सैनिक से पूछा गया था, जो युद्धबदियो से पूछ-ताछ करनेवाली एक इकाई मे सलग्न था। इस शख्स ने हवालाती वियतनामियो को यत्रणा देने और उनकी हत्याओ मे हिस्सा लिया था।

कम से कम १८ लोगो ने इस सैनिक गुप्तचर्या इकाई से सबधित जाच के दौरान गवाही दी। उन सभी ने स्वीकार किया कि उन्होने नागरिको और

---

* रणक्षेत्र मे प्रयुक्त होनेवाला फौजी टेलीफोन। – स०

** *Counterspy* Vol 3 No 2, 1976 p 61

इन तरीक़ो मे थप्पड मारना, धक्के देना, कैदियो को हाथो, मुक्को या डडो मे पीटना और बिजली और जल-यत्रणा विधियो का इस्तेमाल सम्मिलित था। उसने बताया कि इस तरह की पूछ-ताछ मेजर जार्ज की जानकारी मे होती थी।*

वियतनाम मे अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या की कार्य-प्रणाली ऐसी थी। "सी० आई० ए० भी इतनी ही दक्ष थी", यद्यपि उसके द्वारा प्रयुक्त तरीके कई मामलो मे सर्वथा भिन्न थे।

'स्थानीय घरेलू दमनकारी शक्तियो के साथ घनिष्ठ सहयोग," ग्वान्तेरीआ मार्दोनेस कहते है, "गुप्तचर्या बिरादरी के भडकावे की कार्रवाइयो मे लगे अभिकरणो की कार्य-विधि का एक प्रमुख लक्षण है। यह कुछ विशेषकर नाजुक कामो को स्थानीय पुलिस की सहायता से करना सभव कर देता है। इनमे पत्रव्यवहार की सेसरशिप, टेलीफोन को टैप करना, विदेश जानेवालो की सूची पर नज़र रखना, होटलो मे ठहरनेवालो के नामो की जाच करना, आदि शामिल हैं। यह सहयोग सी० आई० ए० के लिए अन्य कार्यों मे भी महत्वपूर्ण है, उदाहरण के लिए, छापे मारना, गिरफ्तारिया और सूचना प्राप्त करवाने के लिए यत्रणा। सुरक्षा के कारणो से किसी भी अमरीकी सी० आई० ए० एजेट को इन मामलो मे प्रत्यक्षत शामिल नही होना चाहिए रहस्योद्घाटन होने पर

---

* *Counterspy*, Vol 3, No 2, 1976, p 61

इस तरह के तथ्य भावी मित्रों अथवा तटस्थो
अननुकूल छाप पैदा कर सकते हैं।"*

इस प्रकार, दमन और आतंक का दौर दू
के हाथों चलाया जाता है। वियतनाम में सी० आ
ए० की कार्रवाइयों के इस पहलू के बारे में अमरी
विदेश विभाग गुप्तचर्या के एक भूतपूर्व अधिकारी ज
मार्क्स ने लिखा है "मैं एक भूतपूर्व सी० आई०
कर्मी के साथ अपनी एक हाल की भेंटवार्ता के बारे
बतलाना चाहता हूं। इस आदमी ने लातीनी अमरी
और वियतनाम में काम किया था और अपने अनु
के बारे में मुझसे बहुत खुलकर बातें की। शुरू क
के पहले मैं यह बतला दूं कि प्रान्तीय पूछ-ताछ
क्या थे। ये विशाल भवन थे, जिन्हें सी० आई०
ने पूछ-ताछ कक्षों, हवालातों, अमरीकी और वियतना
कर्मचारियों के कार्यालयों आदि के साथ प्रत्येक प्र
में बनाया था। भेंटवार्ता में सिवाय कुछ शब्दों
जो बात करनेवाले सी० आई० ए० कर्मी की पहच
को प्रकट करते हैं कुछ भी नहीं बदला गया।

'सी० आई० ए० कर्मी मैंने खुद नैतिकता
अर्थों में कभी नहीं सोचा। मुझे आदेश मिलता
यह दिया जाता है और मेरे काम का आकलन
लक्ष्यों की सिद्धि से होता था। सो मैं उस कवायद
ही रहता। लेकिन अगर किसी किसी को जान
मारने का कार्यभार मेरे सामने रखा जाता तो बस

*[illegible] पृ० ११४

उसकी नैतिकता के बारे में सोचता। लेकिन अगर
रा काम चे गेवारा के खिलाफ है, तो ऐसी की तैसी!
उसका सारा काम पूरी तरह से गैरकानूनी था। इसलिए
मैं उसे दबोचने के लिए कुछ भी करने को तैयार था,
चाहे वह काम गैरकानूनी ही क्यों न होता।"*

यह है एक सी० आई० ए० कर्मी की मनोवृत्ति, जो तीस साल से ज्यादा के कम्युनिस्टविरोधी अभ्यनुकूलन के परिणामस्वरूप homo sapiens (प्राज्ञ मानव) का यांत्रिक विद्रूप भर बन गया है और कोई भी गैरकानूनी काम कर सकता है।

जॉन मार्क्स यह तो वैसा ही नजरिया लगता है, जो सी० आई० ए० में खासा व्यापक है, अर्थात यह कि बड़ी भलाई और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सब कुछ किया जा सकता है।

" **सी० आई० ए० कर्मी** मैं फिर वही बात दुहराता हूं। मुझे याद नहीं कि मैंने कभी किसीको चोट पहुंचायी हो, अपाहिज किया हो या मारा हो या ऐसा चाहा भी हो। गैरकानूनी बातें अलबत्ता होती थीं मगर वे छोटी-मोटी ही थीं। और अगर किसीको कोई चोट-वोट लगती भी थी, तो आम तौर पर ऐसा तब ही होता था कि जब काम पर हमारा पूरा नियंत्रण नहीं होता था। और इससे मेरा मतलब यह कि जब हम पुलिस का उपयोग कर रहे

---

* *Uncloaking the CIA*, Ed. by Howard Franzier, The Free Press, a Division of Macmillan Publishing Co., Inc., New York, 1978, p. 15

होते थे, क्योंकि इन लोगों के साथ बात यह है कि उनकी मानसिकता हमारी मानसिकता से भिन्न है। वे लोग बिलकुल वहशी है। वे इन प्रांतीय पूछ-ताछ केंद्रों का, जो हमारे क्षेत्राधिकार और नियंत्रण में थे सारे वियतनाम में ढिंढोरा पीटा करते थे मेरा आधा वक्त एक प्रांतीय पूछ-ताछ केंद्र से दूसरे में जाने में लगता था, और, कसम भगवान की, यह सारा काम बेदाड़ा, सफाई से और सलीके से करवाता था। एक बार किसी प्रांत में कुछ वियतनामियों का पीट-पीटकर मलीदा बना दिया गया। इसके लिए कभी कोई मंजूरी या आज्ञा नहीं दी गयी थी। हम दुनिया भर का तूफान खड़ा कर देते, पर सब बेसूद था, पत्थर की दीवार से बात करने जैसा था।

'इन लोगों (वियतनामियों) की मानसिकता ही यह है कि बस डंडे और जबरदस्ती से सब कुछ हो जाता है। इसके अलावा वे आपस में एक-दूसरे से नफरत करते हैं और, ज्यों ही मौका मिलता है, पीट-पीटकर एक-दूसरे का मलीदा बना डालते हैं। सी० आई० ए० को बहुत अधिक दोष का भागी बनना पड़ा। मगर हम पर अकेली जवाबदेही इस बात की है कि हमने इन केंद्रों को स्थापित किया बेशक, प्रांतीय पूछ-ताछ केंद्रों का, जिन्हें विशेष शाखा पुलिसवाले चलाते थे, पैसा और परामर्श देना हमारे कार्यक्षेत्र क्षेत्राधिकार में था। विशेष शाखा पर भी हमारा कुछ नियंत्रण था क्योंकि हम उसे सहायता और पैसा देते थे। मगर जहां तक यातना

की बात है, उसका तो कभी-कभी हमे पता भी नही होता था। प्राय इसके बारे मे हमे सुनने को तभी मिलता जब कोई पत्रकार उस इलाके मे घूमता होता और वहा किसी तरह से उसे इसका पता चल जाता। हम यत्रणा के बारे में अखबार में पढ़ते और हमें साइ-गोन से तार आता और पूछा जाता 'तुम्हारे मनहूस पूछ-ताछ केंद्र मे यह सब क्या हो रहा है?' लेकिन हमने एजेंसी की हैसियत से पुलिसवालो को यत्रणा या बलप्रयोग के लिए कभी प्रोत्साहित नही किया हम तो उनसे ऐसा न करने के लिए ही कहते थे। वे कहते, 'ठीक है, हम ऐसा नही करेंगे।' लेकिन हम (सी० आई० ए०-वाले) तो इन पूछ-ताछो मे मौजूद रहते नही थे। इसके अलावा, इसलिए भी कि इस तरह की बात देखना मुझे पसद नही लेकिन उसके प्रकाश मे आ जाने पर उस टोली की सारी कारस्तानी का कलक फिर सी० आई० ए० के मत्थे ही आ पडता था, क्योकि एजेंसी ही उस टोली को मदद, पैसा या सलाह तक दे रही थी। असल मे यह उचित नही है, और जब भी हमारा नाम ऐसे मामलो मे घसीटा जाता था, तो हम मे से अधिकतर ऐसा ही सोचते थे।"*

"यह भूतपूर्व सी० आई० ए० कर्मी उस 'गुप्त मानसिकता' की एक भयावह मिसाल पेश कर रहा है", लेखक आगे कहता है, "जो इस एजेंसी मे

---

* *Uncloaking the CIA*, pp 15-16

इतनी व्यापक है वह उस किस्म का आदमी है जिसे अधिकार और प्रभाव की जगहों से अलग कर दिया जाना चाहिए। वह उस किस्म का आदमी है जो किसी भी सीनेट समिति के सामने सच नहीं बोलेगा। फिर भी वह शायद ऐसा आदमी है, जो अपने बच्चों को प्यार करता है, जो अपने लॉन को करीने से सवारता है। आप उससे बातचीत करें, तो आपको वह खासा मोहक भी लगेगा। दूसरे शब्दों में, वह कोई मस्तिष्कहीन स्वचालित यंत्र नहीं, जीता-जागता इन्सान है। लेकिन वह सी० आई० ए० के लिए अपने काम को व्यक्तिगत नैतिकता के किसी भी अहसास से पूर्णत अलग रखता है

"वह समय आ गया है कि हम सब इस तरह के कामों के लिए, जो दुनिया भर में हमारे नाम से किये जा रहे है, अपने को भी उत्तरदायी माने। हम अपने रेडियो की आवाज को चाहे कितना ही ऊंचा क्यों न कर दे, आखिरकार हमे लोगों की चीत्कारों को सुनना ही पड़ेगा। समय आ गया है कि सी० आई० ए० के गुप्त कार्यों का अंत किया जाये और सयुक्त राज्य अमरीका को अन्तर्राष्ट्रीय कानून और शालीनता का कम से कम न्यूनतम मानदंड तो मानने को विवश किया जाये

"सयुक्त राज्य अमरीका इस तरह की कार्रवाइयों से जितना ही जल्दी अलग हो जाये, उतना ही बेहतर है।" *

---

* *Ibid* pp 16-17

देखने में भी वह वकील, अध्यापक, पादरी, बैंकर, डाक्टर ही लगते हैं, यानी सिवा उसके और सब कुछ, जो वह असल में हैं — देश के प्रधान जासूस, वर्षों तक सी० आई० ए० के गुप्त अथवा 'अवैध कर्म' निदेशालय के उपनिदेशक।

"सैनिक अफसर एलरिज कोल्बी की एकमात्र संतान विलियम कोल्बी के जासूसी कैरियर का सबसे विवादास्पद अंश उनकी वियतनामी प्रशमन कार्यक्रम में सहभागिता से सम्बद्ध है। इस कार्यक्रम का एक हिस्सा वह सक्रिया है, जिसे फोनिक्स का कूटनाम दिया गया था, जिसमें वियतकांगियों को पकड़ा जाना, कैद में रखा जाना, स्वपक्षत्याग और मारा जाना शामिल था।

"कट्टर रोमन कैथोलिक, ४२,००० डॉलर सालाना पानेवाले परिश्रमी सरकारी कर्मचारी, अपने चार बच्चों के स्नेही और कर्तव्यपरायण पिता वकील की हैसियत से वह नागरिक जीवन में उससे तीन गुना अधिक कमा सकते थे, जितना सरकारी नौकरी में पाते हैं। 'मगर', वह कहते हैं, 'इससे

"**अध्यक्ष**· मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हू। आपने कहा है कि प्रच्छन्न कार्य राष्ट्रीय नीति को प्रतिबिंबित करता है। बात यह है कि अगर सारा प्रच्छन्न कार्य गुप्त रूप से किया जाता है और जब वह प्रकट हो जाता है, तो सी० आई० ए० द्वारा उससे इन्कार किया जाता है और अगर वह जनसाधारण के आगे न लाया जाता है और न स्वीकारा ही जाता है तो वह राष्ट्रीय नीति को कैसे प्रतिबिंबित कर सकता है?

"**कोल्बी** अध्यक्ष महोदय, इसलिए कि ऐसे कार्य का आदेश हमें सयुक्त राज्य अमरीका की सरकार के स्थापित निर्वाचित प्राधिकरणो, राष्ट्रपति और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद द्वारा दिया जाता है और कांग्रेस को रिपोर्ट किया जाता है।"

फिर वही चिरपरिचित बहाना – मैं तो बस आदेशो का पालन करता हू।

पैतीस साल पहले न्यूरेंबर्ग मुकदमे मे लाखो लोगो की मौत के लिए जिम्मेदार लोगो ने भी यही बात कही थी।

"**श्रोतावृद मे से एक आवाज़** · आपने वियतनाम मे कितने लोगो को मारा?

"**कोल्बी** मैं इस सवाल का जवाब देना चाहूगा। मैने खुद किसीको भी नही मारा (श्रोतावृद मे हसी)। फीनिक्स कार्यक्रम वियतनामी सरकार के समस्त प्रशमन कार्यक्रम का एक हिस्सा था। उसके अनेक अन्य अग भी थे गावो की रक्षा के लिए इलाको

मे स्थानीय सुरक्षा सेनाओ का निर्माण, स्वयमेवक आत्मरक्षा दलो मे उपयोग के लिए दक्षिण वियतनाम के लोगो को पाच लाख हथियारो का दिया जाना जो एक ऐसा कार्य है कि जिसे करने का साहस, मेरे ख़याल मे, कई सरकारे शायद ही बटोर पाये।

"इसमे गावो और प्रातो को विकसित करने का प्रातीय चुनावो का और उनके निर्वाचित अधिकारियो को सत्ता सौपने का कार्यक्रम भी शामिल था। इसने स्थानीय अधिकारियो को इलाको मे आर्थिक विकास के बारे मे निर्णय लेने का अधिकार दिया। इस तरह के कितने ही कार्यक्रम थे, जिनमे, प्रसगत ऐसे एक-दो लाख से अधिक वियतनामियो के प्रलोभन, अगीकरण और पुनर्वासन का कार्यक्रम भी था। जो वियतकाग* के साथ रहे थे और जिन्होने सरकार के पक्ष मे आने का फैसला किया था और जिन्हे अगीकृत किया गया और उन्होने जो कुछ भी किया था, उसके लिए दडित नही किया गया। इस कार्यक्रम मे लाखो शरणार्थियो का अगीकरण और पुनर्वासन और सुरक्षा व्यवस्था के सुधारने के साथ उन्हे अनन गावो को लौटाना भी शामिल था। और इसमे फीनिक्स कार्यक्रम भी था जिसे उस कम्युनिस्ट तत्र के नेताओ का पता चलाने की दृष्टि मे तैयार किया गया था, जो दक्षिण वियत-

*शब्दश वियतनामी कम्युनिस्ट। यह शब्द दक्षिण वियतनाम के स्वतत्रता आदोलन और उसके छापामारो के लिए प्रयोग मे लाया जाता था। —स०

नाम की आबादी को आतंक :
बना रहा था।

"फौनिक्स कार्यक्रम को उस अत्यंत अप्रिय और गंदे युद्ध में कुछ व्यवस्था और नियमितता लाने के लिए १९६८ के आसपास तैयार किया और कार्यरूप देना शुरू किया गया था, जो पहले से चला आ रहा था। कार्यक्रम में उसे चलाने की प्रक्रियाओं को सुधारने के लिए बहुत सी चीजें थीं।

"**श्रोतावृंद में से एक आवाज** आप जब वहां थे, उस समय कितने लोग मारे गये?

"**कोल्बी** मैं इसके बारे में बयान दे चुका हूं और मैंने बताया था कि फौनिक्स कार्यक्रम के ढाई साल से अधिक के कार्यान्वयन के दौरान उनतीस हजार लोग गिरफ्तार किये गये थे, सत्रह हजार स्वपक्षत्याग करके आये थे और साढ़े बीस हजार मारे गये थे, जिनमें से सत्तासी प्रतिशत नियमित और अर्द्धसैनिक दस्तों द्वारा और तेरह प्रतिशत पुलिस तथा ऐसे ही अन्य अभिकरणों द्वारा मारे गये थे।

"मारे जानेवालों का भारी बहुलांश सैनिक मुठभेड़ों, अग्निकांडों और घात लगाकर हमलों में मारा गया था और शेष में से अधिकतर उन्हें पकड़ने की कोशिश में पुलिस कार्रवाइयों में मारे गये थे। फौनिक्स कार्यक्रम का मुख्य जोर बहुत ही उचित और सीधे-सादे कारणों से पकड़ने को प्रोत्साहित करने पर था। एक तो, इसलिए कि जहां भी संभव हो, हम मानव जीवन का सम्मान करते हैं (श्रोतावृंद में

मे स्थानीय सुरक्षा सेनाओं का निर्माण स्वयंसेवक आत्मरक्षा दलो मे उपयोग के लिए दक्षिण वियतनाम के लोगो को पाच लाख हथियारो का दिया जाना जो एक ऐसा कार्य है कि जिसे करने का साहस मेरे खयाल मे, कई सरकारे शायद ही बटोर पाये।

"इसमे गावो और प्रातो को विकसित करने का, प्रातीय चुनावों का और उनके निर्वाचित अधिकारियो को सत्ता सौपने का कार्यक्रम भी शामिल था। इसने स्थानीय अधिकारियो को इलाको मे आर्थिक विकास के बारे मे निर्णय लेने का अधिकार दिया। इस तरह के कितने ही कार्यक्रम थे जिनमे प्रसगत ऐसे एक-दो लाख से अधिक वियतनामियो के प्रलोभन अगीकरण और पुनर्वासन का कार्यक्रम भी था। जो वियतकाग* के साथ रहे थे और जिन्होने सरकार के पक्ष [illegible]
फैसला किया था और जिन्हे [illegible]
उन्होने जो कुछ भी किया
नही किया गया। इस [illegible]
का अगीकरण और [illegible]
के सुधारने के साथ उन्हे
शामिल था। और
जिसे उस [illegible]
की दृष्टि से तैयार

---

*[illegible]
के स्वागत [illegible]
[illegible]

हसी), और दूसरे, इसलिए कि ज़िंदा कैदी सूचना प्रदान कर सकता है, जब कि मुरदा लाश कुछ भी नही दे सकती।"*

ज़िंदा कैदियों से सूचना किस तरह से उगलवायी जाती थी, यह फीनिक्स कार्यक्रम के एक विशेषज्ञ विक्टर मार्चेत्ती ने 'पेंटहाउस' पत्रिका को एक भेटवार्ता में बताया है।

"**प्रश्न** कोल्बी कैसे आदमी है?

"**उत्तर** कोल्बी बहुत ही खतरनाक आदमी है। मेरे खयाल में उनकी मानसिकता हाइनरिख हिमलर** जैसी है वह उस तरह के आदमी है कि जो सी० आई० ए० जैसी एजेंसी नही, बल्कि यत्रणा शिविर के सचालन के लिए ज्यादा अधिक उपयुक्त है।

"**प्रश्न**. वियतनाम में जवाबी आतक कार्यक्रम उन्होंने ही ईजाद किया था न?

"**उत्तर**. हा, वे लोग दूसरे गाव में जाते और वियतकागो – अथवा सदिग्ध वियतकागो – का पता चलाते और उन्हें मार डालते अथवा पकड लाते, यत्रणा देते, उनसे पूछ-ताछ करते और उनके हमदर्दों के दिलो में दहशत बैठाते थे

"एजेसी से निकल आने के बाद मैंने वियतनाम से लौटकर आनेवाले लोगो से सुना कि हम ऐसी-ऐसी चीजे किया करते थे कि जैसे कैदी के कान में

* *The CIA File* Ed by Robert L Borosage and John Marks, Grossman Publishers, New York, 1976, pp 158-190

** हिटलरशाही ... में गेस्टापो प्रमुख।

मेज घुमा देना और जब तक वह बताने न लगे, मेज को ठोकते जाना, या उसकी खोपड़ी को फोड देना। हम उसकी जनेंद्रिय को बिजली के तारो मे जोड देते और मोटर को तब तक चलाये जाते कि जब तक वह या तो बाते न करने लगता या पागल न हो जाता। हमारे ही अनुमान मे २०,००० वियतनामी फीनिक्स कार्यक्रम मे मारे गये थे। वियतनामियों के अनुसार यह सख्या दुगुनी है। कोल्बी अपनी सफाई देते हुए यह कहते हैं कि कुछ ज्यादातिया हुई थी और यह कि इतने बड़े कार्यक्रम मे इन बातो का होना रोका नही जा सकता था और निश्चय ही हम उनकी अनदेखी नही करते थे।

"प्रश्न क्या यह जरूरी है कि कोल्बी को यह मालूम हो कि उनके आदमी हत्या कर रहे है?

"उत्तर बेशक, उनका जानना अवश्यभावी था। उन्हे पता न हो, इसकी सभावना का कोई सवाल ही नही उठता। वह उस प्रभाग के प्रधान थे। वह सारे कार्यक्रम के लिए उत्तरदायी थे – वियतनाम के इलाकाई केंद्रो के प्रमुखो को उन्हे रिपोर्ट करना होता था, उन्हे सब बतलाना होता था कि क्या हो रहा है।

"प्रश्न: क्या यह बात सी० आई० ए० के वर्तमान प्रमुख को हत्यारा बना देती है?

"उत्तर: नही, कानूनी अर्थ मे नही। बेशक नही। *आप कभी वस्तुत सिद्ध नही कर सकते कि एक समूची* सस्था अथवा उसके प्रधान ने व्यक्ति के नाते सक्रिय

हसी), और दूसरे, इसलिए कि ज़िंदा कैदी सूचना प्रदान कर सकता है जब कि मुरदा लाश कुछ भी नही दे सकती।" *

ज़िंदा कैदियो से सूचना किस तरह से उगलवायी जाती थी यह फौनिक्स कार्यक्रम के एक विशेषज्ञ विक्टर मार्चेत्ती ने 'पेटहाउस' पत्रिका को एक भेटवार्ता में बताया है।

"प्रश्न कोल्वी कैसे आदमी है?

"उत्तर: कोल्बी बहुत ही खतरनाक आदमी हैं। मेरे खयाल मे उनकी मानसिकता हाइनरिख हिमलर** जैसी है वह उस तरह के आदमी है कि जो सी० आई० ए० जैसी एजेंसी नही, बल्कि यत्रणा शिविर के सचालन के लिए ज्यादा अधिक उपयुक्त है।

"प्रश्न वियतनाम में जवाबी आतक कार्यक्रम उन्होंने ही ईजाद किया था न?

"उत्तर हा, वे लोग दूसरे गाव में जाते और वियतकागो – अथवा सदिग्ध वियतकागो – का पता चलाते और उन्हे मार डालते अथवा पकड लाते, यत्रणा देते उनसे पूछ-ताछ करते और उनके हमदर्दों के दिलों मे दहशत बैठाते थे

"एजेंसी से निकल आने के बाद मैंने वियतनाम से लौटकर आनेवाले लोगों से सुना कि हम ऐसी-ऐसी चीजें किया करते थे कि जैसे कैदी के कान में

* *The CIA File* Ed. by Robert L. Borosage and John Marks, Grossman Publishers New York 1976, pp 185-190

** हिमलर[illegible]

मेख घुमा देना और जब तक वह बताने न लगे, मेख को ठोकते जाना, या उसकी खोपड़ी को फोड़ देना। हम उसकी जनेंद्रिय को बिजली के तारों से जोड़ देते और मोटर को तब तक चलाये जाते कि जब तक वह या तो बातें न करने लगता या पागल न हो जाता। हमारे ही अनुमान से २०,००० वियतनामी फीनिक्स कार्यक्रम में मारे गये थे। वियतनामियों के अनुसार यह सख्या दुगुनी है। कोल्बी अपनी सफाई देते हुए यह कहते हैं कि कुछ ज्यादातियां हुई थी और यह कि इतने बड़े कार्यक्रम में इन बातों का होना रोका नहीं जा सकता था और निश्चय ही हम उनकी अनदेखी नही करते थे।

"**प्रश्न** क्या यह जरूरी है कि कोल्बी को यह मालूम हो कि उनके आदमी हत्या कर रहे है?

"**उत्तर** बेशक, उनका जानना अवश्यभावी था। उन्हे पता न हो, इसकी सभावना का कोई सवाल ही नही उठता। वह उस प्रभाग के प्रधान थे। वह सारे कार्यक्रम के लिए उत्तरदायी थे – वियतनाम के इलाकाई केंद्रों के प्रमुखों को उन्हे रिपोर्ट करना होता था, उन्हे सब बतलाना होता था कि क्या हो रहा है।

"**प्रश्न**. क्या यह बात सी० आई० ए० के वर्तमान प्रमुख को हत्यारा बना देती है?

"**उत्तर**. नही, कानूनी अर्थ मे नही। बेशक नही। आप कभी वस्तुत सिद्ध नही कर सकते कि एक समूची सस्था अथवा उसके प्रधान ने व्यक्ति के नाते सक्रिय

रखी) और दूसरा इसलिए कि जिंदा कैदी सूचना प्रदान कर सकता है जब कि मुर्दा लाश कुछ नहीं दे सकती। *

जिंदा कैदियों से सूचना किस तरह से उगलवाई जाती थी यह फीनिक्स कार्यक्रम के एक विशेषज्ञ विक्टर मार्चेती ने 'पेंटहाउस' पत्रिका को एक भेंटवार्ता में बताया है।

प्रश्न कोल्बी कैसे आदमी हैं?

'उत्तर कोल्बी बहुत ही खतरनाक आदमी हैं मेरे ख्याल में उनकी मानसिकता हाइनरिख हिमलर** जैसी है वह उस तरह के आदमी हैं कि जो सी० आई० ए० जैसी एजेंसी नहीं बल्कि यंत्रणा शिवि के संचालन के लिए ज्यादा अधिक उपयुक्त है।

"प्रश्न. वियतनाम में जवाबी आतंक कार्यक्रम उन्होंने ही ईजाद किया था न?

"उत्तर. हां, वे लोग दूसरे गांव में जाते और वियतकांगों – अथवा संदिग्ध वियतकांगों – का पता चलाते और उन्हें मार डालते अथवा पकड़ लाते, यंत्रणा देते, उनसे पूछ-ताछ करते और उनके हमदर्दों के दिलों में दहशत बैठाते थे

"एजेंसी से निकल आने के बाद मैंने वियतनाम से लौटकर आनेवाले लोगों से सुना कि हम ऐसी-ऐसी चीजें किया करते थे कि जैसे कैदी के कान में

---

* *The CIA File* Ed by Robert L Borosage and John Marks, Grossman Publishers, New York, 1976, pp 188-190

** हिटलरशाही जर्मनी में गेस्टापो प्रमुख। – सं०

मेख घुमा देना और जब तक वह बताने न लगे, मेख को ठोकते जाना, या उसकी खोपड़ी को फोड देना। हम उसकी जनेंद्रिय को बिजली के तारो मे जोड देते और मोटर को तब तक चलाये जाते कि जब तक वह या तो बाते न करने लगता या पागल न हो जाता। हमारे ही अनुमान से २०,००० वियतनामी फीनिक्स कार्यक्रम मे मारे गये थे। वियतनामियो के अनुसार यह सख्या दुगुनी है। कोल्बी अपनी सफाई देते हुए यह कहते हैं कि कुछ ज्यादानिया हुई थी और यह कि इतने बडे कार्यक्रम मे इन बातो का होना रोका नही जा सकता था और निश्चय ही हम उनकी अनदेखी नही करते थे।

"प्रश्न क्या यह जरूरी है कि कोल्बी को यह मालूम हो कि उनके आदमी हत्या कर रहे हैं?

"उत्तर: बेशक, उनका जानना अवश्यभावी था। उन्हें पता न हो, इसकी सभावना का कोई सवाल ही नही उठता। वह उस प्रभाग के प्रधान थे। वह सारे कार्यक्रम के लिए उत्तरदायी थे – वियतनाम के इलाकाई केंद्रों के प्रमुखो को उन्हे रिपोर्ट करना होता था, उन्हे सब बतलाना होता था कि क्या हो रहा है।

"प्रश्न: क्या यह बात सी० आई० ए० के वर्तमान प्रमुख को हत्यारा बना देती है?

"उत्तर: नही, कानूनी अर्थ मे नही। बेशक नही। आप कभी वस्तुत सिद्ध नही कर सकते कि एक समूची सस्था अथवा उसके प्रधान ने व्यक्ति के नाते सक्रिय

रूप में कोई अपराध किया है। वे हमेशा इतने चालाक होते हैं कि औरों के जरिए काम करें। आम तौर प काम जितना ही ज्यादा गंदा होता है उसके उतने ही ज्यादा हाथों में बटने की सभावना होती है। अर्द्ध-सैनिक सक्रियाओं में आपको आम तौर पर एजेंसीवाले सबमशीनगनें लिये हवाई जहाजों से कूदकर निकलते नहीं दिखायी देंगे। आम तौर पर यह काम करनेवाला हमेशा कोई भूतपूर्व मैरीन सैनिक कोई मुहिमबाज या कोई भाड़े का सिपाही ही होगा, जो किसी दूसरी सक्रिया के बाद बचा रह गया था इसलिए हत्या जैसी चीजों इन बेहद गंदी चीजों के साथ बात यह है कि यह साबित करना लगभग असभव है कि उसे एजेंसी ने किया है।

"प्रश्न क्या विलियम कोल्बी फीनिक्स कार्यक्रम के अतर्गत हुई हत्याओं के लिए अपने नैतिक उत्तरदायित्व का अनुभव करेंगे?

"उत्तर नहीं, बेशक नहीं। फीनिक्स कार्यक्रम के प्रति उनका दृष्टिकोण लगभग वही होगा, जो, मिसाल के लिए, उस जनरल का होगा, जो हर दिन बी-५२ बमवर्षकों को भेजकर गाव के बाद गाव को नेस्तनाबूद कर डालता है और सैकड़ों लोगों को मौत के घाट उतार देता है। इस तरह का आदमी सब नियम-धरम वगैरह बरतेगा। वह अपने बच्चों को झूठ न बोलने या धोखा न देने की शिक्षा देगा। अगर आप पूछें, 'आप वैसा काम कैसे कर पाते हैं?' तो वह कहेगा, 'मैं आदेशों का पालन कर रहा हू।'

गुप्त मानसिकतावाले लोग अपने साथ ऐसा खेल कर सकते है।"*

नही इस निष्कर्ष से सहमत नही हुआ जा सकता। कोल्बी जैसे लोग भली भांति जानते है कि वे क्या कर रहे है वे अपनी करनियों से मजा तक लेते है, लेकिन रंगे हाथों पकडे जाने पर वे अपने को बचाने के लिए गिरगिटों की तरह रंग बदल देते है और यह न समझने का दिखावा करते है कि सारी बात किस चीज के बारे मे है।

परिष्कृत यत्रणा और सामूहिक हत्या तो वियतनाम मे सी० आई० ए० की आपराधिक कार्रवाइयो का एक ही पहलू है। आज इस बात का पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध है कि असल मे सेंट्रल इटैलीजेंस एजेंसी ही संयुक्त राज्य अमरीका की वियतनामी मुहिमबाजी की जड़ मे थी – उसने जानबूझकर ऐसी स्थिति पैदा की थी कि जिसमे कांग्रेस को मजबूरन वियतनाम मे हस्तक्षेप करने का निर्णय लेना पडा।

उस समय तक सी० आई० ए० हिंदचीन मे प्रच्छन्न सक्रियाओ का पर्याप्त अनुभव अर्जित कर चुकी थी। पचास के दशक मे सबसे विश्रुत सी० आई० ए० कर्मी कर्नल एडवर्ड लैंसडेल थे वही व्यक्ति, जिनके बारे मे ग्रैहम ग्रीन ने अपना उपन्यास 'शांत अमरीकी' ('दि क्वाइट अमेरिकन') लिखा है।

लैंसडेल के जासूसी कैरियर का आरंभ फिलीपीन

* *Penthouse*, January, 1975, p. 91.

रक्त पीने के लिए पिशाच ने किया हो, उसके बदन को उलटा लटकाकर सारा खून टपका देते और लाश को फिर उसी पगडंडी पर लाकर रख देते। सभी फिलीपीनियों जैसे ही अंधविश्वासी विद्रोही उस इलाके को छोड़कर भाग जाते।"*

१९५३ तक लैंसडेल फिलीपीन में अपने मिशन को पूरा कर चुके थे। रमोन मैगसैसै देश के राष्ट्रपति बन गये थे और कर्नल ससम्मान वाशिंगटन लौट आये। मगर जल्दी ही उन्हें एक और गंभीर कार्यभार सौंपा गया। १९५४ में उन्होंने साइगोन के लिए प्रस्थान किया, जहां उन्हें दक्षिण वीएतनाम के तानाशाह न्गो दीन्ह दीएम को वहां का राष्ट्रपति "चुनवाना" था। दीएम शासन के समर्थन के लिए पहली सैनिक इकाइयों का गठन शुरू करके लैंसडेल अपने द्वारा प्रशिक्षित फिलीपीनियों को नयी सैनिक इकाइयों को प्रशिक्षण देने के लिए साइगोन ले आये। कर्नल ने डटकर मेहनत की और १९५५ में न्गो दीन्ह दीएम राष्ट्रपति बन गये।

साठ के दशक के आरंभ में वाशिंगटन महसूस करने लगा कि दीएम पर अपना दांव लगाकर उसने गलती की है। फूहड़ तानाशाह पूरी तरह से समझता नहीं था कि उसके समुद्रपारीय संरक्षक चाहते क्या हैं। "पैंटागॉन दस्तावेजों से इसके पर्याप्त सूचक हैं," ग्वानेरीआ मार्दोनेस कहते हैं, "कि दीएम वियतनाम

---

* Marchetti and J. Marks, *op. cit.* pp. 27-28

द्वारा समर्थन से हुआ उसी उद्देश्य से टंकन के अ
से फिलिपीन के रक्षा मंत्री रमोन मैगसैसै के सलाहकार के
नाते भेजा गया था। अमरीकी सरकार की दु
निधियों के मामले दलालों के बूते पर लैंसडेल अ
काम में लग गये और जल्दी ही उन्होंने छापामारों
से लड़ने के लिए एक छोटी सी सुप्रशिक्षित सेना खड़ी
कर दी। इसके अलावा उन्होंने फिलिपीनी नागरिक
कार्य कार्यालय की भी स्थापना की जिसका वे
विद्रोहियों के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक युद्ध के केंद्र के रू
में उपयोग करने का इरादा रखते थे। यह मनोवैज्ञानिक
युद्ध कैसा था इसके बारे में लैंसडेल ने १९७२ में
स्टैनले कार्नोव नामक पत्रकार को स्वेच्छया बताया
था

'एक मनोपीड़िक सक्रिया में फिलिपीनी देहातो में अंधविश्वासजन्य भय – असुआग नाम के पौराणिक पिशाच के भय – का उपयोग किया गया। उस इलाके में एक मनोयुद्ध टुकडी आती और इस आशय की अफवाहे फैला देती कि जिस जगह कम्युनिस्टो का अड्डा है, वहा एक असुआग रहता है। अफवाहो को हुक* समर्थको मे खूब फैल जाने देने के बाद मनोयुद्ध टुकडी बागियो के लिए घात लगाकर बैठ जाती। जब हुक गश्ती दल उधर से गुजरता, तो घात मे बैठे लोग उनमे से आखिरी आदमी को दबोच लेते, उसकी गरदन मे दो छेद कर देते, जैसे कि उन्हे

---

*फिलिपीनी छापामार। –स०

स अमरीकी नीति निर्धारकों के सामने में आई ? गया था।* फलस्वरूप दीएम को सी० आई० ए० से घनिष्ठ सबद्ध जनरलों के एक गुट ने हत्या कर दी। इसके बाद स एक अमरीकी गुप्तचर्या अधिकारी, कर्नल फ्लैचर प्राउटी ने जो बताया है, वह यह है

दीएम बधुओं की हत्या अक्तूबर, १९६३ में की गयी थी। १९७१ की गरमियों में चार्ल्स कोल्सन और ई० हॉवर्ड हंट की दिलचस्पी और बातों के अलावा इस बात में भी थी कि विदेश विभाग के आधिकारिक संदेशों को गढ़ने और बदलने के लिए ऐसा क्या किया जा सकता है जिससे यह लगे कि राष्ट्रपति जॉन एफ० कैनेडी इन हत्याओं के साथ घनिष्ठत और प्रत्यक्षत सबद्ध रहे थे। इस कुत्सित करतब 'परियोजना – अर्थात इन दस्तावेजों को इस तरह से गढ़ना कि जिससे वे कैनेडी को उलझाये – का समय दिलचस्प है। अभी कुछ ही महीने पहले 'न्यूयॉर्क टाइम्स' ने 'पैंटागॉन दस्तावेजें' प्रकाशित की थी। इन दस्तावेजों के 'टाइम्स' में प्रकाशित रूप में, जिसे पैंटागॉन से ही आया बताया जाता था, १९६३ की गरमियों के उत्तरार्ध में, दीएम बधुओं के मारे जाने के ठीक पहले, जो कुछ हुआ था, उसका एक विस्तृत और उलझा हुआ विवरण था। इन दस्तावेजों को ध्यान से पढ़ने-वाले किसी भी व्यक्ति को आसानी से पता चल जाता कि सी० आई० ए० इस योजना से घनिष्ठत सबद्ध

* ग्वाल्तेरीआ मार्तेनेस, पूर्वोक्त रचना, पृ० ६३।

तरह से हत्या की साजिश का बुनियादी काम शुरू हो जाता है।

"अफवाहें फैलती हैं कि सयुक्त राज्य अमरीका दीएम परिवार का समर्थन करना बद कर 'सकता' है। फलस्वरूप हर गुट तिकड़मों में लग जाता है। दीएमो की खुफिया पुलिस, उनके प्रवर रक्षा दल और उनके भीतरी हलकों मे सभी महसूस करने लगते हैं कि उनके दिन पूरे हो गये हैं और उनके लिए आगे की योजनाएं बनाना और जल्दी से जल्दी ही कुछ करना बेहतर रहेगा। उन लोगों ने जुर्म किये थे। उन्होंने हत्याएं की थी। उन्होंने करोड़ों डॉलर चुराये थे। उन्होंने वियतनाम में कितनों ही को बरबाद किया था। सयुक्त राज्य अमरीका, सी० आई० ए० और दीएमो के समर्थन के बिना उनका अत निश्चित था।

"धीरे-धीरे एक योजना रूप लेने लगी। मदाम न्हू ने अचानक महसूस किया कि यूरोप और सयुक्त राज्य अमरीका की लबी यात्रा के लिए यह वक्त अच्छा है। यह पहला चरण था। अगला कदम मदाम न्हू के पीछे-पीछे दीएम बधुओं को देश के बाहर निकालना होगा। उनके लिए यूरोप मे एक महत्वपूर्ण बैठक मे भाग लेने की योजनाएं तैयार की गयी। उन्हें औपचारिक निमत्रण भेजे गये और उन्हें यूरोप ले जाने के लिए एक विशेष वायुमान की व्यवस्था की गयी।

"उनके प्रस्थान की प्रत्याशित तिथि के निकट आने के साथ सी० आई० ए० ने अपने एजेंटों को

की कोई टिप्पणी या वर्गीकरण संख्या नहीं थी और उन्हें एक 'सूचनीय' व्यक्ति से दूसरे 'सूचनीय' व्यक्ति को हाथ से पहुंचाया जाता था। इन ज्ञापनों में ऐसी-ऐसी बातें खुलकर कही गयी थीं कि 'दीएम से हम भर पाये' और 'दीएम परिवार से पीछा छुड़ाने का कोई रास्ता निकाला जाना चाहिए'।

"इन ज्ञापनों के परिणामस्वरूप वाशिंगटन में सी० आई० ए० कार्यालय से इस दृष्टि से साइगोन से जरूरी पूछ-ताछों का सिलसिला चला कि दीएम के विरोध का जायजा लिया जाये, यह जाना जाये कि उसकी शक्ति कितनी है और संभाव्य नेताओं में से कोई बेहतर रहेगा या नहीं।

सी० आई० ए० में, जिसने दीएम को सत्तारूढ़ किया था और एक दशक से ज्यादा तक दीएम के लिए 'देश के पिता' की छवि बनाने की कोशिश की थी, इसके बारे में जबरदस्त मतभेद था कि उसके साथ क्या किया जाये। एक पक्ष उन्हें बनाये रखना और उनकी मांगों को समर्थन देना चाहता था। दूसरा पक्ष इसके लिए तैयार था कि उनसे पीछा छुड़ाया जाये और किसी और के साथ फिर शुरुआत की जाये। निष्कर्षीयों का यह मानना था कि जनरल डुओंग वान मीन्ह दीएम परिवार के बाद सबसे अच्छा विकल्प रहेगा। और लोग अपेक्षाकृत शांत और संभवतः अधिक विश्वसनीय [illegible] के पक्ष में थे। वाशिंगटन में इन दो [illegible] को [illegible] दी जाती थी। साइगोन में भी कई लोग उनके पक्ष में थे। [illegible]

ौर उस पर अपनी मरज़ी थोपने के हर प्रयास की
सफलता निश्चित है।

फिर भी यह सोचना गलत होगा कि वियतनाम
ं संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा चलाये जानेवाले
गर्हित युद्ध की टाय-टाय फिस ने दक्षिण-पूर्वी
शिया में सी० आई० ए० की आपराधिक कार्रवाइयों
ा अंत कर दिया। हिंदचीन में संयुक्त राज्य अमरीका
की पराजय ने दक्षिण-पूर्वी एशिया के कितने ही देशों
में एक ज़बरदस्त अमरीकाविरोधी लहर पैदा की।
इन देशों, और विशेषकर थाइलैंड, में जनवादी हलकों
ने प्रगतिशील रूपांतरणों की ओर इस इलाके में
अमरीकी आर्थिक, सैनिक तथा राजनीतिक उपस्थिति
पर प्रतिबंधों की मांग की।

१९७३ के शिशिर में सत्ता में आने के साथ
थाइलैंड की बूर्जुआ-उदार सरकार ने कई आम जनवादी
सुधार किये, जो देश में सामाजिक-राजनीतिक वाता-
वरण को सुधारने में सहायक हुए और उसने थाइलैंड
का इस क्षेत्र में सैनिक कार्रवाइयां शुरू करने के स्थल
के रूप में उपयोग करने के संयुक्त राज्य अमरीका के
अवसरों को सीमित किया।

१९७४ में संयुक्त राज्य अमरीका और थाइलैंड
के बीच देश में अमरीकी सैनिकों की संख्या में १०,०००
की कमी करने का समझौता हुआ। इसीके साथ-साथ
थाइ सरकार ने देश के हवाई अड्डों से अमरीकी हवाई
जहाज़ों की कार्रवाइयों पर प्रतिबंध लगाये। इसके
बाद थाइलैंड के प्रगतिशील जनमत ने देश से सभी

सभाव्य नये नेताओ से अधिकाधिक घनिष्ठ सपर्क स्थापित करने का आदेश दिया। इस स्थिति ने दीएम के प्रवर रक्षा दल के विघटन को और भी त्वरित किया। फिर, हवाई अड्डे तक चले जाने के बाद, दीएम बधु किन्ही कारणो से, जिन्हे कभी स्पष्ट नहीं किया गया है, अचानक लौटकर अपनी कार मे बैठ गये और महल की तरफ वापस रवाना हो गये। उन्होने खेल के नियमो को नही समझा होगा।

"वे ऐसे महल मे लौटकर आये, जो भुतहा शहर की तरह खाली था। कुदरती तौर पर उनके रक्षा दल के सभी लोग अपनी जान बचाने के लिए भाग गये थे कुछ मिनटो के लिए दीएम बधु अपने कक्षो मे जाकर कुरसियो पर बैठे। मगर आखिर उन्होने महसूस कर लिया कि क्या होनेवाला है और एक भूमिगत सुरग की तरफ चले। कुछ ही समय के भीतर दोनो मर चुके थे।"*

वाशिगटन ने अपने एक कठपुतले को इस तरह से राजनीतिक रगमच से अलग कर दिया। दीएम बधुओ को बुहार फेकने के बाद सी० आई० ए० ने ह्वाइट हाउस के सभी आदेशो का बिना चू-चपड किये पालन करने को तैयार नये, अधिक उपयुक्त उम्मीदवारो को तलाश करना शुरू किया। लैग्ली के सर्वज्ञाता विशेषज्ञो को अभी यह नही मालूम था कि इसमे निर्णायक मत वियतनामी जनता का होगा, कि इस राष्ट्र को कुचलने

---

* *Uncloaking the CIA* pp 201-205

त्रों के विरुद्ध भड़काने की कार्रवाइयां की और
ाइ कृषक संघ के कार्यकर्ताओं की हत्याएं की।

दक्षिणपंथियों द्वारा हत्याओं की संख्या अप्रैल,
१९७६ में संसदीय चुनावों के समय विशेषकर बहुत
अधिक हो गयी। दक्षिणपंथी थाइ राष्ट्रीय पार्टी के
नेता, रक्षा मंत्री प्रमाण आदिरक्षण ने खुले आम
"वामपंथियों को मारने के अधिकार" का नारा
दिया।

दक्षिणपंथियों के खूनी आतंक ने चुनावों के परिणाम
पहले ही तय कर दिये। उदार पार्टियों की गंभीर
पराजय हुई और दक्षिणपंथी पार्टियां विजयी हुईं।
इन घटनाओं का एक महत्वपूर्ण परिणाम यह भी
निकला कि कई उदार बुद्धिजीवियों और प्रगतिशीलों
को जिन्होंने आतंक की इस लहर को सैनिक सत्ता-
परिवर्तन का पूर्वसूचक समझा, भूमिगत हो जाना
पड़ा।

थाइलैंड में तैनात अमरीकी सैनिकों की संख्या
में कमी ने अमरीकी सेना और नवबल (नवपान)
पार्टी और अरुण गौर के संश्रय के आवरण
में क्रियाशील थाइ सेना के दक्षिणपंथियों के
बीच व्यक्तिगत और कार्यगत संबंधों को कमज़ोर
करने के लिए कुछ भी नहीं किया। संयुक्त राज्य
अमरीका का दक्षिणपंथी अधिकारियों के साथ घनिष्ठ
सहयोग बना रहा।

दिसंबर, १९६५ में थाइलैंड में अमरीकी राजदूत
ग्रैहम एंडरसन मार्टिन के आग्रह पर कम्युनिस्टविरोध

अमरीकी सेनाओं के सदा-सदा के लिए हटाये जाने की माग को लेकर आदोलन छेड दिया। मार्च, १९७५ मे नयी थाई ससद मे समाजवादी पार्टियो के सयुक्त ब्लॉक ने कई प्रस्ताव पेश किये, जिनमे कम्युनिस्ट पार्टी को वैधता प्रदान करने की और मुख्य उद्योगो का राष्ट्रीयकरण करने की अपील भी शामिल थी।

धीरे-धीरे थाइलैड मे अधिकाधिक लोग अमरीकी राजनीतिक विस्तारवाद के लिए उत्तरदायी अमरीकी अभिकरणो के देश से निकाले जाने के आदोलन मे अधिकाधिक सक्रिय होते जा रहे थे। अनेक जनवादी सगठनो और विशेषकर छात्र सगठनो ने थाइलैड मे अमरीकी शाति कोर की मौजूदगी का यह आरोप लगाते हुए विरोध किया कि उसके सदस्यो का सी० आई० ए० के साथ घनिष्ठ सबध है सामान्य जनवादी और अमरीकाविरोधी आदोलन के विराट पैमाने ने थाइलैड के दक्षिणपथी हलको को बेहद आतकित कर दिया। अक्तूबर, १९७६ मे सेना मे प्रतिक्रियावादियो और बूर्जुआजी के अमरीकासमर्थक अशो की सहायता से दक्षिणपथियो ने सरकार का तख्ता उलट दिया और देश मे सैनिक अधिनायकत्व स्थापित कर दिया।

१९७६ का साल, जब थाइलैड मे प्रतिक्रियावादियो ने अपना हमला शुरू किया, देश के इतिहास मे एक नामक मोड का द्योतक है। चरम दक्षिणपथी अरुण और नामक सगठन प्रतिक्रिया के एक दमनम उपकरण के रूप मे सामने आया। इसके सदस्यो ने प्रगतिशील

के भीतर काम करती थी, ये टोलियां भी राष्ट्रीय तथा प्रांतीय स्तरों पर संयुक्त अमरीकी-थाइ समितियों के निदेशन में काम करती थी। प्रशिक्षण शिविरों, भरती केंद्रों और शस्त्र तथा सामग्री भंडारों की स्थितियों के चयन और एजेंटों के पारिश्रमिक के बारे में इन समितियों में समझौता था। इस कार्यक्रम का खर्च भी सी० आई० निधियों में ही आता था।

संयुक्त राज्य अमरीका यह दिखावा करता था कि जैसे अरुण गौरों और उनके नवबल सहयोगियों द्वारा की जानेवाली आतंक की कार्रवाइयों और हत्याओं के बारे में उसे कुछ मालूम नहीं है और उनके साथ उसका सहयोग बदस्तूर बना रहा। आतंकवादी संगठनों की कार्रवाइयों के बारे में संयुक्त राज्य अमरीका के रवैये के बारे में पूछे जाने पर अमरीकी दूतावास के एक उच्च अधिकारी ने 'काउंटरस्पाई' पत्रिका को बतलाया कि दूतावास ने यह जतलाने का कोई *प्रयास नहीं किया है कि वह दक्षिणपक्षीय आतंक* के विरुद्ध है। "मैं तो यह हमारा काम हरगिज नहीं समझता कि थाइयों के पास जाऊं और कहूं कि यह मत करो," उसने कहा।*

जब उनके लिए हस्तक्षेप करना लाभदायी या सुविधाजनक नहीं होता, तो संयुक्त राज्य अमरीका अनिवार्यतः "पूर्ण मत्स्यता" की स्थिति में चिपक जाता है। अमरीकी दूतावास के उसी अधिकारी ने दक्षिणपक्षीय

* *Counterspy*, Vol 3, No 2, 1976 p 51

आतंक-अभियान की गंभीरता को घटाने की कोशि करते हुए कहा, "हिंसा तो दोनों ही पक्षों की तर से हो रही थी। मुझे तो यह कभी भी स्पष्ट नह हो पाया कि कौन क्या कर रहा है।" *

यह उल्लेखनीय है कि अमरीकी दूतावास के कुछ अधिकारी नवबल पार्टी और अरुण गौर से अपनी हमदर्दी को बिलकुल भी नहीं छिपाते थे और उनका खुला समर्थन तक करते थे। दिसंबर, १९७५ में एक ऐसी ही घटना हुई। एक युवा सैनिक कप्तान से, जो अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधि सदन की लुप्त व्यक्ति विषयक प्रवर समिति की बैंगकाक यात्रा के समय सुरक्षा अधिकारी की हैसियत से काम कर रहा था, यों ही अरुण गौरों के बारे में पूछा गया, तो उसने अप्रच्छन्न संतोष के साथ जवाब दिया कि अरुण गौर नेताओं ने उसे बतलाया है कि २० मार्च (अमरीकी सेनाओं की वापसी की अंतिम) के पहले-पहले १०० थाइ कम्युनिस्टों की हत्या देने का इरादा रखते हैं।

सत्ता-परिवर्तन के कुछ ही सप्ताह पहले सेनी सरकार के एक उच्च अधिकारी ने एक विदेशी को बतलाया कि नवबल और अरुण , दोनों ही को सी० आई० ए० से पैसा मिल है। यद्यपि उसने इसका कोई ब्यौरा नहीं दिया पैसा किस तरह से दिया जाता है, पर अगस्त,

१९७५ में यह बताया गया कि आनरिक सुरक्षा कार्रवाई कमान के पास कोई ५० करोड़ बत (लगभग २५ करोड़ डॉलर) का गुप्त वार्षिक बजट है।* सी० आई० ए० इस कमान को अग्से से पैसा देती आयी थी और यह बिलकुल संभव है कि सी० आई० ए० के पैसे का दक्षिणपथी अर्द्ध-सैनिक गुटों की स्थापना मे उपयोग किया गया था।

जब आनरिक सुरक्षा सक्रिया कमान में एक विभागाध्यक्ष कर्नल सुदमाई हासदिन से सी० आई० ए० समर्थन के बारे में पूछा गया, तो उसने जवाब दिया, "मुझे कभी-कभी अचरज होता है कि वे हमारा समर्थन क्यों नहीं करते, क्योंकि हम कुछ ऐसी बातें करते हैं जिनसे उन्हें खुश होना चाहिए।"

सी० आई० ए० बेशक खुश थी, तभी तो वह कर्नल को मुक्तहस्त पैसा देती थी। जिस अकेली बात पर अचरज हो सकता है, वह है इस भाड़े के टट्टू की ढीठता, जो भारी रकम जेब में डाल लेने के बाद भी भीखना रहता है।

दक्षिण-पूर्वी एशिया के जनगण के विरुद्ध सी० आई० ए० का प्रच्छन्न युद्ध जारी है। कौन जाने, कल लैंग्ली के कौनसे नये अपराधों का परदाफाश होगा?

---

* *Ibid*, p 52

आतंक-अभियान की गंभीरता को घटाने की कोशि करते हुए कहा, "हिंसा तो दोनों ही पक्षों की तरफ से हो रही थी। मुझे तो यह कभी भी स्पष्ट नहीं हो पाया कि कौन क्या कर रहा है।" *

यह उल्लेखनीय है कि अमरीकी दूतावास के कुछ अधिकारी नवबल पार्टी और अरुण गौर से अपनी हमदर्दी को बिलकुल भी नहीं छिपाते थे और उनका खुला समर्थन तक करते थे। दिसंबर, १९७५ में एक ऐसी ही घटना हुई। एक युवा सैनिक कप्तान से, जो अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधि सदन की लुप्त व्यक्ति विषयक प्रवर समिति की बैंगकाक यात्रा के समय सुरक्षा अधिकारी की हैसियत से काम कर रहा था, यों ही अरुण गौरों के बारे में पूछा गया, तो उसने अप्रच्छन्न संतोष के साथ जवाब दिया कि अरुण गौर नेताओं ने उसे बतलाया है कि वे २० मार्च (अमरीकी सेनाओं की वापसी की अन्तिम तिथि) के पहले-पहले १०० थाइ कम्युनिस्टों की हत्या कर देने का इरादा रखते हैं।

सत्ता-परिवर्तन के कुछ ही सप्ताह पहले सेनी प्रमोज सरकार के एक उच्च अधिकारी ने एक विदेशी अतिथि को बतलाया कि नवबल और अरुण गौर, दोनों ही को सी० आई० ए० से पैसा मिल रहा है। यद्यपि उसने इसका कोई ब्यौरा नहीं दिया कि यह पैसा किस तरह से दिया जाता है, पर अगस्त,

---

* Ibid

वाशिंगटन-रचित पट-कथा के अनुसार

चीली के घटनाक्रम ने लातीनी अमरीका को इतने में अपना निशाना बनाया हुआ है। लातीनी अमरीकी राष्ट्रों के विरुद्ध अमरीकी गुप्तचर सेवाओं के अपराधों का कारण यह है कि अमरीकी एकाधिकारी पूंजी की इस क्षेत्र में बहुत समय से विशेष दिलचस्पी रही है जो उसके प्राकृतिक साधनों और जनशक्ति के निर्मम शोषण से अपार मुनाफे बटोरती आती है। लातीनी अमरीका को अपने घर के पिछवाड़े जैसा ही समझते हुए अमरीकी इजारे उसके समस्त राष्ट्रीय उत्पाद के २० प्रतिशत और उसकी निर्यात से प्राप्त आय के लगभग ३० प्रतिशत को डकार जाते हैं। लातीनी अमरीका में प्रत्यक्ष अमरीकी पूंजी निवेश साल-दर-साल बढ़ता जा रहा है। १९७३ में वह १६.४ अरब डॉलर कूता जाता था, मगर १९७५ में वह २२.२ अरब डॉलर की कल्पनातीत राशि तक पहुंच गया ... ना ही

जा रहा ... ने में

के

एवा-

हो गयी थी। मुख्य शत्रुओं को इंगित कर दिया गया था – साम्राज्यवाद, इजारेदारी और भूस्वामीवर्गीय अल्पतंत्र। यही हमले की मुख्य दिशा थी। मजदूर वर्ग ने एक सामाजिक-राजनीतिक मोरचा – जन-एकता महमेल – बना लिया। इस अनुकूल स्थिति में जन-आंदोलन ने सत्ता के लिए भूतपूर्व शासक वर्गों से विकट मुठभेड़ के वातावरण में चिलीआई समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन की प्रक्रिया का समारंभ किया।"*

कहने की आवश्यकता नहीं कि जन-एकता ब्लॉक की विजय और उसके बाद चिली में शुरू होनेवाले प्रगतिशील रूपांतरण उन अमरीकी राजनीतिक हलकों के लिए एक आघात थे, जो चिली में अपने अनुकूल व्यवस्था को बनाये रखने के लिए वर्षों से काम करते आये थे। ह्वाइट हाउस ने १९५८ में ही राष्ट्रपति-निर्वाचन के समय दक्षिणपक्ष की सहायता के लिए खासी बड़ी रकमें विनियुक्त करना शुरू कर दिया था। १९६२ से १९७३ तक ४०-समिति ने चिली में संयुक्त राज्य अमरीका के लिए उपयुक्त राजनीतिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए कम से कम कुल ११० लाख डॉलर की मंजूरी दी थी।** अन्य स्रोतों के अनुसार यह रकम २८० लाख डॉलर थी।*** १९६४ में सान्तीआगो द चिली में इसी उद्देश्य से सी० आई० ए० के एक प्रादेशिक केंद्र की स्थापना की गयी थी।

---

* *World Marxist Review*, 1974, July No 7 p 27

** Gvalteria Mardonez, *The CIA Without a Mask* p 139

राज्य अमरीका के भूतपूर्व वित्त मंत्री —म० । पिनोशेत को चिलीआई जनता के लिए 'आर्थि स्वतंत्रता' लाने के वास्ते बधाई दी। यह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की विशेषकर सुविधाजनक संकल्पन है, जिसमें 'आर्थिक स्वतंत्रता' और राजनीति आतंक एक-दूसरे को स्पर्श किये बिना सहअस्तित्वमा है। तर्कानुसार तो यह आशा की जानी चाहि कि जो लोग असीमित 'आर्थिक स्वतंत्रता' लाते हैं, उन्हें तब उत्तरदायी माना जायेगा कि जब इ नीति को लादने के साथ-साथ अनिवार्यतः व्याप दमन, भूख, बेरोजगारी और स्थायी निर्मम पुलिस रा का भी आगमन होता है।"*

४ सितंबर, १९७० को राष्ट्रपति निर्वाचन i जन-एकता ब्लॉक के उम्मीदवार सल्वादोर अल्ये विजयी हुए थे। वामपक्षी पार्टियों के सहमेल की विज ने सिद्ध कर दिया था कि राजनीतिक सत्ता को लोक तांत्रिक साधनों से सफलतापूर्वक प्राप्त किया ज सकता है।

"१९७० में चिलीआई जनता की विजय," चिली आई कम्युनिस्टों ने इंगित किया, "सामाजिक संघ के सभी मोरचों पर प्रखर जन-संग्रामों के दौर के परिणति थी। और यह विजय इस कारण संभव हु पायी कि जनता चिलीआई क्रांति के स्वरूप का सही निर्धारण करनेवाली नीति के आधार पर गोलबंद

* Counter

१५ सितंबर, १९७० को राष्ट्रपति निक्सन, उनके राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हेनरी किसिंजर, सी० आई० ए० निदेशक रिचर्ड हैल्म्स और एटोर्नी जनरल (महान्यायवादी) जॉन मिचेल की व्हाइट हाउस में बैठक हुई। सी० आई० ए० प्रमुख ने बातचीत और राष्ट्रपति के निर्देशों का संक्षिप्त विवरण रखा।

"हो सकता है कि हमारे पास दस में एक ही मौका हो, मगर हमें चिली को बचाना है। इस मामले में कार्रवाई पर खर्च का कोई महत्व नहीं। जोखिमों की परवाह मत कीजिये। दूतावास को अलग रहना चाहिए। १०० लाख डॉलर नकद विनियुक्त कर दीजिये और ज़रूरत हो, तो ज्यादा। दिन-रात काम कीजिये। अच्छे से अच्छे एजेंटों को लगाइये। सक्रिय योजना को जल्दी से जल्दी तैयार कीजिये। रणनीति तैयार करने के लिए आपके पास ४८ घंटे हैं।"*

जन-सत्ता सरकार के विरुद्ध संयुक्त राज्य अमरीका के गुप्त युद्ध को, नवंबर, १९७० से सितंबर, १९७३ तक चलनेवाले इस युद्ध को, दो चरणों में विभाजित किया जा सकता है। वाशिंगटन के रणनीतिक लक्ष्य – अलेंदे सरकार का तख्ता उलटना – में कोई परिवर्तन नहीं आया परिवर्तन सिर्फ अमरीकी गुप्तचर सेवाओं की कार्यनीति में ही आया

---

* सी० आई० ए० दस्तावेज -

कमेटी से)।

राष्ट्रपति अल्येंदे ने एक समय अपने देश को "मामोश वियतनाम" की संज्ञा दी थी, और इसका भी कारण था। जन-एकता सरकार के खिलाफ अपने जिहाद मे वाशिंगटन ने सी० आई० ए० द्वारा सैन्य गुप्तचर्या के घनिष्ठ सहयोग मे सचालित फीनिक्स कार्यक्रम मे अर्जित अनुभव का पूरा-पूरा उपयोग किया था।

चिलीआई प्रतिक्रियावादियो ने जन-एकता ब्लॉक के खिलाफ अपना पहला हमला अक्तूबर, १९७० मे किया। उन्होंने चिलीआई सेना के प्रधान सेनापति, जनरल रेने श्नाइडर, की हत्या का संगठन किया, जो कानूनी तौर पर निर्वाचित राष्ट्रपति सल्वादोर अल्येंदे का समर्थन करते थे। श्नाइडर के विरुद्ध षड्यंत्र सी० आई० ए० की प्रत्यक्ष सहभागिता मे रचा गया था। १९ अक्तूबर को सान्तीआगो द चिली मे सी० आई० ए० केंद्र से घनिष्ठत सबद्ध सैनिक अफसरो के एक गुट ने जनरल श्नाइडर का अपहरण करने का प्रयास किया। प्रयास असफल रहा, अगले दिन उन्होंने फिर प्रयास किया और वह फिर असफल रहा। २२ अक्तूबर, १९७० की सुबह सी० आई० ए० कर्मियो ने षड्यंत्रकारियो को मशीनगनें और गोलियां दी और इस बार उन्हें श्नाइडर की हत्या करने के लिए तैयार कर लिया। संविधान के समर्थक जनरल को उसी दिन कत्ल कर दिया गया।

सान्तीआगो दे चिली मे सी० आई० ए० केंद्र के लिए ये अत्यत व्यस्तता के दिन थे। देश मे राज-

गया था, मुआवज़े की मात्रा और रूप से संबद्ध आर्थिक उद्देश्य।*

बहरहाल, अमरीकी शासक हलके अपने को पसंद न आनेवाले शासनों को उलटने के लिए अनिवार्यतः जिस अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का आसरा लेते हैं, उसके सभी कांटों को ठेठ १९७० के शरद में ही क्रियाशील कर दिया गया था। अल्येंदे सरकार के खिलाफ गुप्त युद्ध चलाने का कार्यभार अमरीकी गुप्तचर सेवाओं को सौंपा गया, जिन्हें इसके लिए खुला परवाना दे दिया गया और मुक्तहस्त धन दिया गया। २८ सितंबर, १९७० को अमरीकी सैन्य गुप्तचर्या और सी० आई० ए० के बीच घनिष्ठ सहयोग के बारे में एक निर्णय लिया गया। इस सिलसिले में सैन्य गुप्तचर्या के उप-प्रमुख ने चिली में अमरीकी सैनिक अटैशे (सहचारी) को एक गुप्त निर्देश भेजा

"सी० आई० ए० केंद्र-प्रमुख अथवा उनके सहकारी के साथ घनिष्ठ सहयोग करते हुए ऐसे सैनिक नेताओं से संपर्क स्थापित करने की कोशिश कीजिये, जो अल्येंदे के विरुद्ध साजिश में सक्रिय भाग ले सकते हैं। अपने सामान्य कार्यों से संबद्ध सभी मामलों में राजदूत के आदेशों का पालन कीजिये। अपनी गतिविधियों का सी० आई० ए० केंद्र-प्रमुख के साथ समन्वय कीजिये।"**

---

*Armando Uribe, *The Black Book of American Intervention in Chile*, Beacon Press, Boston, 1975

** सी० आई० ए० [illegible] पृ० [illegible]।

नीतिक स्थिति के बारे में सूचना एकत्र करने के अलावा केंद्र के अधिकारी शासन के विरोधियों में से एजेंटों के एक व्यापक जाल को स्थापित करने, प्रतिक्रांतिकारी नेताओं के साथ संपर्क स्थापित करने, प्रेस तथा राजनीतिक और सार्वजनिक संगठनों के नेताओं को घूस खिलाने और आतंकवादी कार्यों तथा अंतर्ध्वंस की योजनाएं तैयार करने में भी लगे हुए थे। प्रतिक्रांतिकारी षड्यंत्र की रचना किये जाने के समय सी० आई० ए० केंद्र के प्रमुख रेमंड वारेन थे। उन्होंने ग्वाटेमाला में ध्वंसकार्य का प्रचुर अनुभव अर्जित किया था जहां वह १९५४ में एक साधारण सी० आई० ए० कर्मी की हैसियत से तैनात थे।

चिली में अमरीकी राजदूत नैथैनिआल डेविस भी सी० आई० ए० कार्य के ग्वाटेमाला में तजुरबा हासिल किये हुए एक और व्यक्ति थे। ग्वाटेमाला में फासिस्ट सत्ता-परिवर्तन के बाद उन्हें तरक्की देकर विदेश विभाग में अफ्रीका प्रभाग का प्रमुख बना दिया गया था।

चिली में सी० आई० ए० की जटिल और नानाविध सक्रियता के लिए भारी बड़ी रकम की आवश्यकता हुई। सी० आई० ए० के भूतपूर्व प्रमुख विलियम कोल्बी द्वारा कांग्रेस में दिये गये बयान से पता चलता है कि १९७० से १९७३ तक सी० आई० ए० ने चिली में आंतरिक स्थिति को संगीन बनाने के लिए अभीष्ट विभिन्न कार्यों पर ८० लाख डालर से अधिक खर्च किये थे। सीनेट समिति के सम्मुख कोल्बी का साक्ष्य बताता

मध्य अमरीका व उत्तर-लातिनम में स्थि ग
टाई म अन्तर्राष्ट्रीय दग मे वई दशको से यू
राज्य अमरीका की युनाइटेड फ्रूट कपनी का ई
जारा जमा हुआ था जो केला बागानों, रेलों औ
बन्दरगाहों की मालिक थी और यही नहीं, उस
अपनी पुलिस तक थी। दूसरे अमरीकी इजारे ग्वाटेमा
की तेल संपदा पर आखे गडाये हुए थे और ब
दीर्घकालिक प्रभुत्व प्राप्त करने की आशा कर रहे थे.

१९५० के अत मे जब राष्ट्रपति आर्बेंस के नेतृ
मे नयी प्रगतिशील सरकार ने किसानों और मे
मजदूरो को ज़मीन के हस्तातरण सहित अनेक बुनिया
सुधारों को कार्यान्वित करने के अपने इरादे की घोष
की, तो ग्वाटेमाला में अमरीकी एकाधिकारो के लि
एक गभीर खतरा पैदा हो गया। नयी सरकार के
ज़मीदारियो का, जिनमे युनाइटेड फ्रूट कपनी की
ज़मीदारिया भी थी, स्वामित्वहरण करने के निर्ण
ने ह्वाइट हाउस को विशेषकर रुष्ट किया। ग्वाटेमाल
के आतरिक मामलो मे प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करते हुए अमरीकी
विदेश विभाग ने आर्बेंस सरकार को उसकी भूमि-
नीति के विरुद्ध एक विरोधपत्र दिया।

१९५३ मे राष्ट्रपति आइजेनहॉवर ने आर्बेंस सरकार
का तख्ता उलटवाने का फैसला किया। अतर्राष्ट्रीय
आतकवाद की इस कार्रवाई का औचित्य-स्थापन करने
के लिए अमरीकी प्रचार साधनो ने मध्य अमरीका
मे कम्युनिस्ट खतरे के बारे मे बडा जोरदार अभियान
छेड दिया। इधर सी० आई० ए० के , एलेन

सी० आई० ए० में खलबली मच गयी। ह्वाइट हाउस ने स्थिति का जायज़ा लेने के लिए एक आपात बैठक बुलायी। नतीजे के तौर पर राष्ट्रपति आइज़ेन-हावर ने न केवल भड़ैतियों को सहायता देते रहने का फ़ैसला किया, बल्कि उनकी मदद के लिए नये हवाई जहाज़ तक भेजने का आदेश दिया। आर्बेंस सरकार को एक ही दिन में उलटने की मूल-योजना की विफलता के बावजूद सी० आई० ए० ने 'एल दीआब्लो' *प्रक्रिया को आखिर सफल परिणति पर पहुंचा ही दिया।* २७ जून, १९५४ को आर्बेंस को त्यागपत्र देना और देश से चले जाना पड़ा। कुछ दिन सैनिक हुंता का नेतृत्व कर्नल दीआस ने किया, जिसकी जगह बाद में कर्नल मोनसोन ने ले ली। ३ जुलाई को कस्तीलो अर्मास स्वयं ग्वाटेमाला पहुंचा और हुंता ने उसे "राष्ट्रपति' घोषित कर दिया। कुछ दिन बाद उसकी "सरकार" को संयुक्त राज्य अमरीका ने सरकारी तौर पर मान्यता प्रदान कर दी।

युनाइटेड फ्रूट कंपनी के मालिकों की खुशी का वारापार न था – अर्मास हुकूमत ने अमरीकियों को उनसे जब्त की जमीनें लौटा देने का फैसला किया। इस इजारेदारी ने जल्दी ही सी० आई० ए० के काले कारनामों की अपनी सराहना को व्यक्त किया – १९५५ में जनरल वाल्टर बैडेल स्मिथ को, जो १९५० से १९५३ तक सी० आई० ए० के निदेशक और बाद में संयुक्त राज्य अमरीका के अवर विदेश मंत्री रहे थे, युनाइटेड फ्रूट कंपनी के निदेशकमंडल

मे से लिया गया। अतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के
का मार्गदर्शन करनेवाले वास्तविक प्रेरक क्या
इसका अनुमान इन तथ्यों से भी लगाया जा सक
है ग्वाटेमालाई सत्ता-परिवर्तन के दोनों मुख्य
अमरीकी विदेश मंत्री जॉन फॉस्टर डलेस और उन
भाई, सी० आई० ए० निदेशक एलेन डलेस
एंड क्रॉमवेल नामक कंपनी के भागीदार थे,
युनाइटेड फ्रूट कंपनी के कानूनी मामलों को
थी, और अतत अतर-अमरीकी मामलों मे
फॉस्टर डलेस के सहायक जॉन कैबट युनाइटेड
कंपनी के शेयरहोल्डर थे। प्रकटतया अतर्राष्ट्री
आतंकवाद मुनाफादायी धंधा है और मुनाफा
भरपूर देता है।

ग्वाटेमाला मे अंतिम सत्ता-परिवर्तन ८ अगस्
१९८३ को हुआ। राष्ट्रपति की गद्दी भूतपूर्व प्रति
मंत्री ब्रिगेडियर-जनरल ओस्कार उंबर्तो मेहिया विक्टो
ने हथिया ली, जिन्हें निकारागुआई समाचारपत्रों
घोर कम्युनिस्टविरोधी, "बाजों में भी बाज"
देशभक्त शक्तियों के निष्ठुरतम दमन का समर्थ
बताया था। वह "कम दक्षिणपंथी" जनरल रि
मोंत की जगह पर आये थे, जिन्हें कुछ ही मा
पहले तक राष्ट्रपति रैगन "सच्चा जनवादी"
करते थे। इस "जनवादी" के ४६३ दिवसीय मना
में देश में १५ हजार लोग मौत के घाट उतारे ग
थे। किंतु वाशिंगटन को ऐसा पैमाना भी शायद पर्या
न लगा और सी० आई० ए० की

हुए मेहिया ने नागरिक आबादी के खिलाफ ऐसी फौजी कार्रवाइयो शुरू कर दी, जिन्हे जनसहार के अलावा और कोई नाम नही दिया जा सकता। छापामारो को सहायता देने के सदेह मे मेहिया के फौजी दस्ते पूरी की पूरी बस्तियो को नष्ट कर डालते है। कुछ मामलो मे तो वे रसायनिक और जीवाणु हथियार इस्तेमाल करने मे भी बाज़ नही आये हैं।

मैक्सिको की सीमा मे कुछ ही दूरी पर स्थित सान-फ्रासिस्को नामक छोटे से रेड इडियन गाव का तो नामोनिशान भी नही रहने दिया गया। उसके सिर्फ वे दो निवासी ही अपनी जान बचा सके, जो भागकर मैक्सिको मे जा छिपे थे। इन लोगो ने ही पत्रकारो को बताया कि उनके गाव का क्या हश्र हुआ।

छ अफसरो की कमान मे ६०० सिपाही एकाएक गाव मे पहुचे। उन्होने सारी आबादी को दो समूहो मे बाट दिया – मर्दो को एक ओर किया गया और औरतो को दूसरी ओर। फिर उन्हे अलग-अलग जगहो पर – स्थानीय अदालत की इमारत और चर्च मे – बद किया गया। इसके बाद औरतो को बच्चो मे अलग करके दूसरी इमारतो मे ले जाकर गडासो से काट डाला गया। झोपडियो मे जो कुछ भी लूटा जा सकता था, लूट लिया गया और मुरदो को उन्ही मे छोडकर उनमे आग लगा दी गयी।

फिर बच्चो की बारी आयी। प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि उनकी हत्या कैसे की गयी कुछ का पेट चाकू से चीर दिया गया और कुछ के सिर पत्थर या पेड

मे ले लिया गया। अतर्राष्ट्रीय आतकवाद के धर्मपिता
का मार्गदर्शन करनेवाले वास्तविक प्रेरक क्या
इसका अनुमान इन तथ्यो से भी लगाया जा स
है ग्वाटेमालाई सत्ता-परिवर्तन के दोनो मुख्य सूत्र
अमरीकी विदेश मत्री जॉन फॉस्टर डलेस और उ
भाई, सी० आई० ए० निदेशक एलेन डलेस सलि
एड क्रॉमवेल नामक कपनी के भागीदार थे,
युनाइटेड फ्रूट कपनी के कानूनी मामलो को सभाल
थी, और अतत अतर-अमरीकी मामलो मे ज
फॉस्टर डलेस के सहायक जॉन कैबट युनाइटेड फ्
कपनी के शेयरहोल्डर थे। प्रकटतया अतर्राष्ट्री
आतकवाद मुनाफादायी धधा है और मुनाफा भ
भरपूर देता है।

ग्वाटेमाला मे अतिम सत्ता-परिवर्तन ८ अगस्त
१९८३ को हुआ। राष्ट्रपति की गद्दी भूतपूर्व प्रतिरक्षा
मत्री ब्रिगेडियर-जनरल ओस्कार उबर्तो मेहिया विक्तोरेस
ने हथिया ली, जिन्हे निकारागुआई समाचारपत्रो ने
घोर कम्युनिस्टविरोधी, 'बाजो मे भी बाज" और
देशभक्त शक्तियो के निष्ठुरतम दमन का समर्थक
बताया था। वह "कम दक्षिणपथी" जनरल रिओस
मोन की जगह पर आये थे, जिन्हे कुछ ही समय
पहले तक राष्ट्रपति रेगन "सच्चा जनवादी" कहा
करते थे। इस "जनवादी" के ४६३ दिवसीय शासनकाल
मे देश मे १५ हजार लोग मौत के घाट उतारे गये
थे। किंतु वाशिगटन को इतना पैमाना भी शायद पर्याप्त
न लगा और सी० आई० ए० की मदद से शासनारू

ईरान और ग्वाटेमाला में यही हुआ। आगे चलकर उरुग्वाय, ब्राज़ील, थाइलैंड और एल सल्वाडोर में – जहां कहीं भी सी० आई० ए० ने अपने रक्तरंजित सुराग छोड़े हैं – यही होना था।

आखिरी मिसाल ग्रेनाडा है। किंतु १ लाख की आबादी और पर्याप्त ताक़तवर राष्ट्रीय शक्तियोंवाले इस द्वीप के खिलाफ सी० आई० ए० और जगहों जैसी "प्रच्छन्न सक्रियाओं" का सहारा लेने की हिम्मत न कर सकी, क्योंकि उसे उनकी सफलता में पक्का विश्वास न था। ऐसी स्थिति में अमरीकी साम्राज्यवाद ने साधारण रास्ता ही अपनाया। "मानव अधिकारों के लिए संघर्ष" का अभियान कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया और हस्तक्षेपात्मक सक्रिया की गयी, जिसके दौरान द्वीप पर उतरी अमरीकी फ़ौजों ने शांतिपूर्ण आबादी के बीच सचमुच का क़त्ले-आम मचाया।

सी० आई० ए० के विदेशों में प्रच्छन्न कार्य सिर्फ विधिसम्मत सरकारों को उलटने और उनकी तानाशाहियों से प्रतिस्थापना तक ही सीमित नहीं हैं। ये तानाशाहियां आम तौर पर इतनी कमज़ोर होती हैं कि सी० आई० ए० की निरंतर सहायता और समर्थन के बिना अपने बूते पर क़ायम नहीं रह सकतीं।

इसलिए सी० आई० ए० का एक और महत्वपूर्ण कार्य ऐसी अवस्थाओं का निर्माण करना है, जो कठ-पुतली हुकूमतों के अनुकूल हों, जिससे वे बिना किसी

के तने से पटक-पटककर मार [illegible]
खर्च करने की जरूरत नहीं समझी गयी। दुधमुँहे
बच्चों को भी नहीं बख्शा गया।

इसके बाद सिपाहियों ने कुछ समय आराम कि[या]
और फिर मर्दों पर टूट पड़े। उन्हें एक-एक क[रके]
अदालत की इमारत के बाहर लाया गया और ह[ाथ]
पीठ पीछे बांधकर जमीन पर औंधा लिटाया गया,
जिसके बाद चाकुओं के वार करके मार डाला गया।
एक प्रत्यक्षदर्शी बताता है कि कैसे एक सिपाही ने त[भी]
तभी मारे गये आदमी की लाश से दिल को निकाल[कर]
चबा भी था।

यह लोमहर्षक रक्तपात दिन के ग्[यारह] बजे [से]
शाम के सात बजे तक जारी रहा। इन छ घंटों [में]
३५२ लोगों को मौत के घाट उतारा गया।

लातीनी अमरीका में घटनाक्रम प्रायः उसी नियमि[त]
प्रतिरूप पर चला करता है, जिसकी सी० आई० ए०
के कहीं भी अपने कार्यक्रम को कार्यान्वित करने [में]
सफल हो जाने के बाद हर बार भेदजनक रूप [से]
पुनरावृत्ति होती है। व्हाइट हाउस द्वारा अनुमोदि[त]
प्रकार के मुताबिक सैनिकों द्वारा गद्दी लिये कठपुतली
शासनों में आपस में शायद ही कोई अन्तर किया जा
सकता है। उनका मनहूस रूप एक ही है – अमानुषिक
आतंक और प्रतिशोधात्मक दमन और अमरीका द्वारा
स्थापित तानाशाहों व अपनी-अपनी जनता के विरुद्ध
निर्मम और निरन्तर युद्ध जो अमरीकी निर्देशकों द्वारा
[illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

विरोध-पक्ष के विरुद्ध संघर्ष मे आतंक ही ग्वाटेमाला के शासक हलको का एकमात्र हथियार था और अब भी है। अगस्त, १९८० से लेकर मई, १९८१ तक ईसाई जनतांत्रिक पार्टी के ७६ सदस्य मारे गये। मध्यमार्गी-वामपक्षीय सामाजिक-जनवादी सयुक्त जनतांत्रिक मोरचे के भी १० कार्यकर्ता मारे गये।

ग्वाटेमाला के दमनविरोधी जनतांत्रिक मोरचे द्वारा मार्च, १९८१ में जारी किये गये एक वक्तव्य मे कहा गया था कि जन-प्रतिरोध की लहर के उमडने के डर से ग्वाटेमालाई सेना ने हाल के समय मे देहाती इलाको मे "सर्वक्षार" नीति पर चलना शुरू कर दिया है। विशेषकर स्थापित नाजीगी दस्ते पूरे के पूरे गावो को नष्ट कर देते हैं और नागरिको को यंत्रणाए देते तथा जान से मार देते हैं। वक्तव्य मे इन दस्तो द्वारा स्त्रियो और बच्चो सहित पूरे के पूरे परिवारों के जिंदा जला दिये जाने के उदाहरण दिये गये थे।

१९८२ के वसत मे ग्वाटेमाला मे एक और सत्ता-परिवर्तन हुआ। जनरल लूकास गार्सीआ को राष्ट्रपति पद से अलग कर दिया गया, सरकार और राष्ट्रीय कांग्रेस (विधानमडल) को भग कर दिया गया और संविधान को निलंबित कर दिया गया। ग्वाटेमालाई सेना के चरम दक्षिणपंथियो ने जनरल रीओस मोन्त के नेतृत्व में एक "प्रतिनिधि हुना" की स्थापना की।

इस हुंता द्वारा उठाये पहले ही कदमो ने दिखला दिया कि पुराने निज़ाम की आतंक और दमन की नीति को त्यागने का उसका कोई इरादा नहीं है।

कर्नल हेक्तोर मोताल्वाना और राष्ट्रीय पुलिस के प्रमुख कर्नल हेरमान चुपीना बराहोना द्वारा समर्थित शीर्षस्थ जनरलो के एक गुट के आदेशो पर सेना तथा पुलिस के अधिकारी करते है। प्रमुख ग्वाटेमालाई व्यवसायी राऊल गार्सीआ ग्रानादोस ने एक भेंटवार्ता मे बताया था कि यमदूत टुकडिया सशस्त्र सेनाओं द्वारा खडी की गयी है।

गार्सीआ ग्रानादोस ने आगे कहा "उनके पास ऐसे लोगो की सूचिया है, जिन पर कम्युनिस्ट होने का शक किया जाता है। इन लोगो को मार डाला जाता है।"

इसका पर्याप्त प्रमाण है कि यमदूत टुकडिया सरकारी नियंत्रण मे है। सितंबर, १९८० मे इलीआस बाराहोना ने सार्वजनिक रूप मे पुष्टि की, जो चार साल गृहमंत्रालय के प्रेस सचिव रहे थे। उन्होंने पत्रकारो को एक लिखित वक्तव्य दिया, जिसमे विस्तार से बतलाया गया था कि लूकास गार्सीआ और सेना के जनरल किस तरह यमदूत टुकडियों को नियंत्रित करते है। बाराहोना ने पत्रकारो को सरकार द्वारा तैयार तथा यमदूत केंद्रों के रूप मे प्रयुक्त मकानों के पतों की सूची भी दी। ग्वाटेमालाई ईसाई जनतांत्रिक पार्टी के महासचिव वीनिसीओ सेरेसो ने एक प्रेस सम्मेलन मे कहा कि उनकी पार्टी के नेता हत्या के लिए अभीष्ट व्यक्तियों की सूची मे है क्योंकि उन सभी को कम्युनिस्ट माना जाता है जो सरकार का विरोध करते है।

जनरल रीओस मोत ने एक वक्तव्य द्वारा ग्वाटेमाला में जनतंत्र तथा स्वतन्त्रता की बहाली के लिए लड़ रहे देशभक्तों को हथियार न डालने की सूरत में नष्ट कर देने की धमकी दी।

१९६४ में सी० आई० ए० ने ब्राजील में राष्ट्रपति गूलार्त की जनतांत्रिक सरकार को उलटने के लिए बलात सत्ता-परिवर्तन की तैयारी की थी। अपने इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए सी० आई० ए० ने जनवादी शक्तियों के विरुद्ध भड़कावे और आतंक की कार्रवाइयों में पारगत कितने ही स्थानीय सगठनों और अभिकरणों का उपयोग किया।

१९६४ के सैनिक सत्ता-परिवर्तन की तैयारी में सी० आई० ए० की गर्हित भूमिका १९७६ में प्रकाश में आयी, जब ब्राजीली पत्रकारों ने अनेक गुप्त दस्तावेज़ों को प्रकाशित करके उसका परदाफाश किया। आज यह अच्छी तरह से ज्ञात तथ्य है कि ब्राजील के आन्तरिक मामलों में धृष्टतापूर्वक हस्तक्षेप करते हुए सी० आई० ए० ने कम्युनिस्टविरोधी आंदोलन, मृत्युदूत टुकड़ी, कम्युनिस्ट हनन दल जैसे दक्षिणपक्षीय आतंकवादी सगठनों, अर्द्ध-पुलिस सगठन आपे... शन बांडेइरांतेस और राजनीतिक पुलिस के सा... सक्रिय सहयोग किया था।

सी० आई० ए० और अन्य सर्वाधिकारी लातीनी अमरीकी शासनों – उरुग्वाय, पराग्वाय तथा हाइटी – दमनकारी अभिकरणों के बीच भी ऐसे ही "मित्रतापूर्ण सम्बन्ध" हैं। ... और मुक्ति...

ादोलनो का भय सयुक्त राज्य अमरीका को इस
हाद्वीप के विरुद्ध अपने गुप्त युद्ध को तेज करने और
ातकवादी, फासिस्ट तानाशाहियों को, जो पश्चिमी
ोलार्ध में अमरीकी साम्राज्यवाद की एकमात्र समर्थी
, स्थापित करने और खुले तौर पर समर्थन देने
ो प्रेरित करता है।

सी० आई० ए० द्वारा चालित अतर्राष्ट्रीय आतक-
ाद की मशीन नयी बलियां चाहती है। हिंसा वह
अपरिहार्य टेक है, जिसके बिना लातीनी अमरीका
ा कोई भी साम्राज्यवाद-समर्थक शासन एक दिन भी
नहीं टिका रह सकता। इसकी एक ताजा मिसाल वह
भयकर त्रासदी है, जिसका विश्व जनमत इस समय
ाक और लातीनी अमरीकी देश, सल्वादोर में प्रत्यक्ष-
दर्शी है।

'आतकवाद तब होता है, जब सयुक्त राज्य
अमरीका कहीं कोई तानाशाही प्रतिष्ठापित कर देता
है, जो सशस्त्र बल पर आश्रित होती है और स्वय
अपनी जनता के विरुद्ध आतक का सहारा लेती है,"
सी० आई० ए० के भूतपूर्व कर्मी फिलिप एजी ने
फरवरी, १९८१ में सल्वादोर के फाराबूदो मार्ती
राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे द्वारा आयोजित एक पत्रकार
सम्मेलन में कहा था।

एजी ने यह परिभाषा उनसे पूछे गये इस प्रश्न
का उत्तर देते हुए दी थी कि अमरीकी प्रशासन के
इस आरोप के बारे में वह क्या कह सकते है कि
राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन और आतकवाद आपस

जनरल रीओस मोत्त ने एक वक्तव्य द्वारा ग्वाटेमा
मे जनतत्र तथा स्वतत्रता की बहाली के लिए ल
रहे देशभक्तों को हथियार न डालने की
नष्ट कर देने की धमकी दी।

१९६४ मे सी० आई० ए० ने ब्राजील मे राष्ट्र
गूलार्त की जनतात्रिक सरकार को उलटने के लि
बलात सत्ता-परिवर्तन की तैयारी की थी। अपने इस
की सिद्धि के लिए सी० आई० ए० ने जनवादी शक्ति
के विरुद्ध भडकावे और आतक की कार्रवाइयो
पारगत कितने ही स्थानीय सगठनो और अभिक
का उपयोग किया।

१९६४ के सैनिक सत्ता-परिवर्तन की तैयारी
सी० आई० ए० की गर्हित भूमिका १९७६ मे प्र
मे आयी, जब ब्राजीली पत्रकारो ने अनेक गुप्त द
वेजो को प्रकाशित करके उसका परदाफाश कि
आज यह अच्छी तरह से ज्ञात तथ्य है कि ब्राजील
आतरिक मामलो मे धृष्टतापूर्वक हस्तक्षेप करते

म जुड़े हुए है। उन्होंने आगाह किया कि वर्तमान इसके लिए सभी कुछ करेगा कि सल्वाडोर मे लोकतांत्रिक सरकार सत्ता मे न आये। उन्होने ऐलान किया कि संयुक्त राज्य अमरीका इस देश पर सैनिक आक्रमण कर देगा और उसे "दूसरा वियतनाम" बनाने से भी न कतरायेगा। इस चेतावनी की पुष्टि औरो के अलावा भूतपूर्व अमरीकी विदेश मंत्री एलैक्जेंडर हेग तथा राष्ट्रपति के निकटतम परामर्शदाता एडविन मीज के धमकीभरे और तत्वतः भड़कानेवाले वक्तव्यों से हुई।

सल्वाडोरी देशभक्तो द्वारा आयोजित पत्रकार सम्मेलन ने सी० आई० ए० के आपराधिक तरीकों का पर्दाफाश किया। एक ओर, वह राष्ट्रीय मुक्ति आदोलनो के, जिनमे सल्वाडोर का आदोलन भी सम्मिलित है, विरुद्ध ध्वसकार्य करती है, और दूसरी ओर, वह विभिन्न देशो मे जनमत को गुमराह करने की कोशिश करती है। एजी ने बतलाया कि सल्वाडोरी विद्रोहियों और समाजवादी राष्ट्रो के बीच सबध का वह तथाकथित प्रमाण अमरीकी गुप्तचर्या द्वारा ही गढा गया था, जिसे अमरीकी अवर विदेश मंत्री लॉरेंस ईगलबर्गर पश्चिमी यूरोप लाये थे। पत्रकार सम्मेलन मे उपस्थित पत्रकारो को सी० आई० ए० के ध्वसात्मक तथा मिथ्या सूचना तंत्र की कार्यप्रणाली को प्रकट करनेवाली दस्तावेजो की फोटो प्रतियां दी गई।

अमरीकी स्वतंत्र श्रम विकास सस्थान की बात करते

फिलिप एजी ने कहा कि "इस शैक्षिक संस्थान का वास्तविक प्रयोजन कार्यकर्ताओं को नये मजदूर संघ संगठित करने या विद्यमान संघों को इस तरह से प्रभाव में ले लेने का प्रशिक्षण देना है कि संघ प्रत्यक्षत या परोक्षत सी० आई० ए० के नियंत्रण में रहें।" एजी ने संस्थान की एक दस्तावेज का उल्लेख किया, जिसमें सामाजिक-जनवादी पार्टियों के सदस्यों को प्रभावित करने के प्रयासों को बढ़ाने की सलाह दी गयी थी, ताकि सल्वादोर के प्रति अमरीकी नीति के लिए उनका समर्थन प्राप्त किया जा सके।

एजी के रहस्योद्घाटन की ११ अप्रैल, १९८१ को 'नेशन' में प्रकाशित 'सी० आई० ए० और एल सल्वादोर के बारे में श्वेतपत्र' शीर्षक लेख से पुष्टि होती है। यह लेख सी० आई० ए० सक्रिया निदेशालय के अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म शाखा के भूतपूर्व कर्मचारी राल्फ मैकगेही ने लिखा था, जो सी० आई० ए० के लिए ताइवान, थाइलैंड और वियतनाम में काम कर चुके थे।

राल्फ मैकगेही लिखते हैं

"संयुक्त राज्य अमरीका इस समय सल्वादोर में जो कर रहा है, वह उसका प्रतिबिंब मात्र है, जो संयुक्त राज्य अमरीका तीसरे विश्व के कितने ही देशों में कर चुका है। अपनी सदाशयता की घोषणा करते हुए और अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे की निंदा करते हुए भी अमरीकी नीति-निर्माताओं ने (अन्य देशों में —स०) अलोकप्रिय शासनों को थोपा

म गृह युद्ध है। उन्होंने आगाह किया कि यदि
इसके लिए सभी कुछ करेगा कि सल्वादोर मे
क्रान्तिकारी सरकार सत्ता में न आये। उन्होंने
किया कि संयुक्त राज्य अमरीका इस देश पर
सैनिक आक्रमण कर देगा और उसे "दूसरा वियतना
बनाने में भी न कतरायेगा। इस चेतावनी की पु
औरों के अलावा भूतपूर्व अमरीकी विदेश मंत्री एले
हेग तथा राष्ट्रपति के निकटतम परामर्शदाता एड
मीज़ के धमकीभरे और नल्वन भड़कानेवाले बय
से हुई।

सल्वादोरी देशभक्तों द्वारा आयोजित पत्रकार स
लन ने सी० आई० ए० के आपराधिक तरीकों
पर्दाफाश किया। एक ओर वह राष्ट्रीय मु
आंदोलनों में, जिनमें सल्वादोर का आंदोलन
सम्मिलित है विरुद्ध ध्वसकार्य करती है, और दूस
ओर, वह विभिन्न देशों में जनमत को गुमराह क
की कोशिश करती है। एजी ने बतलाया कि सल्वादो
विद्रोहियों और समाजवादी राष्ट्रों के बीच सब
का वह तथाकथित प्रमाण अमरीकी गुप्तचर्या द्वा
ही गढ़ा गया था, जिसे अमरीकी अवर विदेश म
लॉरेंस ईगलबर्गर पश्चिमी यूरोप लाये थे। पत्रक
सम्मेलन मे उपस्थित पत्रकारों को सी० आई० ए
के ध्वसात्मक तथा मिथ्या सूचना तंत्र की कार्यप्रणा
को प्रकट करनेवाली दस्तावेजों की फोटो प्रतियां द
गयी।

श्रम विकास संस्थान की बात कर

ए फिलिप एजी ने कहा कि "इस 'शैक्षिक' संस्थान का वास्तविक प्रयोजन कार्यकर्ताओं को नये मजदूर संघ संगठित करने या विद्यमान संघों को इस तरह से प्रभाव में ले लेने का प्रशिक्षण देना है कि संघ प्रत्यक्षतः या परोक्षतः सी० आई० ए० के नियंत्रण में रहें।" एजी ने संस्थान की एक दस्तावेज का उल्लेख किया, जिसमें सामाजिक-जनवादी पार्टियों के सदस्यों को प्रभावित करने के प्रयासों को बढ़ाने की सलाह दी गयी थी, ताकि सल्वादोर के प्रति अमरीकी नीति के लिए उनका समर्थन प्राप्त किया जा सके।

एजी के रहस्योद्घाटन की ११ अप्रैल, १९८१ को 'नेशन' में प्रकाशित 'सी० आई० ए० और एल सल्वादोर के बारे में श्वेतपत्र' शीर्षक लेख से पुष्टि होती है। यह लेख सी० आई० ए० सक्रिया निदेशालय के अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म शाखा के भूतपूर्व कर्मचारी राल्फ मैकगेही ने लिखा था, जो सी० आई० ए० के लिए ताइवान, थाइलैंड और वियतनाम में काम कर चुके थे।

राल्फ मैकगेही लिखते हैं

'संयुक्त राज्य अमरीका इस समय सल्वादोर में जो कर रहा है, वह उसका प्रतिबिंब मात्र है, जो संयुक्त राज्य अमरीका तीसरे विश्व के कितने ही देशों में कर चुका है। अपनी सदाशयता की घोषणा करते हुए और अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे की निंदा करते हुए भी अमरीकी नीति-निर्माताओं ने (अन्य देशों में —स०) अलोकप्रिय शासनों को थोपा

मे जुडे हुए है। उन्होंने आगाह किया कि वे
इसके लिए सभी कुछ करेगा कि मच्चादोर मे
जनतात्रिक सरकार सत्ता मे न आवे। उन्होंने
किया कि संयुक्त राज्य अमरीका इस देश पर
सैनिक आक्रमण कर देगा और उसे "दूसरा वियत
बनाने मे भी न कतरायेगा। इस चेतावनी की
औरो के अलावा भूतपूर्व अमरीकी विदेश मत्री एलेन
हेग तथा राष्ट्रपति के निकटतम परामर्शदाता एडविन
मीज के धमकीभरे और तनाव भडकानेवाले वक्तव्य
मे हुई।

कि संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा दिये जा रहे सैनिक साज-सामान का 'एकदम नियंत्रणहीन ढंग से हत्या करने और मारने के लिए' उपयोग किया जायेगा। सल्वादोरियों के मुख्य हत्यारे सुरक्षा सेनाएं हैं, जो संभवत चार अमरीकी साधुनियों की हत्या के लिए और कम से कम ५,००० वामपंथियों को और वामपंथी होने के मात्र संदिग्ध व्यक्तियों को जान से मार डालने के लिए जवाबदेह हैं।

"सी० आई० ए० के सल्वादोर के बारे में सत्य को विकृत करने के पहले प्रयास सल्वादोरी वामपंथियों को सोवियत संघ, क्यूबा, बुल्गारिया, वियतनाम, फिलस्तीनी मुक्ति संगठन, इथियोपिया और नीकारागुआ में विशाल मात्राओं में हथियारों के भेजे जाने की रिपोर्टों तक ही सीमित थे।

"कहा जाता था कि वे संयुक्त राज्य अमरीका के विरुद्ध एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र में शामिल हैं। लेकिन – जैसे कि कहा जाता था – षड्यंत्रकारी इसका ध्यान रखते हैं कि वे सिर्फ पश्चिमी देशों में निर्मित हथियार ही मुहैया करें

"सी० आई० ए० का एक और संभाव्य सत्य-विरूपण प्रयास इस सहायता (अमरीकी सैनिक सहायता – अनु०) का पुनरारंभ कराने, राष्ट्रपति रैगन के सैनिक हस्तक्षेप के 'तैयारशुदा सिद्धांत' के लिए ज़मीन तैयार करने की ओर लक्षित था। १६ जनवरी, १६८१ को संयुक्त राज्य अमरीका भर में अखबारों ने एक सशस्त्र छापामार दल के, जिसमें १०० से

कि संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा दिये जा रहे सैनिक साज-सामान का 'एकदम नियंत्रणहीन ढंग से हत्या करने और मारने के लिए' उपयोग किया जायेगा। सल्वादोरियों के मुख्य हत्यारे सुरक्षा सेनाएं हैं, जो संभवतः चार अमरीकी साधुनियों की हत्या के लिए और कम से कम ५,००० वामपंथियों को और वामपंथी होने के मात्र संदिग्ध व्यक्तियों को जान से मार डालने के लिए जवाबदेह हैं।

"सी० आई० ए० के सल्वादोर के बारे में सत्य को विकृत करने के पहले प्रयास सल्वादोरी वामपंथियों को सोवियत संघ, क्यूबा, बुल्गारिया, वियतनाम, फिलस्तीनी मुक्ति संगठन, इथियोपिया और नीकारागुआ से विशाल मात्राओं में हथियारों के भेजे जाने की रिपोर्टों तक ही सीमित थे।

"कहा जाता था कि वे संयुक्त राज्य अमरीका के विरुद्ध एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र में शामिल हैं। लेकिन – जैसे कि कहा जाता था – षड्यंत्रकारी इसका ध्यान रखते हैं कि वे सिर्फ पश्चिमी देशों में निर्मित हथियार ही मुहैया करें

"सी० आई० ए० का एक और संभाव्य सत्य-विरूपण प्रयास इस सहायता (अमरीकी सैनिक सहायता – अनु०) का पुनरारंभ कराने, राष्ट्रपति रैगन के सैनिक हस्तक्षेप के 'तैयारशुदा सिद्धांत' के लिए जमीन तैयार करने की ओर लक्षित था। १९ जनवरी, १९८१ को संयुक्त राज्य अमरीका भर में अखबारों ने एक सशस्त्र छापामार दल के, जिसमें १०० से

कि सयुक्त राज्य अमरीका द्वारा दिये जा रहे सैनिक साज-सामान का 'एकदम नियत्रणहीन ढग से हत्या करने और मारने के लिए' उपयोग किया जायेगा। सल्वादोरियो के मुख्य हत्यारे सुरक्षा सेनाए है, जो सभवत चार अमरीकी साध्वियो की हत्या के लिए और कम से कम ५,००० वामपथियो को और वामपथी होने के मात्र सदिग्ध व्यक्तियो को जान से मार डालने के लिए जवाबदेह है।

"सी० आई० ए० के सल्वादोर के बारे मे सत्य को विकृत करने के पहले प्रयास सल्वादोरी वामपथियो को सोवियत सघ, क्यूबा, बुल्गारिया, वियतनाम, फिलस्तीनी मुक्ति सगठन, इथियोपिया और नीकारागुआ से विशाल मात्राओं मे हथियारो के भेजे जाने की रिपोर्टों तक ही सीमित थे।

"कहा जाता था कि वे सयुक्त राज्य अमरीका के विरुद्ध एक अतर्राष्ट्रीय षड्यत्र मे शामिल है। लेकिन – जैसे कि कहा जाता था – षड्यत्रकारी इसका ध्यान रखते है कि वे सिर्फ पश्चिमी देशो मे निर्मित हथियार ही मुहैया करे

"सी० आई० ए० का एक और सभाव्य सत्य-विरूपण प्रयास इस सहायता (अमरीकी सैनिक सहायता – अनु०) का पुनरारभ कराने, राष्ट्रपति रैगन के सैनिक हस्तक्षेप के 'तैयारशुदा सिद्धात' के लिए ज़मीन तैयार करने की ओर लक्षित था। १६ जनवरी, १९८१ को सयुक्त राज्य अमरीका भर मे अखबारो मे एक सशस्त्र छापामार दल के, जिसमे १०० से

है और उन्हे सेनाओ, पुलिस और हथियारो से
दिया है। अपने लक्ष्यो को अतर्राष्ट्रीय कम्युनिस
अथवा, जैसे कि प्रचलित शब्दावली मे वह
'अतर्राष्ट्रीय आतकवाद', से लडने की मुखौटे
छिपाते हुए सयुक्त राज्य अमरीका व्यापक जनत
के हितो के विरुद्ध अल्पसंख्यक जमीदाराना
शासनो और उनके सैनिक अनुचरो का समर्थन

कि सयुक्त राज्य अमरीका द्वारा दिये जा रहे सैनिक साज-सामान का 'एकदम नियत्रणहीन ढग से हत्या करने और मारने के लिए' उपयोग किया जायेगा। सल्वादोरियो के मुख्य हत्यारे सुरक्षा सेनाए हैं, जो सभवत चार अमरीकी साध्वियो की हत्या के लिए और कम से कम ५,००० वामपथियो को और वामपथी होने के मात्र सदिग्ध व्यक्तियो को जान से मार डालने के लिए जवाबदेह है।

"सी० आई० ए० के सल्वादोर के बारे मे सत्य को विकृत करने के पहले प्रयास सल्वादोरी वामपथियो को सोवियत सघ, क्यूबा, बुल्गारिया, वियतनाम, फिलस्तीनी मुक्ति सगठन, इथिओपिया और नीकारागुआ से विशाल मात्राओ मे हथियारो के भेजे जाने की रिपोर्टो तक ही सीमित थे।

"कहा जाता था कि वे सयुक्त राज्य अमरीका के विरुद्ध एक अतर्राष्ट्रीय षड्यत्र मे शामिल हैं। लेकिन – जैसे कि कहा जाता था – षड्यत्रकारी इसका ध्यान रखते हैं कि वे सिर्फ पश्चिमी देशो मे निर्मित हथियार ही मुहैया करें

"सी० आई० ए० का एक और सभाव्य सत्य-विरूपण प्रयास इस सहायता (अमरीकी सैनिक सहायता – अनु०) का पुनरारभ कराने, राष्ट्रपति रैगन के सैनिक हस्तक्षेप के 'तैयारशुदा सिद्धात' के लिए जमीन तैयार करने की ओर लक्षित था। १६ जनवरी, १६८१ को सयुक्त राज्य अमरीका भर मे अखबारो ने एक सशस्त्र छापामार दल के, जिसमे १०० से

है और उन्हे सेनाओं, पुलिस और हथियारों में प्र
दिया है। अपने लक्ष्यों को अतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म
अथवा, जैसे कि प्रचलित शब्दावली में कहा जाता
'अतर्राष्ट्रीय आतकवाद', से लड़ने की मुद्रा से
छिपाते हुए सयुक्त राज्य अमरीका व्यापक जनसमु
के हितों के विरुद्ध अल्पसख्यक जमींदाराना स्वेच्छ
शासनों और उनके सैनिक अनुचरों का समर्थन क
है।

"सयुक्त राज्य अमरीका स्वेच्छाचारी शासनों
अपने समर्थन का औचित्य-स्थापन इस दावे से क
है कि वे आधुनिकीकरण की सिद्धि के लिए
अतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म (अथवा 'अतर्राष्ट्रीय आत
वाद') के प्रसार को रोकने के लिए आवश्यक
दावा यह किया जाता है कि दमनकारी स्वेच्छाच
शासन सिर्फ अस्थायी ही हैं और कुछ समय की कुर
नियों के बाद लोगों की जिंदगी आधुनिकीकरण
बदौलत समृद्ध हो जायेगी। सल्वादोर में भू
अमरीकी राजदूत रॉबर्ट ह्वाइट ने कहा है कि उ
विदेश सेवा से अलग होने को, उनके ही शब्दों
राष्ट्रपति रैगन के सल्वादोर में सैनिक हस्तक्षेप
तैयारशुदा सिद्धात' का विरोध करने के का
मजबूर किया गया था। उन्होंने कहा कि इस दे
में सबसे बड़ा खतरा अमरीका द्वारा समर्थित सैनि
शासन में सबड दक्षिणपथी शक्तियों की मग
है। राजदूत ह्वाइट ने सल्वादोरी सरकार को सैनि

१००० तक आदमी थे, हमले के विवरण छपे
कहा गया कि यह हमला गभवन नीतागगुआ में हु
था। यद्यपि इन आक्रमणकारी छापामारो और स
दोरी सुरक्षा सेनाओ के बीच कथित लडाई पूरे दि
चली फिर भी सरकारी सैनिक न तो किन्ही छापाम
को मार ही सके, न कैदी बना सके और न
हथियार ही बरामद कर सके।

२२ जनवरी को एक दूसरे समुद्री हमले
खबर छपी, मगर इस बार भी हताहतों या कैदि
के बिना। फिर भी इसे पर्याप्त साक्ष्य मान लिया ग
और २४ जनवरी को संयुक्त राज्य अमरीका ने सल्व
दोरी सरकार के साथ ६५० लाख डॉलर सहाय
के समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये। आश्चर्यजनक
से, इन दस्तावेजो में इसका काफी प्रमाण दिया ग
था कि क्यूबाइयों और रूसियो ने सल्वादोरी विद्रोहि
को हथियार मुहैया किये थे। यह 'प्रमाण' विदे
विभाग के उस श्वेतपत्र के साक्ष्य का ७०% था

नामक गाव मे मोहीवा मातोम के परिवार
सदस्यो की जिनमे १० साल से कम आयु के
भी थे–पाशविक हत्या थी। नेशनल गार्ड
मिलकर ओर्डेन ने हाडूरामी सीमा पर सापुर
पास ६०० किसानो को मौत के घाट उतारा।

स्टयूअर्ट क्लैपर कहते है कि एक और रा
सगठन रोबर्तो द'ऑब्युस्सोन के नेतृत्व मे
योद्धा सघ है जो "सभी मृत्यु दलो मे स
सर्वाधिक राजनीतिक है। द'ऑब्युस्सोन ने व
मे अतर्राष्ट्रीय पुलिस अकादमी मे प्रशिक्षण
लिया था और जनरल रोमेरो के अधीन गु
व्यवस्था के उपप्रधान की हैसियत से काम किया
जहा उसकी निगरानी मे यत्रणाए दी जाती थी
कहा जाता है कि उसने खुद दर्जनो लोगो को
मे [illegible]

"रैगन ने घोषित किया कि सल्वादोर में उन्
राजदूत डीन हिंटन होंगे। हिंटन १९६६ में १९
तक – अल्येंदे सरकार के खिलाफ सी० आई० ए० के
प्रचंड काले प्रचार-कार्य की अवधि भर – सान्तियागो
चिली में काम कर चुके हैं।"*

अपने लेख में क्लैपर इसका प्रमाण उद्धृत करते
है कि सल्वादोर में अमरीकी आदेशों से किये
तथाकथित कृषिक सुधार में सी० आई० ए० की
प्रत्यक्ष सहभागिता है। यह सुधार अमरीकी स्वत
श्रम विकास संस्थान के निदेशन में किया
रहा है, जो ए० एफ० एल० – सी० आई० ओ
(अमरीकी श्रम संघ – औद्योगिक संगठन महासं
का एक अनुगामी है और अकसर सी० आई० ए
के साथ एक ही संगत में पाया जाता है। इस सुधा
के प्रणेता वाशिंगटन विश्वविद्यालय के विधि विभाग
के प्रोफेसर रॉय प्रॉस्टरमैन हैं, जिन्होंने कभी दक्षि
वियतनाम के लिए कृषिक सुधार कार्यक्रम तैयार कि
था। यह कार्यक्रम सी० आई० ए० की फीनिक्स
संक्रिया का अंग था, जिसके दौरान मुक्ति सेना
[illegible]

f

द
म
–
१९
११

है। अमरीकी हथियार और सैनिक साज-सामान सं
जर्नी मान-सल्वादोर पहुचाये जा रहे है। दो
पैंटागान सल्वादोर में अमरीकी सैनिक सलाह
की संख्या को बढ़ाये जा रहा है, जो – जैसे कि
है – अब भी बहुत समय से सैनिक कार्रवाई
प्रत्यक्ष भाग लेने आ रहे है।

छापामारो के साथ संघर्ष मे असफलताओं मे
घबराकर चरम दक्षिणपक्षीय तत्वो से निर्मित सल्व
सैन्य नेता और मृत्युदूत टुकडिया नागरिक अ
के खिलाफ दमन-चक्र चला रहे हैं। उदाहरण के
सल्वादोरी वैधानिक चर्च के एक मानवाधिकार
दल के वक्तव्य के अनुसार १९८३ के पहले छ म
मे ही मृत्युदूत टुकडियो द्वारा मारे गये लोगो
संख्या २,५२७ थी। और इस बीच वाशिंगटन व
और नीकारागुआ के विरुद्ध सशस्त्र आक्रमण
मध्य अमरीका तथा कैरीबियन मे सशस्त्र हस्त
की विस्तृत योजनाएं तैयार कर रहा है।

है। अमरीकी हेलिकाप्टर और [illegible] सलाहकार
व दो [illegible] पहुंचाये जा रहे हैं। [illegible]
[illegible] में अमरीकी सैनिक [illegible]
की संख्या का बढ़ना जा रहा है जो—जैसे कि
है—अब भी बहुत समय से सैनिक कार्रवाई
इसका अंग बना जा रहा है।

ग्वाटेमाला के साथ संघर्ष में [illegible]
शासक वाम दक्षिणपंथी शक्तियों में निर्दिष्ट [illegible]
सैन्य सत्ता और मृत्युदूत टुकड़ियां नागरिक [illegible]
के खिलाफ दमन-चक्र चला रहे हैं। उदाहरण के लि
सल्वादोरी वैधानिक संघ के एक मानवाधिकार
दल के वक्तव्य के अनुसार १९८३ के पहले छः म
में ही मृत्युदूत टुकड़ियों द्वारा मारे गये लोगो
संख्या २५२७ थी। और इस बीच वाशिंगटन
और नीकारागुआ के विरुद्ध सशस्त्र आक्रमण
मध्य अमरीका तथा कैरीबियन में सशस्त्र हस्त
की विस्तृत योजनाएं तैयार कर रहा है।

राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में विचार-विमर्श के
अंगीकृत इन योजनाओं में आर्थिक राजनीतिक
प्रचारात्मक उपायों के एक पूरे सिलसिले की कल्
की गयी है। पश्चिमी समाचारपत्रों की खबरों
अनुसार राष्ट्रपति रैगन और उनके सहकारी इस निष्
पर पहुंचे हैं कि मध्य अमरीका में अमरीकी सै
उपस्थिति में जबरदस्त वृद्धि करना अपरिहार्य
विशेषकर हाडूरास में अटलांटिक तट पर एक विश
अमरीकी फौजी अड्डा बनाने का इरादा किया जा र

कि इस समय वे नीकारागुआ में प्रत्यक्ष सैनिक हस्
के कगार पर पहुंच गयी है। मनोवैज्ञानिक दबाव
और खुला सैनिक तनाव भड़काने के इरादे से अ
राष्ट्रपति ने जून १९८३ में ६,००० सैनिकों
लेकर अमरीकी नौसेना के एक विमान बेड़े को
छोटे से मध्य अमरीकी देश के तटों की ओर
का आदेश दिया। इसी के साथ-साथ वाशिंगट
अपनी आक्रामक योजनाओं के कार्यान्वयन में
प्रस्थान-स्थल और आज्ञाकारी साधन की हैसिय
उपयोग करने के लिए हाडूरास को भारी
सहायता और आर्थिक अनुदानों की मंजूरी दी। व
टन का गुप्त युद्ध अधिकाधिक स्पष्टतापूर्वक खु
खुले युद्ध का स्वरूप ग्रहण करना शुरू कर चुक

१९८३ के अंत में वाशिंगटन द्वारा सिखाये
हथियारबंद किये हुए प्रतिक्रांतिकारी गिरोहों ने नी
गुआ की नागरिक आबादी के खिलाफ नये
अपराध किये। हाडूरास से हिनोतेगा डिपार्टमें
घुस आये २००० डाकुओं ने खेतों में काम क
१७ किसानों को मौत के घाट उतार डाला।
दूसरे गिरोह ने, जो सेलाई डिपार्टमेंट में घुस
था, कैथोलिक बिशप सैल्वाडोर श्लैफर की
हत्या की (प्रसंगत श्लैफर अमरीकी नाग
थे)।

नीकारागुआ के खिलाफ प्रच्छन्न युद्ध के अमरीक
सूत्रधारों ने भाड़े के हत्यारों की कार्रवाइयों को सक्रि

बात यह है कि नवंबर से लेकर फरवरी तक हिनोतेगा, मतागाल्प और नूएवा सेगोविया डिपार्टमेंटों में, अर्थात देश के उत्तर-पश्चिमी भाग के वनाच्छादित पहाड़ी इलाकों में जहां प्रतिक्रांतिकारी गिरोह कहीं ज्यादा आसानी से अपना काम कर सकते हैं, काफी की फसल बटोरी जाती है। कॉफी बागानों में किसानों के साथ मजदूर और विद्यार्थी स्वयंसेवकों की टोलियां भी काम कर रही होती हैं। स्थानीय निवासियों और उनकी मदद करने आये हुए स्वयंसेवकों को आतंकित करना और इस तरह देश के लिए कपास जैसी ही महत्वपूर्ण निर्यात की वस्तु तथा विदेशी मुद्रा की कमाई के मुख्य स्रोत काफी की फसल के बटोरे जाने में विघ्न डालना प्रतिक्रांतिकारी गिरोहों के धावों का परंपरागत लक्ष्य रहा है।

इस बार हिनोतेगा डिपार्टमेंट में घुस आये सामोज़ाइयों की तादाद इतनी बड़ी थी कि स्पष्टतः उनके सामने एक और लक्ष्य भी रखा गया था किसी बड़े आबादी केंद्र पर कब्जा करके वहां "अस्थायी सरकार" की स्थापना की घोषणा कर देना, जो फिर तुरंत ही "सहायता" के लिए संयुक्त राज्य अमरीका से और हाडुरास, सल्वादोर तथा ग्वाटेमाला की अमरीका-समर्थक सरकारों से अपील करती।

सामोज़ाइयों की बड़ी भारी संख्या के बावजूद सीमावर्ती डिपार्टमेंटों में तैनात रिजर्व फौज की बटालियनें और प्रादेशिक जन-मिलिशिया के दस्ते उनका सफलतापूर्वक मुकाबला कर रहे हैं।

मोजाबीक की जनवादी सरकार के विरोधियों के सशस्त्र गिरोह पहले अपनी कार्रवाइयां रोडेशियाई प्रदेश से किया करते थे, मगर देशभक्त शक्तियों की विजय के बाद उन्हें जिबाब्वे में भागना पड़ा। लदन की 'न्यू एफ्रिकन' पत्रिका के अनुसार उन्हें पूर्वी ट्रांसवाल (दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य) में शरण मिली। दक्षिण अफ्रीकी सेना और भूतपूर्व रोडेशियाई सेना के प्रशिक्षक आतंकवादियों को विशेष शिविरों में प्रशिक्षण देते हैं।

सी० आई० ए० की योजनाओं में मोजाबीक राष्ट्रीय प्रतिरोध के दस्यु-दलों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि वे मोजाबीक में अमरीकी ध्वंसकार्य को सुगम बनाते हैं। इसके अलावा, सी० आई० ए० प्रति-क्रातिकारी भूमिगत आदोलन के पुर्तगाली प्रतिक्रिया-वादियों के साथ, जो मोजाबीक में पुरानी व्यवस्था को फिर से स्थापित करना चाहते हैं, सपर्कों को भी समन्वित करती है। सी० आई० ए० के साथ अपने सपर्कों के लिए मशहूर और मोजाबीक में पुर्तगाली अभियान सेना के भूतपूर्व कमांडर जनरल दी अरि-यागा १६८० में प्रतिक्रातिकारियों से मिलने के लिए दक्षिण अफ्रीका गये थे। उल्लेखनीय है कि इसके बाद मोजाबीकी सरकार के खिलाफ मोजाबीक राष्ट्रीय प्रतिरोध की छेड़छाड़ की कार्रवाइयां सहसा बहुत बढ़ गयीं।

सी० आई० ए० के जासूसी जाल के रहस्योद्घाटन के सिलसिले में मोजाबीकी सुरक्षा मंत्रालय द्वारा जारी

किये गये एक वक्तव्य में कहा गया है कि "सी०
ए० स्वतंत्र अफ्रीकी देशों में अस्थिरता लाने के
में दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य का प्रतिक्रांतिकारियों
दस्यु-दलों के मुख्य अड्डे की तरह उपयोग करत
यह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि दक्षिणी अफ्रीका में
अफ्रीकी गणराज्य साम्राज्यवाद की ध्वंसात्मक
नीति का मुख्य उपकरण बन गया है।"

मोज़ाबीक में सी० आई० ए० के जासूसी
के रहस्योद्‌घाटन ने वाशिंगटन को नाराज़ कर
अमरीकी प्रशासन ने जासूसी के आरोपों को
अस्वीकार करते हुए और मोज़ाबीक को मज
के उद्देश्य से उसे खाद्य पदार्थों की पूर्ति सहित
तरह की सहायता के निलंबन की घोषणा क

मोज़ाबीक के विदेश मंत्री ज़ोआकीम चिस्स
इस अमरीकी निर्णय को स्वतंत्र अफ्रीका के
आर्थिक युद्ध का अभिन्न अंग बताया। रैगन
ने मोज़ाबीक लोक गणराज्य के खिलाफ, जिसने
आई० ए० पर हाथ उठाने की जुर्रत की थी, ये
लागू करने का निर्णय कितनी आसानी और
से ले लिया! ये निंद्य कदम उठाने में अमरीकी
को सिर्फ कुछ ही दिन लगे। दूसरी तरफ, न
दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आर्थिक प्रतिषेधों का
जाना रोकने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका ने
सभी कुछ किया है और किये जा रहा है।

मोज़ाबीक में सी० आई० ए० का भंडाफो
अभी कुछ ही महीने हुए थे कि उसका एक न

नामा सामने आया। जून १९८१ में ज़ाबियाई सरकार ने जासूसी के आरोप पर दो अमरीकी राजनयज्ञों को देश से निकाल दिया तथा चार और अमरीकियों को अवांछित व्यक्ति घोषित कर दिया।

ज़ाबियाई समाचारपत्रों के अनुसार देश के सुरक्षा अभिकरणों ने केनैथ कौंडा सरकार को उलटने के एक षड्यंत्र का पता चलाया था। इसकी योजना सी० आई० ए० द्वारा दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर्या के सहयोग से तैयार की गयी थी। साज़िश को कार्यरूप दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य में भरती किये गये भाड़े के सैनिकों द्वारा दिया जाना था। उन्हें राष्ट्रपति कौंडा तथा देश के अन्य नेताओं की हत्या करनी थी। षड्यंत्र के एक अन्य रूपांतर के अनुसार सत्ता-परिवर्तन केनैथ कौंडा की अफ्रीकी एकता संगठन की १८वीं महासभा के दूसरे अधिवेशन में भाग लेने के लिए नैरोबी यात्रा के समय किया जाना था। षड्यंत्र के सफल हो जाने की सूरत में सी० आई० ए० सत्ता की बागडोर सेना तथा राजकीय तंत्र में भरती किये गये सी० आई० ए० एजेंटों से निर्मित कठपुतली सरकार को सौंप देती।

अगस्त, १९८१ में अमरीकी अख़बार 'वॉल स्ट्रीट जरनल' ने ख़बर दी कि सी० आई० ए० ने मॉरीशस जुझारू आंदोलन (एम० एम० एम०) के महासचिव पोल बेरांझे की हत्या की योजना तैयार की थी।

भला पोल बेरांझे ने सी० आई० ए० का गुस्सा मोल लेने के लिए क्या किया था?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए 'अफ्रीक-आज़ी'

कतई बरदाश्त नहीं करेंगे कि मॉरीशस समाज
पथ को अंगीकार करे और गुटनिरपेक्षता की
पर चले। बात यह है कि हिंद महासागर में
अमरीकी सैनिक अड्डा दीएगो गार्सीआ द्वीप मॉरी
की भूमि है और मॉरीशस की प्रगतिशील शक्ति
इस टापू पर अमरीकी सेना के गैरकानूनी
का अंत किये जाने की अधिकाधिक माग
रही हैं।

दीएगो गार्सीआ का पैटागॉन के लिए क्या म
है, यह समझने के लिए जरा कुछ तथ्यों पर
डालिये। १६७५ में ग्रेट ब्रिटेन द्वारा यह टापू स
राज्य अमरीका को "पट्टे पर" दिये जाने के
वाशिंगटन ने वहां सैनिक अड्डे के निर्माण में ३२०
डॉलर लगाये। १६८१ के आरंभ में पैटागॉन ने
में उसके "आधुनिकीकरण" के लिए १५८६
डॉलर की माग की। दीएगो गार्सीआ को पश्चि
प्रशांत, दक्षिण एशिया, फारस की खाड़ी तथा
अफ्रीका से लेकर दक्षिण अटलांटिक तक के
मौसैन्य में समस्त "द्रुत विनियोजन शक्तियों" की
याओं का समायोजन करने का मुख्य नौसैनिक
माना जाता है। दीएगो गार्सीआ आधुनिकतम, म
कीय रॉकेटों से लैस पनडुब्बियों सहित परमाण
पनडुब्बियों के अड्डे का काम दे सकता है।

यही कारण है कि पैटागॉन मॉरीशस की
द्वारा दीएगो गार्सीआ के वापस किये जाने की

भाग को 'संयुक्त राज्य अमरीका की राष्ट्रीय सुरक्षा' के लिए खतरे की तरह समझता है।

यही कारण है कि पोल वेगाफ्रे सी० आई० ए० की गुप्त फाइलों में 'पहले नंबर के शत्रु' की हैसियत रखते हैं।

मारीशस में सी० आई० ए० के पर्दाफाश से पैदा हुई नाराजी की लहर अभी शांत भी न हो पायी थी कि लैंग्ली की एक नयी गुप्त योजना प्रकाश में आ गयी। यह लीबियाई नेता कर्नल मुअम्मर कद्दाफी की हत्या करने की योजना थी।

पोल वेगाफ्रे की ही भांति मुअम्मर कद्दाफी भी अफ्रीका में अमरीकी प्रशासन के मुख्य शत्रुओं की सूची में हैं। कारण? कारण यह कि लीबिया राष्ट्रीय मुक्ति की शक्तियों और उन स्वतंत्र देशों को सहायता देता है, जो अफ्रीका तथा मध्य-पूर्व के मामलों में साम्राज्यवादी हस्तक्षेप का अविचल विरोध करते हैं और अमरीकी ध्वंसकार्य का प्रतिरोध करते हैं। जैसे कि अमरीकी पत्रिका 'न्यूज़वीक' ने अपने ३ अगस्त १९८१ के अंक में कहा था, यही कारण था कि सी० आई० ए० ने कर्नल कद्दाफी के "आखिरी तौर पर" सत्ता से अलग किये जाने की योजना तैयार की।

लीबियाई नेता की हत्या का दायित्व सी० आई० ए० ने अपने एक भूतपूर्व कर्मी एडविन विल्सन को सौंपा। हत्या की यह योजना अमरीकी गुप्तचर्या की शानदार परंपरा के अनुरूप ही थी। अमरीकी अखबार 'वाशिंगटन पोस्ट' के अनुसार कर्नल कद्दाफी की हत्या

उनके शरीर मे "एक ऐसी काली मक्खी की, जिसकी लीबिया मे भरमार है, शक्ल के मन्हे-से डार्ट द्वारा"* एक घातक विष का प्रवेश करवाकर की जानी थी।

विश्व प्रेस मे खबर के आ जाने के कारण सी० आई० ए० की ये योजनाए साकार न हो सकी, मगर इससे वाशिंगटन का लीबिया के विरुद्ध नयी आतंकवादी योजनाओं का तैयार करना बद नही हो गया। अमरीकी जनमत का ध्यान १५ मई, १६८१ को अमरीकी काग्रेस अनुसधान सेवा द्वारा अफ्रीका मे अमरीकी प्रभाव को फैलाने तथा सुदृढ करने के उद्देश्य से "लीबिया के विरुद्ध कार्रवाइयो" को तेज करने के बारे में प्रकाशित रिपोर्ट की तरफ गया। इस रिपोर्ट में उत्तरी अफ्रीका में वाशिंगटन के वास्तविक लक्ष्यों को प्रकट किया गया था

–इस प्रदेश मे सयुक्त राज्य अमरीका के साथ सामान्य हित रखनेवाले देशों को "लीबियाविरोधी आम राय" बनाने के लिए अफ्रीकी एकता सगठन का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना,

–इस प्रदेश के देशो को सैनिक सहायता बढाना,

–कद्दाफी को डराकर रोकने के साधन के रूप में इस प्रदेश में कारगर अमरीकी सैन्य उपस्थिति का निर्माण करना।

लगता है कि कद्दाफी की हत्या इसी योजना का अग थी। और इसीलिए अमरीकी प्रशासन द्वारा

---

* *Washington Post*, 1981, April 29

सभी सोवियतविरोधी कार्रवाई उत्प्रेरित की थी।

इसमें कोई अधिक सफलता भी नहीं।

जुलाई 1981 में सीनेट विदेश संबंध समिति के सामने बोलते हुए अफ्रीकी मामलों के लिए उपसहायक विदेश मंत्री चेस्टर क्रोकर ने कहा कि संयुक्त राज्य अमरीका लीबिया के दुस्साहसवाद और अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के समर्थन के खिलाफ का प्रतिरोध करनेवाले किसी भी देश की सहायता बढ़ाने के लिए तैयार है। इसके फौरन बाद ट्यूनीशिया को अमरीकी सैनिक सहायता एकदम बढ़ाकर 500 लाख डॉलर से 1500 लाख डॉलर और सूडान की 300 लाख डॉलर से 1000 लाख डॉलर कर दी गयी। 19 अगस्त को सिदरा की खाड़ी पर नियमित गश्ती उड़ान करते दो लीबियाई विमानों को अमरीकी छठे बेड़े के एक विमान-वाहक पोत से उड़े अमरीकी विमानों ने मार गिराया। लीबियाई विमानों पर इस अकारण आक्रमण ने संपूर्ण अरब विश्व ही नहीं, पश्चिमी यूरोप में भी सख्त नाराज़ी पैदा की। प्रगतिशील प्रेस ने इस दस्यु-कार्य को लीबिया के विरुद्ध संयुक्त राज्य अमरीका के आक्रामक इरादों का सबूत बताया। मगर अमरीकी अधिकारियों ने पाखंड-पूर्वक कहा कि संयुक्त राज्य अमरीका अपने को दोषी नहीं मानता और ज़रूरत पड़ने पर लीबिया के खिलाफ भविष्य में भी ऐसे ही कदम उठायेगा।

लीबिया में अस्थिरता पैदा करने की अमरीकी योजना का ही एक हिस्सा बाद की घटनाओं के सिल-सिले में व्यापक लीबियाविरोधी अभियान का छेड़ा

जाना है। जैसे कि ज्ञात है, दिसबर, १६८० में चाद की विधिसम्मत सरकार के अनुरोध पर लीबियाई सेनाए वहा भेजी गयी थी। चाद गणराज्य के नेता गूकूनी उएद्दे ने लीबियाई सरकार से उन प्रतिक्रांतिकारियो का सामना करने के लिए सहायता देने की अपील की थी, जो मिस्र और सयुक्त राज्य अमरीका के प्रत्यक्ष समर्थन से सूडान के प्रदेश से हमला कर रहे थे। उएद्दे ने बार-बार इस बात को दुहराया कि लीबियाई सेनाए चाद मे वैध आधार पर और पूर्णत सयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र की भावना के अनुसार ही मौजूद हैं और जैसे ही चाद की सरकार आवश्यक समझेगी, उन्हे वापस भेज दिया जायेगा।

लेकिन अमरीकी प्रशासन सहज बुद्धि के विरुद्ध फिर भी यही दावा करता रहा कि "लीबिया ने चाद पर गैरकानूनी तरीके से हमला किया है," कि वह चाद को "अपने मे मिला लेने" की कोशिश कर रहा है और "उत्तरी अफ्रीका मे अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहता है"। अमरीकी अधिकारियों ने अफ्रीकी एकता सगठन के अधिकाश सदस्यो को लीबिया के खिलाफ भडकाने की कोशिश मे जबर्दस्त प्रचार अभियान छेड दिया। सयुक्त राज्य अमरीका विशेषकर १६८३ मे लीबिया की राजधानी त्रिपोली मे अफ्रीकी एकता सगठन की महासभा का अधिवेशन न होने देने के लिए चाद विवाद का उपयोग करना चाहता था। जब अफ्रीकी एकता सगठन ने चाद मे लीबियाई सेनाओ की जगह पर अन्तअफ्रीकी शान्तिरक्षक सैन्य

जा रहा है। लीबिया के विरुद्ध इस साल उठाये शोर ने फीदेल कास्त्रो पर उस समय छेड़े वाग्बाणों की याद दिला दी है, जब कैनेडी कोचीनोस की खाड़ी की कार्रवाई की योजना बना रहे थे।"

दिसंबर, १६८१ में कर्नल कद्दाफी से अमरीकी रेडियो तथा टेलीविज़न प्रसारण निगम ए० बी० सी० (अमेरिकन ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन) के संवाददाता ने भेंटवार्ता की। इस भेंटवार्ता का सारांश यहां दिया जा रहा है

"प्रश्न· अमरीकी सरकार कहती है कि उसके पास इसका प्रमाण है कि आपने राष्ट्रपति रैगन तथा अन्य शीर्षस्थ अमरीकी अधिकारियों को मारने के लिए हत्या-दल भेजे है। क्या आप इसके बारे में कुछ कहेंगे?

उत्तर· यह सुनते-सुनते हमारे कान पक गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति की हत्या के खिलाफ है। किसी भी आदमी की हत्या करना हमारे चरित्र, हमारे आचरण का अंग नहीं है।

प्रश्न अगर राष्ट्रपति के विरुद्ध लीबियाई षड्यंत्र की रिपोर्टें सही नहीं हैं, तो आपके ख्याल में संयुक्त राज्य अमरीका आप पर ये आरोप क्यों लगा रहा है?

उत्तर: इसलिए कि हम अमरीका के आगे सिर झुकाने से इन्कार कर रहे हैं और हमने अमरीका का प्रभुत्व मानने से इन्कार किया है और हमने अमरीका के गुलाम होने से इन्कार किया है। हम एक ऐसी

दल भेजने का सुझाव दिया, तो सयुक्त राज्य अमरीका ने शोर मचाया कि लीबिया चाद से जाने को कभी सहमत न होगा।

अनुमान लगाया जा सकता है कि वाशिंगटन को तब कैसा धक्का लगा होगा, जब लीबियाई सरकार ने अफ्रीकी एकता सगठन के सुझाव का सख्ती से पालन करते हुए अपनी सेनाओं को एक सप्ताह के भीतर ही चाद से वापस बुला लिया। अमरीकी प्रशासन ने यह कहकर अपनी खिसियाहट छिपाने की कोशिश की कि लीबियाई फौजों की वापसी के पीछे जरूर कोई "दुष्ट इरादे" है।

दिसबर, १९८१ मे सी० आई० ए० ने एक नया लीबियाविरोधी तमाशा खड़ा किया। लैग्ली के कर्णधारो ने राष्ट्रपति रैगन की हत्या के एक लीबियाई षड्यत्र(!) से सबधित "परम गोपनीय सूचना" के प्रेस मे "पहुचने" का इतजाम किया। इस आशय की बेसिरपैर की अफवाहे फैलायी गयी कि राष्ट्रपति तथा उनके सहकारियो का खात्मा करने के लिए "दो लीबियाई हत्या-टोलिया" सयुक्त राज्य अमरीका भेजी गयी है। टेलीविजन, रेडियो और प्रेस सी० आई० ए० द्वारा आविष्कृत "षडयत्र" के बारे मे रोज नये-नये चटपटे किस्से पैदा करते। सयुक्त राज्य अमरीका मे लीबिया-विरोधी प्रचार अपने चरम पर पहुच गया। लदन के 'ऑब्जर्वर' अखबार ने इस सिलसिले मे लिखा "लगता था कि जैसे देश को लीबिया पर सैनिक प्रहार जैसी किसी निश्चयात्मक कार्रवाई के लिए तैयार किया

जा रहा है। लीबिया के विरुद्ध इस मान उठाये शोर ने फीदेल कास्त्रो पर उस समय छेड़े वाग्बाणों की याद दिला दी है, जब कैनेडी कोचीनोस की खाड़ी की कार्रवाई की योजना बना रहे थे।"

दिसंबर, १६८१ में कर्नल कद्दाफी से अमरीकी रेडियो तथा टेलीविजन प्रसारण निगम ए० बी० सी० (अमेरिकन ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन) के संवाददाता ने भेंटवार्ता की। इस भेंटवार्ता का सारांश यहां दिया जा रहा है

"प्रश्न: अमरीकी सरकार कहती है कि उसके पास इसका प्रमाण है कि आपने राष्ट्रपति रैगन तथा अन्य शीर्षस्थ अमरीकी अधिकारियों को मारने के लिए हत्या-दल भेजे हैं। क्या आप इसके बारे में कुछ कहेंगे?

उत्तर: यह सुनते-सुनते हमारे कान पक गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति की हत्या के खिलाफ हैं। किसी भी आदमी की हत्या करना हमारे चरित्र, हमारे आचरण का अंग नहीं है।

प्रश्न: अगर राष्ट्रपति के विरुद्ध लीबियाई षड्यंत्र की रिपोर्टें सही नहीं हैं, तो आपके खयाल में संयुक्त राज्य अमरीका आप पर ये आरोप क्यों लगा रहा है?

उत्तर: इसलिए कि हम अमरीका के आगे सिर झुकाने से इन्कार कर रहे हैं और हमने अमरीका का प्रभुत्व मानने से इन्कार किया है और हमने अमरीका के गुलाम होने से इन्कार किया है। हम एक ऐसी

छोटी सी कौम है जो आजाद रहना चाहती है अमरीका सारी दुनिया पर दबदबा रखना और दुनि को अमरीका के दुश्मनों या गुलामों में बाटना चा है और हम गुलाम होने से इन्कार करते है।

प्रश्न आपके देश और संयुक्त राज्य अमरी के बीच विरोध वास्तव में हिंसा की तरफ से जा र है। अमरीकी छठे बेड़े के विमानों ने आपके विमानों को मार गिराया है क्या आपने कुछ क की अमरीकी से बदला लेने की सोची है?

उत्तर यह बदले की बात नही है, यह हमा देश की रक्षा की, हमारी प्रतिष्ठा की बात है। ह अपने सीमानों पर आनेवाली अमरीकी सेना के खिला लड़ने को तैयार हैं। हम अमरीका का सामन करने को तैयार हैं और हम अमरीका से लड़ने कतरायेंगे नही।"

सी० आई० ए० का झूठा शोर साबुन के बुलबुले की तरह फिस हो गया। लेकिन अमरीकी प्रशासन ने अपने कटु लीबियाविरोधी अभियान को पूर्ववत जारी रखा। साथ ही उसने अब आर्थिक प्रतिपेधों की धमकी भी दी। लीबिया में काम करनेवाले अमरीकियो को सरकारी तौर पर स्वदेश लौट आने की सलाह दी गयी, क्योकि उनकी जाने कथित रूप मे खतरे मे थी। राष्ट्रपति रैगन ने खुले तौर पर लीबियाई तेल रोक के अपने इरादो की के धमकियां वास्त-

मे भी खिलौनो और मिठाइयो के नीचे, जिन्हे कस्टम डिक्लेरेशन मे पाखडपूर्वक स्थानीय अपाहिज बाल-अस्पताल के लिए भेंटे बतलाया गया था, हथियार छिपे हुए निकले। जब "रग्बी खिलाडियो" ने देखा कि भेद खुल गया है, तो उन्होने बदूके निकाल ली। गोलिया चलने लगी। सेशैल्ज के सुरक्षा दस्तो ने दस्युओ को जल्दी ही काबू मे ले लिया। मुठभेड मे उनमे से कुछ मारे गये और सात को हिरासत मे ले लिया गया। शेप दस्यु एयर इडिया के एक विमान को हाईजैक करके दक्षिण अफ्रीका भाग गये

"रग्बी खिलाडी" दक्षिण अफ्रीकी तथा अमरीकी गुप्तचर्या सेवाओ द्वारा सेशैल्ज की सरकार का तख्ता उलटने के लिए भरती किये गये भाडे के सैनिक निकले। कागो मे अपने कारनामो के लिए कुख्यात कर्नल माइकेल होर, जो अपनी व्याधिकीय रक्तपिपासा के कारण "पागल माइक" के नाम से जाना जाता था, इन लोगों का नेता था। पागल माइक के गिरोह मे अमरीकी, ब्रिटिश, फ्रासीसी और न्यूजीलैडी नागरिक भी थे, मगर अधिकाश भडैती भूतपूर्व रोडेशियाई सुरक्षा-कर्मी थे, जो जिबाब्वे मे देशभक्त शक्तियो की विजय के बाद भागकर दक्षिण अफ्रीका चले गये थे।

भाडे के सैनिको मे से प्रत्येक को १,००० डॉलर मिले थे। कार्रवाई के सफल होने की सूरत मे प्रत्येक को १०,००० डॉलर और देने का आश्वासन दिया गया था।

बदी बनाये गये इन सैनिको मे से दो, रॉजर

इगलैड और ऑब्री ब्रुक्स, ने पूरी योजना पर प्रकाश डाला है। रॉजर इगलैड ने कहा कि "यह सत्ता-परिवर्तन का प्रयास था। हमने यह समझा था कि वह रक्तहीन होगा। सत्ता को हाथ मे लेने के बाद हमे उसे स्थानीय सरकार को सौपकर गायब हो जाना था।'

ऑब्री ब्रुक्स ने बतलाया कि उसे सेशैल्ज रेडियो पर दो टेपो का प्रसारण करना था जो वे लोग अपने साथ लेकर आये थे। 'पहला टेप आबादी को यह बतलाता था कि सत्ता बदलने के बाद कैसे और क्या किया जाना चाहिए और दूसरा टेप यह घोषित करता था कि सत्ताच्युत राष्ट्रपति ने सत्ता को फिर सभाल लिया है।"

जैसा कि जाच से पता चला, षड्यत्र की तैयारी मुकम्मल तरीके से की गयी थी और उसे कार्यरूप देने के लिए "योग्यताप्राप्त" विशेषज्ञो को चुना गया था। षड्यत्रकारियो का तो राष्ट्रपति पद के लिए भी अपना उम्मीदवार था–भूतपूर्व राष्ट्रपति जेम्स मैचेम, जिन्हे १६७७ मे सत्ताच्युत किया गया था। भावी सरकार का अपना "कार्यक्रम" तक था–पश्चिम-समर्थक विदेश नीति, अफ्रीका मे अमरीकी मुहिमबाजियो का पूर्ण समर्थन और नसलवादी दक्षिण अफ्रीका के साथ दोस्ताना सबध।

भला षड्यत्र की योजना को इतनी सावधानी के साथ किसने तैयार किया था? सेशैल्ज के भूतपूर्व राष्ट्रपति जेम्स मैचेम ने उससे किसी भी तरह के सरोकार से साफ इन्कार किया। दक्षिण अफ्रीकी सरकार

ने शब्दों में यह स्पष्ट किया कि उसे षड्यन्त्र की कोई भी जानकारी नहीं है। अमरीकी विदेश मन्त्रालय ने भी यह वक्तव्य [illegible] साथ जारी कर दिया कि यह सिद्धान्त ऐसे किसी प्रयासों के विरुद्ध है। दूसरे शब्दों में ऐसे किसी देश की सरकार में राजनीतिक व्यवस्था को बदलने के प्रय दिलचस्पी हो सकती थी वे ही दावा कर रहे थे कि उनका इस प्रयास में कोई संबंध नहीं है।

लेकिन इस प्रयास में भी यही हुआ कि जो लोग इस षड्यन्त्र के पीछे थे वे अपने सुरागों को पूरी तरह से नहीं छिपा पाये। ७ जनवरी, १९८२ को ब्रिटिश अखबार 'डेली टेलीग्राफ' में यह रिपोर्ट प्रकाशित की कि 'मामले की जाँच में सामने आनेवाला प्रमाण पश्चिमी गुप्तचर्या अभिकरणों, विशेषकर सेंट्रल इंटैलीजेंस एजेंसी, को पहले से जानकारी होने की ओर इंगित करता है और संभव है कि उन्होंने प्रच्छन्न समर्थन प्रदान किया हो।' ब्रिटेन की ही 'लेबर वीक्ली' पत्रिका के अनुसार यह मानने का हर कारण है कि सेशैल्ज के हमले को दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर्या और सी० आई० ए० – दोनों ने ही प्रायोजित किया था। आखिर यह सर्वज्ञात है कि संयुक्त राज्य अमरीका सेशैल्ज के राष्ट्रपति फ्रांस आल्बेर रेने की स्वतंत्र नीति से बहुत असंतुष्ट है, जो हिंद महासागर के और अधिक सैन्यीकरण की अमरीकी योजनाओं के विरोधी हैं। पत्रिका ने इंगित किया कि "यह एकदम साफ है कि अगर यह प्रयास सफल हो जाता, तो इस देश में सत्ता

पश्चिम-समर्थक सरकार के हाथों में आ जाती, जो गुटनिरपेक्षता की नीति को त्याग देती।" 'लेबर वीक्ली' ने आगे कहा कि "दक्षिण अफ्रीकी भाड़ैतियों में इस बात को बहुत से लोग जानते हैं कि सेशैल्ज में ध्वस्त गिरोह का साज़-सामान अमरीकी सी० आई० ए० के पैसे से हासिल किया गया था।"

सेशेल्ज के विदेश उपमंत्री जरेमी बोनेलैम के कथनानुसार सत्ता-परिवर्तन का यह प्रयास हिंद महासागर को नियंत्रण में लेने की अमरीकी रणनीति का अंग था। उन्होंने इसकी पुष्टि की कि नसलवादी दक्षिण अफ्रीका और सी० आई० ए० षड्यंत्र के प्रत्यक्ष संगठनकर्ता थे।

२७ मार्च, १९८२ को अमरीकी अखबार 'पीपुल्स वर्ल्ड' ने यह खबर दी कि सी० आई० ए० घाना में जैरी रॉलिंग्स की सरकार को उलटने की साज़िश रच रही है, जिसने १९८१ के अंत में सत्ता-ग्रहण करने के साथ अविचल साम्राज्यवादविरोधी नीति पर चलने के अपने निश्चय की घोषणा की थी। पत्र की सूचना के अनुसार इस षड्यंत्र की योजना सेशैल्ज योजना की कार्बन कॉपी थी।

सी० आई० ए० ने इस कार्य के लिए काफी रकम निर्धारित की और ब्रिटेन तथा अन्य देशों में भाड़े के सैनिकों की भरती करना शुरू कर दिया। लेकिन षड्यंत्र की तैयारी का भंडा तब फूट गया कि जब एक भड़ैती, ब्रिटिश सेना के भूतपूर्व अफसर निक हॉल ने प्रस्तावित सक्रिया की कुछ तफसीलें पत्रकारों को

जाहिर कर दी। रॉय के अनुसार सत्तापरिवर्तन दल्न की तैयारियां लगभग पूरी हो चुकी थीं और उसके घानाई सार्जेंट ब्लाहिर बेंजी ओरोरी वाशिंगटन में सी० आई० ए० से १८० ००० डालर अतिरिक्त नई नियों के लिए और इसके अलावा ६० ००० डालर, राजिसन को सत्म करने के लिए लेकर लदन पहुंच भी चुका था। भाडे के सैनिकों ने हथियार दक्षिण अफ्रीका में खरीदने का निश्चय किया। इसके बाद कई घानाई नगरों पर एकसाथ हमला किया जाना था और देश में शासनविरोधी असतोष फैलाया जाना था

सी० आई० ए० ने कितनी और ऐसी ही आतकवादी कार्रवाइयों की तैयारी की है? कौनसे अफ्रीकी राज्य अमरीकी प्रशासन की मुहिमबाजाना नीति के शिकार हो सकते हैं?

सयुक्त राज्य अमरीका द्वारा अफ्रीका मे अनुसृत अतर्राष्ट्रीय आतकवाद की नीति कितने ही नकाबों और तरीकों का उपयोग करती है और वे आसानी से पकड मे नहीं आते हैं। लेकिन देर-सबेर सच सामने आ ही जाता है और विश्व एक बार फिर साम्राज्यवाद की गर्हित और रक्तमय चालो से सिहर उठता है।

आज अफ्रीकी जन वाशिगटन द्वारा समय-समय पर बदले जानेवाले मुखौटो के पीछे देखना सीख चुके हैं। 'आफ्रीक-आजी' पत्रिका के अनुसार "अगर उसके हितो को खतरा होता है, तो सयुक्त राज्य अमरीका कैसी भी आतकवादी कार्रवाई का सहारा

ले सकता है।" वाशिंगटन किसी भी देश द्वारा अपने को नवउपनिवेशवाद से मुक्त करने के किसी भी प्रयास को संयुक्त राज्य अमरीका के "बुनियादी हितों" के लिए खतरा मानता है। 'आफ्रीक-आज़ी' पूछता है "क्या इस तरह के राजकीय आतंकवाद से भी बदतर किसी आतंकवाद की कल्पना की जा सकती है?"

न अमरीकी प्रशासन ही इस सवाल का कदाचित जवाब देगा और न सी० आई० ए० के सूत्रधार ही इसका जवाब देंगे – आखिर विश्व-प्रभुत्व के संघर्ष में आतंकवाद हमेशा ही उनका मुख्य हथियार जो रहा है।

ले सकता है।" वाशिंगटन किसी भी देश द्वारा अपने को नवउपनिवेशवाद से मुक्त करने के किसी भी प्रयास को संयुक्त राज्य अमरीका के "बुनियादी हितों" के लिए खतरा मानता है। 'आफ्रीक-आज़ी' पूछता है "क्या इस तरह के राजकीय आतंकवाद से भी बदतर किसी आतंकवाद की कल्पना की जा सकती है?"

न अमरीकी प्रशासन ही इस सवाल का कदाचित जवाब देगा और न सी० आई० ए० के सूत्रधार ही इसका जवाब देंगे – आखिर विश्व-प्रभुत्व के संघर्ष में आतंकवाद हमेशा ही उनका मुख्य हथियार जो रहा है!

सोग्सी शमोयस्की

मित्र-देशों के ही ख़िलाफ़...

जनवरी, १९८१ में इतालवी पत्रिका इल मेत्तीमन
में प्रकाशित एक भेंटवार्ता में रोनल्ड रैगन ने कहा
कि वह 'अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के उद्गम केंद्रों"
प्रहार करने की ठान चुके हैं। इस प्रकार औपचा
सत्ता ग्रहण के भी पहले अमरीकी राष्ट्रपति ने
अभियान छेड़ दिया, जिसे, तत्कालीन अमरीकी
देश मंत्री अलैग्ज़ेंडर हेग के शब्दों में, अमरीकी नी
में वही भूमिका अदा करनी थी, जो कार्टर
राष्ट्रपतित्व में "मानव-अधिकार" अभियान ने
थी। नये प्रशासन के बिलकुल प्रारंभिक दिनों से
हेग ने सोवियत संघ पर अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादि
को "प्रशिक्षित करने, पैसा देने और शस्त्र-सज्जित कर
का आरोप लगाना शुरू कर दिया।*

यह सोवियतविरोधी लांछन-अभियान अधिकांश
पश्चिमी यूरोप को ध्यान में रखकर छेड़ा गया थ
जो आतंकवाद की कष्टदायी जकड़ में ग्रस्त था। इस
ज़रिए मित्र-देशों को जताया गया कि यह सोविय

---

* *The New York Times, May 3, 1981, p 1*

सच ही है कि जो आतंकवाद की सहायता से नाटो देशों को कमज़ोर और अस्थिर करने की कोशिश कर रहा है। इस अभियान के संचालकों में एक ब्रिटिश पत्रकार रॉबर्ट मॉस भी थे, जिन्हें मिथ्या सूचना फैलाने का प्रभूत अनुभव था। यह कहना ही काफी होगा कि वह उस "विज्ञ-मंडल" में थे, जिसे सी० आई० ए० ने चिली में अन्येंदे सरकार के अस्थिरीकरण के लिए बनाया था। रोम में कार्यरत अमरीकी पत्रकार क्लेअर स्टर्लिंग भी इस गाड़ी पर सवार हो गयीं और उन्होंने झट से 'आतंक का जाल' नामक एक पुस्तक रच डाली। स्टर्लिंग की किताब को हाथ में लेकर सबको आंखों के आगे उसे नचाते हुए हेग कहते 'इसमें सभी कुछ कह दिया गया है!" लेकिन पत्रकारों का ध्यान दूसरी ही बात आकर्षित करती थी – मॉस के लेखों और स्टर्लिंग की पुस्तक में प्रमाणों का सर्वथा अभाव और पूर्ण एकतरफापन। अमरीकी हितों के लिए अतीव महत्वपूर्ण कहे जानेवाले अभियान की बुनियाद आश्चर्यजनक रूप से कमज़ोर थी।

अत यह प्रत्यक्ष था कि पेशेवर मिथ्यावादी मॉस की ईजादों और स्टर्लिंग की मनगढ़तों की अनुपूर्ति करने के लिए किसी ठोस चीज़ की सख्त ज़रूरत थी। सोचा यह जाता था कि इसमें मिथ्या सूचना के मामले में मुख्य स्रोत सी० आई० ए० अपना योग देगी। मगर सी० आई० ए० ने अचानक अपने हाथ खींच लिये। 'न्यूयार्क टाइम्स' के अनुसार ह्वाइट हाउस की सोवियत-विरोधी अभियान के लिए प्रमाण उपलब्ध करने की

सीन्योरा दोनीनी का पर्स

३ जुलाई, १६८१ को दोपहर के कुछ बाद नीस से आया एक विमान रोम के फ्यूमीचीनो हवाई अड्डे पर उतरा। मुसाफिर थोड़े से ही थे और धूप की तेज़ी से अलसाये कस्टम अधिकारी बिना ज्यादा मीन-मेख निकाले औपचारिकताएं पूरी कर रहे थे। सब कुछ ऐसे ही चल रहा था कि एक सुदर्शना स्वर्णकेशी ने मारीआ ग्रात्सीआ दोनीनी के नाम बना अपना पासपोर्ट उनके हाथों में दिया। अधिकारियों में अचानक जैसे बिजली सी दौड़ गयी – महिला के सारे सामान की बहुत बारीकी से जांच की जाने लगी, उनके पर्स की सीवनों को उधेड़ा गया और उसके अस्तर के नीचे छिपाये हुए कागज निकाल लिये गये। इन कागजों को ज़ब्त कर लिया गया और महिला को जेल पहुंचा दिया गया।

इन कागजों में इटली के ग्वार्दीआ दी फीनान्सा की कुछ परम गुप्त दस्तावेजें भी थीं, जिनमें अवैध लेन-देन में शामिल कुछ प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों के नाम थे। उनमें एक इतालवी मेसन लॉज* 'प्रोपागान्दा-२' के सदस्यों को लिखे पत्र भी थे और एक गुप्त अमरीकी दस्तावेज की फोटो प्रति भी थी।

इस तरह से पी-२ मैसन लॉज के "सम्मानी प्रधान" लीचिओ जेल्ली, जो सरकार द्वारा अपने पर मुकदमा

---

* फ्री मेसन समाज की शाखा अथवा मिलनस्थली। – सं०

उत्तर: कम से कम पाच। लेकिन वे सभी एक जैसे खतरनाक नही थे।

प्रश्न: इस तरह का पहला प्रयाग दिसबर, १६७० मे प्रिंस बोरगेजे ने किया था। मुलकर बतलाइये, क्या वह इटली मे लोकतत्र के लिए गभीर खतरा था?

उत्तर: नही। बोरगेजे शायद रोम तक को भी कब्जे मे लाने मे नाकाम रहते। मगर कुछ खून-खराबा बेशक हो सकता था।

प्रश्न: क्या रोंझा देई वेती षड्यत्र इससे ज्यादा खतरनाक था?

उत्तर: यह विद्रोह हो ही नही पाया। अलबत्ता षड्यत्रकारी अत्यत गभीर समस्याए पैदा कर सकते थे।

प्रश्न: एदगार्दो सोग्यो का विद्रोह इस तरह का तीसरा षड्यत्र था। उसके बारे मे आपका क्या खयाल है?

उत्तर: उसे सफेद विद्रोह भी कहा जाता था, क्योकि उसका उद्देश्य वास्तविक सत्ता-परिवर्तन नही था। सोग्यो सविधान को बदलने की अपनी योजना के लिए समर्थन प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन शक्ति का प्रयोग करने का उनका कोई इरादा नहीं था।

प्रश्न: और बाकी दो प्रयास?

उत्तर: वे सभवत सबसे खतरनाक थे। पहला विद्रोह अगस्त, १६७४ मे शुरू होनेवाला था। सेना के निम्नपदस्थ अफसरो के एक गुट ने कुछ उच्चतम

अफसरों के साथ मिलकर षड्यंत्र रचा था और इसे रोम की यात्रा में मन के लिए तैयार था। योजना के अनुसार राष्ट्रपति सेग्नी को गिरफ्तार कर लिया जाना था जिन्हें षड्यंत्रकारी विद्रोह के पक्ष में झुकने को विवश करना चाहते थे। षड्यंत्र का बिलकुल आखिरी घड़ी में ही निवारण किया जा सका। दूसरा विद्रोह एक महीने बाद होनेवाला था। इसमें बोरगेज़े के अनुगामी भी शामिल थे। इसका भी निवारण कर दिया गया।

पांच साल में पांच षड्यंत्र वैसे इनके अलावा भी कितनों ही का उल्लेख किया जा सकता है। साठवें दशक में जनरल दे लोरेन्सो ने, जो पहले सैनिक पुलिस और बाद में सीफार के प्रधान रहे थे सत्ता दबोचने की कोशिश की। उनकी योजना में (जिसका कूटनाम सोलो था) वामपंथी पार्टियों तथा मजदूर संघों पर पाबंदी लगाये जाने और उनके नेताओं की गिरफ्तारी की कल्पना की गयी थी। इस षड्यंत्र का परदाफाश होने के बाद सीफार का पुनर्गठन हुआ और उसका नाम सीद हो गया। लेकिन नाम में परिवर्तन से सगठन के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आया। नाटो की गु

में इटली एक देशव्यापी शासनविरोधी षड्यंत्र के साये में ही रहता रहा है। उसमें भाग लेनेवाले बदलते रहते हैं, इसी प्रकार जिन गुटों के हाथ में पहल रहती है, वे भी बदलते रहते हैं मगर उसका लक्ष्य वही बना रहता है – जनवादी शक्तियों पर प्रहार करना, श्रमिक आंदोलन को खून में डुबो देना और देश में प्रतिक्रियावादी तानाशाही की स्थापना करना।

जनरल मालेत्ती ने इन षड्यंत्रों के खतरे को जान-बूझकर कम करके दिखलाया था। सीन्योरा दोनीनी के पर्स की ही तरह उनकी इस भेंटवार्ता में भी एक गुप्त खाना है। फासिस्ट प्रिंस वलेरीओ बोरगेज़े ने अपने गिरोहों को गृह मंत्रालय के शस्त्रागार के हथियारों से लैस किया था और षड्यंत्रकारी सार्वजनिक इमारतों और टेलीविजन केंद्र को अपने नियंत्रण में लेने ही वाले थे।

विद्रोही बोरगेज़े को एक 'नया मुसोलिनी' घोषित करने की तैयारियां कर रहे थे। वे सेना में अपने हमदर्दों – जनरल ऊगो रिच्ची की कमान में स्थित टैंक कोर और अमरीकी अड्डों के निकट तैनात सेना की तीसरी कोर – को अपनी सहायता के लिए बुलाने की सोच रहे थे। सैनिक गुप्तचर्या के कर्नल आमोस स्पियात्सी के नेतृत्व में बागी टुकड़ियों को रोम को इटली के मजदूरप्रधान उत्तरी भाग से काट देना था।

मालेत्ती के दावों के विपरीत भूतपूर्व छापामार और पी-२ लॉज के सदस्य एदगार्दो सान्यो (उन्होंने

जनरल वैस्टमोरलैंड का "गुटका"

मारीआ ग्राम्मीआ के कागजों में पायी गयी गुप्त अमरीकी दस्तावेज़ थी 'स्थिरीकरण सक्रिया आसूचना–विशेष क्षेत्र'। यह गुटका १९७० में अमरीकी सयुक्त स्टाफ-अध्यक्ष समिति के प्रधान और वियतनाम में अमरीकी सेनाओं के भूतपूर्व सेनाध्यक्ष जनरल वैस्टमोरलैंड के निदेशन में तैयार किया गया था। इस दस्तावेज़ के उद्धरण अमरीकी, फ्रांसीसी, इतालवी और स्पेनी प्रेस में अनेक बार उद्धृत किये गये हैं और वाशिंगटन ने हर बार इसकी प्रामाणिकता को कबूल करने से इन्कार किया है। बेशक, जेल्ली को इसकी जानकारी थी और इस बार उन्होंने उसे फासिस्ट साप्ताहिक 'बोरगेझे' में प्रकाशनार्थ भेजा था, जिसके संपादक उनके मित्र और पी-२ लॉज के सदस्य (सदस्यता कार्ड नं० २१२७) मारीओ तेदेस्की थे। ऐसा करने का उद्देश्य पूर्णत स्पष्ट था–सी० आई० ए० के टहलुए जेल्ली ने इसकी पुष्टि की थी कि दस्तावेज़ में सन्निहित कार्यक्रम प्रामाणिक है और पी-२ लॉज द्वारा अनुसृत नीति से मेल खाता है।

अमरीकी प्रशासन के राजनीतिक लक्ष्यों को प्रतिबिंबित करनेवाले इस गुटका की स्थापनाओं के अनुसार सयुक्त राज्य इसका एकमात्र निर्णेता है कि उसके पूर्ण समर्थन के भागी "शासन का स्वरूप" कैसा हो।

संगठनों का उपयोग करना सहायक सिद्ध हो सकता है।"*

अशांति पैदा करने के इस कुटिल निर्देश की यह व्यावहारिक शैली उस तथाकथित तनाव की रणनीति को प्रतिबिंबित करती है, जो अमरीकी षड्यंत्रकारियों और उनके इतालवी भगियों की तानाशाही शासन की बुनियाद तैयार करने के लिए लंबे समय से सहायता कर रही है।

इस कार्य-प्रणाली में मौलिक कुछ भी नहीं है। इसके लिए राइखस्ताग अग्निकांड का स्मरण कराना ही काफी होगा, जिसे हिटलरियों ने कम्युनिस्टों और विरोध-पक्ष का सफाया करने के लिए करवाया था। नाटो के रणनीतिज्ञों ने पश्चिम में वामपंथ के विरुद्ध अपने संघर्ष में हिंसा, आतंकवाद और जान से मारने की नात्सी मिसाल का ही अनुकरण किया है।

अप्रैल, १९६७ में यूनान में फाशिस्त कर्नलों ने सत्ता हड़प ली। उसी घड़ी से अमरीकी गुप्तचर्या ने अपना सारा ध्यान इटली पर केंद्रित कर रखा है। भड़कावा, "स्याह" और छद्म लाल आतंकवाद का बारी-बारी से सहारा लिये जाने की प्रविधि यहीं अपनी पराकाष्ठा पर पहुंची है। लेकिन ठीक इटली को ही इसके लिए क्यों चुना गया?

हाल ही में संयुक्त राज्य अमरीका में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की १० फरवरी तथा ८ मार्च, १९४८ की

* *Covert Action Information Bulletin*, No 3, January 1979, p. 18

मध्य-पूर्व के साथ सचार-मार्गों को नियन्त्रित करती है और बाल्कन देश उसकी सीमा से लगे हुए है। इटली मे अवस्थित अड्डों से उनकी कब्जेदार शक्ति (अर्थात सयुक्त राज्य अमरीका —लो० च) के लिए जिब्राल्टर तथा स्वेज़ के बीच भूमध्यसागरीय यातायात को नियन्त्रित करना और बाल्कन अथवा आसपास के इलाक़े में किसी भी स्थल पर काफी हवाई ताकत का उपयोग करना सभव है।"*

रिपोर्ट आगे कहती है कि अपने लक्ष्यो की सिद्धि के लिए सयुक्त राज्य अमरीका "अपनी राजनीतिक, आर्थिक तथा, यदि आवश्यक हो, सैनिक शक्ति का पूरा-पूरा उपयोग" करने के लिए तैयार है। और इसका मतलब है कि "कारगर अमरीकी सहायता" का आश्वासन "इटली में गैर-कम्युनिस्ट तत्वो को कम्युनिस्ट नियत्रण के सुदृढ़ीकरण को रोकने के वास्ते गृहयुद्ध के खतरे को उठाते हुए भी एक अतिम, ज़ोरदार प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। इस प्रसग मे अमरीकी सैनिक शक्तियो की "सीमित लामबदी" और "भूमिगत कम्युनिस्टविरोधी गुटो को वित्तीय तथा सैनिक सहायता प्रदान करने" की पूर्व-कल्पना की गयी थी।** अगर विधिसम्मत सरकार को उलटने का यह तरीका असफल हो गया होता,

---

* *Foreign Relations of the United States 1948 Vol III, Western Europe* US Government Printing Office, Washington, 1974, pp 765-769

** *Ibid*, pp 767, 777 779

उपयोगी था कि जहा माफिया की ही भांति वह भी एक सवृन सस्था है, वहा वह उसकी तरह कुत्सित नही लगता। फ्रासीसी क्रांति के समय कितने ही प्रमुख प्रबोधक फ्री मेसन थे। गरीबाल्दी और मात्सीनी भी फ्री मेसन थे। लेकिन यह बहुत-बहुत पहले की बात है। लॉजो का आभिजात्यप्रभु, विशेषाधिकारयुक्त ढाचा अपना काम कर चुका था। जहा नये सदस्य आम तौर पर वित्तपति और प्रतिक्रियावादी राजनीतिज्ञ थे, वहा वे क्रांतिकारी और समतावादी नारे, जो कभी मेसन सगठन के उच्च लक्ष्यों को द्योतित करते थे, शनै शनै सामान्य बुद्धि के विद्रूप मे परिणत हो गये थे। मेसनो ने इस बात को महसूस कर लिया था कि सी० आई० ए० और उसके पूर्वगामी सामरिक सेवा कार्यालय (सा० से० का०) ने उनके सगठन मे नवमुक्त यूरोप मे अपने प्रच्छन्न तथा गोपनीय प्रभुत्व को फैलाने की असीम सभावनाए देखी है।

ठेठ १९४२ मे ही सा० से० का० ने मैक्स कोर्वो नामक इतालवी मूल के अमरीकी को "इतालवी गुप्तचर्या योजना" तैयार करने के काम पर लगा दिया था, जिसमे इतालवी मेसन उत्प्रवासियो को एजेंटो की तरह भरती किये जाने का प्रावधान था। कोर्वो ने अपने एजेंटो के जाल मे जुजेप्पे ("जो") लूपीस को भी खीच लिया, जो आगे चलकर इतालवी सरकार मे मत्री बने। न्यूयॉर्क के गरीबाल्दी लॉज के सदस्य रादोल्फो पच्चीआर्दी को भी एजेंटो की कतारो मे लाया गया। ठीक है कि स्पेनी गृहयुद्ध मे पच्चीआर्दी ने

मेहनतकशों की पार्टियों और सगठनों के खिलाफ जनतंत्र और शांति की शक्तियों के विरुद्ध युद्ध। उनके द्वारा शुरू किये गये कार्य को बाद मे औरों ने आकर सभाला। मसलन, "प्रतिगुप्तचर्या के कवि" जेम्स एंगलटन ने कोर्वो द्वारा स्थापित एजेंटों के जाल में नये लोगों को शामिल किया, यानी उन फौजी अफसरों को जो स्कोर्त्सेनी द्वारा इल दूचे को हिरासत में भगा ले जाने और विमान द्वारा उत्तर इटली में गेस्टापो की छत्र-छाया में स्थापित "सालो गणराज्य" में पहुंचा दिये जाने के बाद भी मुसोलिनी के वफादार रहे थे और जिन्हें बाद में एंगलटन ने फासिस्त विरोधी शुद्धि-अभियान में बचाया था। कोर्वो के अनुसार इनमें से उन लोगों को, जिन्हें अभी इतालवी पुलिस या गुप्तचर्या में भरती करने का समय नहीं आया था, एंगलटन ने फ्रांको द्वारा प्रदत्त सरक्षण का लाभ उठाने के लिए स्पेन भेज दिया। सी० आई० ए० के एक प्रमुख अधिकारी जनरल वाल्टर्स*, वियतनाम के जल्लाद और सी० आई० ए० निदेशक विलियम कॉल्बी और सी० आई० ए० के राजनीतिक विभाग "हत्या-क्षमता" के सर्जक विलियम किंग हार्वी ने, यानी सी० आई० ए० के सर्वोत्कृष्ट कर्मियों ने इटली में ही जनतांत्रिक संस्थाओं के तलोच्छेदन में नैपुण्य पाते हुए व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया था। ये लोग अमरीकी दूतावास के घनिष्ठ सहयोग से काम करते थे। कोल्बी

फाशिस्त जनरल वीतो मीचेली को अपने बयान में यह कहना पड़ा कि सीद में अधिक 'नाजुक' मामलों से निपटने के लिए एक परमगुप्त प्रभाग है। इस प्रभाग को उन्होंने सुपर-सीद की संज्ञा दी।

इटालवी पत्रिका 'पैनोरामा' के अनुसार सुपर-सीद ही वह संरचना है, जो इटली की गुप्तचर्या को अन्य नाटो देशों की गुप्तचर सेवाओं के साथ जोड़ती है। बिल्कुल आरंभ से ही सी० आई० ए० ने इतालवी गणराज्य के भीतर नाटो के इस तत्वतः अनियंत्रणीय अभिकरण पर विध्वंसक सक्रिया को कार्यरूप देने का दायित्व सौंपा। रोबेर्नो फाएन्त्सा अपनी मीलान से १९७६ में प्रकाशित पुस्तक 'काले कारनामे' में कहते हैं कि यह "निरंतर कम्युनिस्ट-विरोधी आक्रमण की योजना" थी। इसे सी० आई० ए० और नाटो ने इटली तथा फ्रांस के लिए तैयार किया था। अमरीकी पक्ष की ओर से इसका कार्यान्वयन पहले जनरल वाल्टर्स और बाद में सी० आई० ए० के रोम केंद्र के प्रमुख कारमेसिनेस के नियंत्रण में था।

सुपर-सीद का काम अधिकांशतः अमरीकी पैसे से ही चलता था। 'पैनोरामा' के अनुसार "अब, इस पर इटली में सारी ही आतंकवादी कार्रवाइयों में शामिल होने का संदेह किया जाता है। चाहे कुछ हो, यह सवाल बना रहता है कि सुपर-सीद को जो पैसा सी० आई० ए० से मिलता था, क्या उसका इस्तेमाल सिर्फ दक्षिणपक्ष का वित्तपोषण करने के लिए ही होता था या उसे 'तनाव की रणनीति'

आंदोलन के नेता प्लेव्रिस के साथ संपर्क स्थापित किये। (यह "आंदोलन" तानाशाह मेताक्साम के विचारों से निर्देशित होता था, जिन्होंने ४ अगस्त, १९३६ को यूनानी संसद को भंग कर दिया था और राजनीतिक दलों पर पाबंदी लगा दी थी) अप्रैल, १९६९ में राउती ने पादुआ में एक गुप्त सम्मेलन में भाग लिया जिसमें समस्त उत्तरी तथा मध्य इटली में उकसावे की कार्रवाइयां करने का निश्चय किया गया था। इन उकसावों को दो कट्टर फासिस्टों फ्रांको फ्रेदा और जोवान्नी वेतूरा के पादुआ स्थित गुट द्वारा संगठित किया जाना था। फ्रेदा "आर्य" विचारों के प्रचारक और प्रकाशनगृह का प्रधान था।

पादुआ सम्मेलन के बाद फ्रेदा गुट "काम" में लग गया–नौ महीने की अवधि के भीतर उसने २२ हत्याओं और अग्नि-बमकांडों का आयोजन किया। इन सभी कार्रवाइयों की परिणति १२ दिसंबर, १९६९ को मीलान के कृषि बैंक में एक जबरदस्त विस्फोट में हुई, जिसमें १६ लोग मारे गये और ८० घायल हुए। इसी के साथ-साथ रोम में भी विस्फोट हुए।

अपने एजेंट जेड (जानेत्तीनी) के जरिए सीद (और, निस्संदेह, सुपर-सीद) को प्रस्तावित अपराधों के बारे में मालूम था, मगर उसने उन्हें रोकने के लिए कुछ भी नहीं किया। इन आतंकवादी कार्रवाइयों के कितने ही संगठनकर्त्ताओं–कट्टर फासिस्टों को सीमा पार करने में सहायता की गयी। उनके बजाय अराजकतावादियों को बलि के बकरे बनाया

गया। उनमें से एक – बासेदा – को अपराधी घोषित कर दिया गया। एक और अराजकतावादी पीनेल्ली मीलान पुलिस द्वारा पूछ-ताछ के दौरान मर गया। पीनेल्ली से पूछ-ताछ करनेवाले पुलिस आयुक्त काला-ब्रेज़ी की आतंकवादियों ने हत्या कर दी।

जांच के दौरान महत्त्वपूर्ण साक्ष्य नष्ट कर दिया गया। जब मुख्य आधिकारिक विवरण अन्तर्गम हुआ, तो गुप्तचर्या सेवाओं ने दूसरा विवरण गढ़ कई वर्ष बाद जाकर ही इस जघन्य अपराध के वा र्ताओं फ्रेदा और वेनूरा को कटघरे में लाया लेकिन कातादज़ारो में मुकदमे का अंत अप की शर्मनाक दोषमुक्ति में हुआ।

इस प्रकार इटली में वर्तमान आतंकवाद के की खोज हमें आंतरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रति अलबरदारों, सर्वोपरि नाटो के मनोवैज्ञानिक युद्धा-करणों, पर ले जाती है। वे व्यवस्थाभंजक शक्तियों लिए दंडमुक्ति सुनिश्चित करने का प्रयास कर है, ताकि तीन "मकारों" की सहायता से यंत्रों और आतंकवाद के सिलसिले को जारी सकें।

...रा देई वेती

...रा देई वेती ('हवाओं का गुलाब') "फासिस्त ...ता, वामपंथी बहाना, दक्षिणपंथी सत्ता-परिवर्तन"

के नमूने पर होनेवाले विद्रोहों के अविराम सिलसिले में अपने ढग का अनूठा षड्यत्र है।

१९७३ के वसत की बात है। मीलान में पुलिस आयुक्त कालाब्रेजी के सम्मान में निर्मित स्मारक का अनावरण समारोह हो रहा था। समारोह में भाग लेने के लिए इटली के प्रधान मत्री मारीआनो रूमोर विशेष रूप से आये थे। समारोह के दौरान भीड में एक दढियल आदमी ने "पीनेल्ली जिंदाबाद!" का नारा लगाते हुए एक हथगोला फेंक दिया। विस्फोट से चार लोग मारे गये, बीसियों घायल हुए और भगदड मच गयी। लेकिन रूमोर को कोई हानि नही पहुची और अपराधी को, षड्यत्रकारियों की आशा के विपरीत, मौके पर ही पकड लिया गया। पूछ-ताछ के दौरान वह यही दुहराता रहा कि वह पीनेल्ली की मौत का बदला लेना चाहता था। मगर असल मे रूमोर की हत्या को रोज़ा देई वेंती दल द्वारा आयोजित सत्ता-परिवर्तन के समारभ का सकेत होना था।

हथगोला फेकनेवाला बेर्तोली महज एक मोहरा था। वह एक सामान्य अपराधी था, जिसका राजनीति से कोई दूर का भी सबध नही था। इसके लिए कि उसका उद्देश्य विश्वसनीय प्रतीत हो सके, उसे "तजुरबा पाने" के लिए एक अराजकतावादी [illegible] में शामिल होने का आदेश दिया गया था। [illegible] बेर्तोली को जिसके पकडे जाने और अदालत [illegible]ने का खतरा था, इसराएल भेज दिया

निशाना – दे गोल

अगर फ्रास के प्रति सयुक्त राज्य अमरीका और नाटो की प्रच्छन्न नीति मे सबद्ध दस्तावेजे कभी प्रकाशित होती हैं, तो उनसे जनरल दे गोल द्वारा अनुसृत नीति के विरुद्ध लक्षित सहयोजित आक्रमण का अधिक सपूर्ण चित्र प्राप्त करना सभव हो जायेगा। यह तो सभी जानते हैं कि "बृहत फ्रास" के विचार, फ्रासीसी राष्ट्रपति द्वारा अमरीका के नेतृत्व को मानने से इन्कार और विशेषकर फ्रास के नाटो सैन्य सगठन से बाहर आने ने वाशिगटन मे तीखी प्रतिक्रिया उत्पन्न की थी।

दे गोल इस बात को भली भाति समझते थे कि डलेस की सोवियत सघ को "पीछे धकेलने" और द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामो की अवज्ञा करने की नीति एक नये सघर्ष की तरफ ले जा सकती है। उनका यह समझना सही ही था कि शीतयुद्ध की नीति सयुक्त राज्य अमरीका के लिए अपने मित्र देशो के हितो की कीमत पर एकागी लाभ उठाना, पश्चिमी यूरोपीय अर्थ तथा वित्त व्यवस्थाओ को शासित करना और उनकी इस निर्भरता से भारी मुनाफे प्राप्त करना सभव करती है। फ्रासीसी राष्ट्रपति ने सोवियत सघ के साथ राजनीतिक, आर्थिक तथा सास्कृतिक सबधो और यूरोपीय सहयोग के विचारो को अमरीकी अधिदेशन का प्रतितोलन माना।

फ्रास के चरम दक्षिणपथी दे गोल से उनके अल्जी-रिया के साथ सबधो का सामान्यीकरण करने के प्रयासो

को विशेषकर इसीलिए पेरिस में तैनात किया गया है कि वह खंडित श्रमिक संगठन खड़े करे और समाजवादी देशों में तोड़फोड़कार गुटों की सहायता करे। पोलैंड की हाल की घटनाओं में ए० एफ० एल० – सी० आई० ओ० की भूमिका इसकी एक मिसाल है। पोलिश समाचारपत्र 'त्रिबूना ल्यूदू' ने १९८२ के आरंभ में यह खबर दी थी कि इतालवी श्रम संघ ने, जो मूलत अमरीकी सहायता से ही स्थापित किया गया था, पोलैंड में एक सॉलिडेरिटी सम्मेलन में भाग लेने के लिए जो प्रतिनिधिमंडल भेजा था, उसके सदस्यों में लूइजी और पाओलो स्त्रीच्चोलो भी थे। इतालवी श्रम संघ के अंतर्राष्ट्रीय विभाग के प्रतिनिधियों की हैसियत से उन्होंने पोलैंड के चरम प्रतिक्रांतिकारी गुटों के नेताओं से भेंट की। उन्होंने इटली में "सॉलिडेरिटी के साथ एकजुटता" प्रदर्शनों का भी आयोजन किया। फरवरी १९८२ में वे इतालवी पुलिस द्वारा आतंकवादी लाल ब्रिगेड के सदस्य होने के आरोप पर गिरफ्तार कर लिये गये। ये दोनों सही अर्थों में दोहरे एजेंट थे – वे दोनों ही इटली के सबसे प्रतिक्रियावादी तथा अमरीकी वित्तपोषित मजदूर संगठन के सदस्य होने के साथ-साथ ही एक चरम वामपंथी संगठन के भी सदस्य थे।

लेकिन आइये, पेरिस-प्रसंग को फिर से जो वामपंथियों को अपनी मरजी के मुताबिक इस्तेम करने की सी० आई० ए० की प्रविधि और उ दूरगामी लक्ष्यों को प्रकट करता है। पेरिस में ग

में पहुच गये। राजहस कोई अकेले नही थे – "पेरिस की मई" के आदोलनकारियो मे उन्होंने और भी कई सी० आई० ए० प्रोत्तेजको को पाया।

स्थिति तनावपूर्ण थी। मई के अंत में राष्ट्रपति एलीसेई प्रासाद से चले गये। सेना ने अपने "सी० आई० ए० मित्रो" की सलाह पर अतिरिक्त कुमक बुला ली। इसके बाद जो हुआ, वह सर्वज्ञात है। दे गोल ने राष्ट्रीय विधानमडल को भग कर दिया और वह "मूक बहुसख्या" पेरिस की सडको पर निकल आयी, अमरीकी गुप्तचर्या ने "गोशी" आदोलन के प्रोत्तेजको के जरिए जिसे उकसाने के लिए इस कदर एडी-चोटी का ज़ोर लगाया था।

परिणाम? दे गोल अपना प्रभाव गवाने लगे और कुछ ही समय बाद उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया।

बास्क आदोलनकारी या "शात अमरीकी"?

उधर, वाशिंगटन के सारे ही प्रयासो के बावजूद फाशिस्त शासनो की स्थिति लगातार बिगडती जा रही थी। यूनानी "काले कर्नलो" का शासन, जिस पर इतना पैसा खर्च किया गया था और इतनी आशाए लगायी गयी थी, खतरे मे था। स्पेन मे फ्राको का शासन अपने अनिवार्य पतन के निकट पहुचता जा रहा था। पुर्तगाल मे सालाज़ार शासन मृत्यु-वेदना मे छटपटा रहा था।

थी थे, सूचित कर दिया गया था कि हत्या किस दिन होनेवाली है।*

बाद में स्पेन से शीर्षस्थ सैनिक न्यायाधीशों और वकीलों की हत्याओं और शासक दलों के कार्यकर्ताओं के अपहरणों की खबरें आयीं। १९८१ में स्पेनी बोरगेजे–अंतोनीओ तेहेरो मोल्तीना–ने अपने सह-अपराधियों के साथ आतरिक अस्थिरता और आतंकवादी खतरे के आगे सरकार की "शक्तिहीनता" को कारण बताकर स्पेनी ससद-भवन को कब्जे में ले लिया। विद्रोह को तो कुचल दिया गया, मगर अमरीकी सरकार स्पेनी सरकार को इस सफलता पर बधाई देना "भूल" गयी–प्रत्यक्षत, "शांत अमरीकियों" की लाक्षणिक निर्लज्जता के कारण ही।

लाल ब्रिगेडों के अजीब पहलू

इटली में तथाकथित लाल ब्रिगेडों की सरगरमियों में आठवें दशक के आरंभ में खासकर तेजी आयी। उनकी "चोट करो और भाग जाओ" की कार्यनीति ने विकसित होकर "अराजकतापूर्ण आतंकवाद" का रूप ले लिया। शहरी अवस्थाओं में यौद्धिक कार्य-कलाप को प्रचारित किया जाने लगा। हथियारों की दूकानों पर छापों और फिरौती के लिए अपहरणों

* Gonzales-Mata L., *Les vrais maitres du Monde* Paris, 1979, pp 111-116

तथाकथित अराजकतापूर्ण (अधा) आतंकवाद सी० आई० ए० द्वारा अपने मित्र नाटो-देशों की विभिन्न समान सेवाओं के सहयोग से निरूपित कार्यनीति है जिसका उपयोग अधिकांश सरकारों को अस्थिर करने और सबद्ध आबादी में एक सशक्त पुलिस राज्य की स्थापना को स्वीकार करवाने के लिए अभीष्ट कार्यक्रमों के एक मुख्य तत्व की तरह किया जाना चाहिए।

चरम वामपंथी नेताओं के अमरीकियों और दक्षिण पक्ष के साथ संपर्कों में कोई असामान्य बात नहीं है। पहले फासिस्ट और बाद में लाल ब्रिगेडों के एक नेता रेनातो कूर्चोओ पेरिस में लंबे समय तेग्री के साथ-साथ रहे थे। उन्हें अनेक बार गिरफ्तार किया गया, पर हर बार वह जेलों से बड़ी आसानी से निकल भागते थे, जो है तो अजीब, मगर उनके बहुत से मित्रों के लिए भी लाक्षणिक है। लेकिन जब उन्हें पीज़ा नगर के जेलखाने में डाला गया, तो एक अद्भुत संयोग से उन्हें किसी रॉनल्ड स्टार्क नामक अमरीकी के साथ एक ही कोठरी में रखा गया। स्टार्क ने कूर्चो को मध्य-पूर्व में अपने मित्रों के पते दिये जो हथियारों की खरीद में उनकी सहायता कर सकते थे। स्टार्क ने कूर्चोओ को यह भी सिखलाया कि विस्फोटकों को किस तरह इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

स्टार्क को जल्दी ही रिहा कर दिया गया यद्यपि उन पर कितने ही आरोप लगाये गये थे। यह ज्ञात है कि वह संयुक्त राज्य अमरीका में और बाद में बेल्जियम में शक्तिशाली मादक द्रव्य बनाया करते

की सहायता से स्थापित नवफ़ासिस्त काले इंटरनेशनल के सदस्य तोलों ब्लास्को ने इतालवी पत्रिका 'एऊरोपीओ' के सवाददाता से बाते करते हुए कहा था "हम एक आश्चर्यजनक परिघटना के प्रत्यक्षदर्शी हैं। हमने दिखला दिया है कि माओ के विचार हिटलर के विचारो के निकट हैं " "स्पेन में लाल ब्रिगेडो में कितने ही लोग चीन-समर्थक रुझान के हैं। हम उनसे कहते हैं 'स्वागतम्!'"*

दक्षिणपक्ष को वामपक्षी आवरण ओढ़ने से कोई आपत्ति नहीं। लैस्ली के सिद्धातकार इसकी उपयोगिता को बहुत पहले ही खोज चुके हैं – वामपथी आतकवादी उकसावो के लिए बढ़िया आवरण पेश करते हैं, फिर चाहे वे अपने वास्तविक विश्वासो के अनुसार काम कर रहे हो, अथवा खरीदे हुए प्रोत्तेजक ही हो। इस आवरण का कैसा भी राजनीतिक अपराध करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। आल्दो मोरो की हत्या इसकी एक मिसाल है।

"मैं संयुक्त राज्य अमरीका मे सर्वथा कोई सहानुभूति नहीं पाता"

कैनेडी बधुओ की हत्याओ की ही भांति इटली की ईसाई-लोकतात्रिक पार्टी के अध्यक्ष आल्दो मोरो की

* *L'Europeo*, 17.XI.1978, 18.I.1979

सामग्री इतनी अपर्याप्त सिद्ध हुई कि ब्रिगेडवाले अपने इस धमकीभरे वचन को भी पूरा न कर सके कि वे सनसनीखेज रहस्यों को प्रकाशित करने जा रहे हैं।

मोरो का अपहरण करने का निश्चय क्योंकर किया गया? उसकी प्रेरणा किसने दी? असहाय बंदी के मारे जाने पर किसने जोर दिया जब यह स्पष्ट था कि उससे लाल ब्रिगेडों को फायदे की जगह नुकसान ही ज्यादा होगा?

सबसे तनावपूर्ण घड़ी में, जब यह आशा अब भी बनी हुई थी कि मोरो को बचाया जा सकता है, रोम की एक समाचार-एजेंसी ने यह रिपोर्ट प्रसारित की "मोरो के अपहरण के मूल में जो निदेशनकारी केंद्र है, उसकी लाल ब्रिगेडों से कोई भी सामान्यता नहीं है।" और इसके आगे कहा गया था उसका अपहरण सिर्फ इस सूरत में ही कारगर हो सकता है कि वह ईसाई-लोकतंत्रवादियों और कम्युनिस्टों को सौहार्द-स्थापन की ओर निरन्तर धकेलनेवाले मौजूदा रुझान को उलटने में सहायक हो।"*

यह समाचार-एजेंसी कारमीनो पेकोरेल्ली की थी जो लीचो जेल्ली के भूतपूर्व मित्र और उनके पी-२ लॉज के सदस्य थे। लेकिन जेल्ली से गुप्तचर सेवाओं की फाइलें प्राप्त करने के बाद जिनमें इतालवी राज नीतिज्ञों से संबंधित फाइलें भी थीं पेकोरेल्ली अपने ही सहयोगियों को ब्लैकमेल करने लगे। इन रहस्योद्-

भेज रहे हैं। मोरो ने अपने सहकारी पीज़ानू को वाशिंगटन भेजा, ताकि वह उनकी वाशिंगटन यात्रा की सभावनाओं की थाह ले सके, जो इस तनाव को कम कर सकेगी। पीज़ानू के साथ उदासीनता से पेश आया गया। ज़्बीग्नेव ब्र्ज़ेज़ीन्स्की के सहायक ने उन्हें बताया कि वाशिंगटन मे "कोई भी ईसाई-लोकतन्त्रवादियों के नेता से मिलना नहीं चाहता"।

सयुक्त राज्य अमरीका को यह आशका थी कि मोरो की नीति यूरोप मे समग्र स्थिति को विशेषकर फ्रास में आम चुनावों को जिसमे वामपक्ष की विजय बिलकुल सभाव्य प्रतीत होती थी, प्रभावित कर सकती है। १२ जनवरी, १६७८ को अमरीकी विदेश मन्त्रालय ने एक कडा वक्तव्य प्रकाशित किया, जिसमे फ्रांसी-सियों और इतालवियों को स्पष्ट सलाह दी गयी थी कि वे कम्युनिस्टों को अपनी सरकारों मे किसी भी रूप मे प्रवेश न दे।

मोरो जानते थे कि इस चेतावनी का मतलब क्या है। उन्होंने चेरवोनो से कहा था "ये लोग इसके लिए सब कुछ करेंगे कि खट्टे से खट्टे कैलीफो-र्नियाई सतरे बेच सके।" निस्सदेह "सतरे" शब्द का प्रयोग यहा श्लेष मे किया गया था – कैली-फोर्निया अमरीकी सैनिक-औद्योगिक गठजोड का हृद-स्थल था और अगला अमरीकी राष्ट्रपति वहीं से

।।,था।

।८ अधिकाधिक कटु होने जा रहे

प्रकाशित एक समाचार के

उसके सदस्यो मे प्रमुख बैकर तथा उद्योगपति, अखबारो और टेलीविज़न केद्रो के मालिक, ईसाई-लोकतत्रवादी तथा समाजवादी मत्री और ससदीय नेता भी थे। लॉज के अफ्रीका और लातीनी अमरीका के साथ सपर्क थे, मगर घनिष्ठतम सबध सयुक्त राज्य अमरीका के साथ ही थे।

इतना ही नही – पी-२ लॉज के ज़रिए कोई २०,००० इतालवी मेसन सी० आई० ए० की एक तरह की शाखा का निर्माण करते थे। ऐसा क्यो? इसलिए कि अन्य पश्चिमी यूरोपीय देशो की भाति इटली मे भी मेसोनिक लॉजो का युद्धोत्तर पुनर्गठन अमरीकी गुप्तचर्या के नियत्रण मे हुआ था। इस पुस्तक मे पूर्वोद्धृत मैक्स कोर्वो के कथनानुसार सी० आई० ए० का सचालन करनेवाले अमरीकी मेसन फौरन ही इटली जा पहुचे, जो अभी पूरी तरह से मुक्त भी नहीं हुआ था, ताकि वहा अपना जाल फैला सकें। यह कार्य फ्रैंक जील्योती नामक एक मेसन और शीर्षस्थ सी० आई० ए० अधिकारी के निदेशन मे हुआ। उदाहरण के लिए, जेल्फी स्पेनी गृहयुद्ध मे फासिस्तो के पक्ष में लड़नेवाले स्वयसेवको मे एक थे। मुसोलिनी की सेना मे अफसर बनने के बाद उन्होने इतालवी प्रतिरोध आंदोलन के छापामारो के खिलाफ अपनी बर्बरतापूर्ण कार्रवाइयो से कुख्याति अर्जित की थी। वह उन लोगो की एक मिसाल थे, जिन्हे नये अमरीकी मेसन संगठनो में लिया गया था।

जैसे कि पहले ही बतलाया जा चुका है, सयुक्त

अनुसार ३ मार्च को बोलोनिया विश्वविद्यालय में भाषण देते हुए राजदूत गार्डनर ने कहा था "आल्दो मोरो इतालवी राजनीतिक रंगमंच पर सबसे खतरनाक और दुहरी बात करनेवाले व्यक्ति हैं।"

और १६ मार्च को मोरो को राह से हटाने के षड्यन्त्र के पलीते में फानी मार्ग पर चिनगारी लगा दी गयी।

नाटो के कठपुतली नचानेवाले

एक भेंटवार्ता में लीचो जेल्ली ने कहा था कि वह बचपन से ही ऐसा कठपुतली नचानेवाला "बूरात्तीनाइओ" बनने का सपना देखते आये हैं, जो "सत्ता के संचालकों" सहित लोगों को मन-मरज़ी के मुताबिक़ नचा सकता है। यह कोई कोरी डींग नहीं थी – पी-२ लॉज के लगभग १,००० सदस्यों* में इटली की सभी सशस्त्र सेनाओं के शीर्षस्थ अधिकारी, समस्त गुप्तचर सेवाओं के संचालक सम्मिलित थे – जनरल ग्रासीनी, सानोवीतो, जान्नीनी और पेलोज़ी,–नाटो संगठन में एक उच्च पद पर नियुक्त [illegible] तोरीज़ी।

---

*यह ओरेन्सो में जेल्ली के दस्तावेज़ों में उल्लिखित नामों [illegible] प्रेस रिपोर्टों के अनुसार, संख्या २,००० से अधिक

[illegible] [illegible] [illegible] का विरोध किया जिसमें [illegible] में अधिक लोग मारे गए और घायल हुए थे। [illegible] और उनके [illegible] के साथ [illegible] [illegible] में [illegible] जुड़े हुए थे।

ईसाई-लोकतांत्रिक पार्टी के राजनीतिक सचिव पीक्कोली ने कहा था कि मोरो को इसलिए हटाया गया कि वह नहीं चाहता था कि इटली मेसनी गतिविधियों का पूरा मंच बन जाये। जुलाई, १९८१ में पुलिस इंस्पेक्टर मामौर के परिवार की मार्सेई के एक शांत उपनगर में बर्बरतापूर्वक हत्या कर दी गयी। मामौर पी-२ लॉज के फ्रांसीसी समकक्ष–यरूशलम मंदिर के नाइटों के संघ–से संबद्ध रहे थे। वह तुर्की में हथियार खरीदा करते थे और उन्हें इटली भेज देते थे जहां वे लाल ब्रिगेडों को दे दिये जाते थे। मामौर को ऐसे एक सौदे से हुई प्राप्तियों को खा जाने के कारण मारा गया था। इसके अलावा, फ्रांसीसी अधिकारियों की जांच से यह पता चला कि हथियारों का प्रेषण सी० आई० ए० के निर्देशों पर जेल्ली के लॉज द्वारा संगठित किया जाता था। इतालवी और अमरीकी गुप्तचर्या सेवाओं के साथ यह लॉज इटली में "काले" और "लाल" आतंक का संचालन करता था। इस प्रकार इटली लंबे समय से अमरीकी "तनाव की रणनीति" के लिए भारी कीमत अदा करता आया है।

आज यह सुज्ञात है कि जेल्ली का न्यूयार्क के इतालवी समुदाय के नेता और रॉनल्ड रैगन के राष्ट्रपति

के चुनाव-अभियान के सगठनकर्ताओ मे एक फिलिप गूआरीनो के साथ अकमर पत्रव्यवहार होता था। गूआरीनो ने अपने एक पत्र मे लिखा था "रिपब्लिकनो की हालत बहुत अच्छी है। मुझे पक्का विश्वास है कि रैगन और बुश जीतेंगे।"

जेल्ली ने बिलकुल कामकाजी लहजे मे जवाब दिया था "अगर तुम यह चाहते हो कि राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी की इटली मे अनुकूल छाप बने, तो मुझे अपनी पसद की सामग्री भेजो। और मैं इसकी व्यवस्था करूगा कि वह प्रकाशित हो।"

और जेल्ली और उनके लॉज के सभी तरह के घोटालो और अपराधो मे शिरकत के प्रकाश मे आने के बाद भी इस महाषड्यत्रकारी को वाशिगटन आमत्रित किया गया। जेल्ली राष्ट्रपति रैगन के शपथग्रहण समारोह मे एक अतिविशिष्ट अतिथि थे।

क्या इस पर अचरज होता है? रॉनल्ड रैगन की पहली यूरोपीय भेटवार्ता 'इल सेत्तीमनाले' मे प्रकाशित हुई थी। इस पत्रिका पर जेल्ली के साथियो का स्वामित्व था। दूसरे शब्दो मे, अमरीकी राष्ट्रपति ने "आतकवाद के जनन केद्रो पर प्रहार करने" की अपनी आकाक्षा को और किसी नही, बल्कि स्वय सी० आई० ए० के निदेशन के अतर्गत और अमरीकी प्रशासन की शुभकामनाओ के साथ लीचो जेल्ली द्वारा सर्जित आतकवाद के जनन केन्द्र के आगे ही स्पष्ट किया था।

क्या इस पर भी कोई टीका करना आवश्यक है?

अस्तित्व में आया था, जिसने न केवल आनेवाले कई वर्षों के लिए अमरीकी रणनीति को आक्रामक ही नहीं बनाये रखा, बल्कि तत्वत, कार्टर सिद्धांत के आधाररूप का काम भी किया, जिसे सर्वप्रथम जनवरी, १९८० में इस प्रकार सूत्रित किया गया था

"फारस की खाड़ी के क्षेत्र में बाहरी शक्तियों द्वारा नियंत्रण प्राप्त करने के किसी भी प्रयास को संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों पर प्रहार माना जायेगा, और इस तरह के प्रहार का सैनिक शक्ति सहित आवश्यक हर साधन से निवारण किया जायेगा।"*

दोनों ही सूत्रीकरणों में युग्मजों जैसी समानता है। लेकिन फिर भी उनके बीच एक तात्विक अंतर है—आइज़नहॉवर सिद्धांत जहां किसी के "सहायता का अनुरोध" करने के प्रत्युत्तर में अमरीकी हस्तक्षेप की परिकल्पना करता है, वहां कार्टर सिद्धांत अमरीकी राष्ट्रपति को सैनिक शक्ति का, जहां कहीं भी वह "संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों" पर "प्रहार" का खतरा महसूस करे वहां उपयोग करने का अनन्य अधिकार प्रदान करता है।

कार्टर सिद्धांत की बात करते समय इसका विशेषकर उल्लेख किया जाना चाहिए कि अपने निरूपण में उसने राष्ट्रीय सुरक्षा के बारे में राष्ट्रपति के तत्कालीन विशेष सलाहकार ब्रज़ेज़ीन्स्की द्वारा प्रतिपादित तथा-

---

* *The Washington Post*, February 4, 1980, p A 25

रिडामरन जैसी टहल द्वारा निर्देशित कार्य
अन्तर्गत जासूसों और तोड़फोड़ करनेवालों के दल
गये थे सिर्फ यही मतलब निकाला जा सकता
लेबनान पर इसराइल के पिछले आक्रमण और फिलिस्
और लेबनान जनगण के प्रति सियोनवादियों
अनुसृत जनसंहार की नीति को ह्वाइट हाउस से
प्रोत्साहन भी यही प्रमाणित करता है।

सल्वाडोर से, जहा अमरीकी परामर्शदाता श
प्रिय नागरिकों के कत्लेआमों का निर्देशन कर
है, लेकर थाई-कपूचिया सीमा तक, जहा अम
द्वारा समर्थित पोल पोत के बचे-खुचे गिरोहों ने श
ली है, यही सुस्थापित और सुस्पष्ट कार्य-प्रणाली
में आती है। सयुक्त राज्य अमरीका की सैट्रल इटैलि
एजेसी रूभी का वह मुख्य केंद्र बनी हुई है, जो अ
राष्ट्रीय तथा सामाजिक प्रगति के लिए स
आतंकवादी कार्रवाइयों का

अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के तीन भूतपूर्व सदस्यों के बीच एक बैठक में पैदा हुआ था, जिनमें से एक पोटग्वाशी नेवावासी थे, जो अमरीकी सूचना सेवा के कार्यालय में एक समय काम करते थे।"

गॉर्डन विंटर के अनुसार वस्तुत लोकप्रिय अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रभाव का, जिसे आबादी के सभी समूहों का समर्थन प्राप्त है प्रतिकार करने के प्रयास में सी० आई० ए० दक्षिण अफ्रीका में कई अफ्रीकी संगठनों को पैसा देती है। विंटर आगे कहते हैं कि अमरीकी गुप्तचर्या दक्षिण अफ्रीका में पैसा पहुंचाने के प्रयोजन से संयुक्त राज्य अमरीका के अनेक संगठनों का उपयोग करती है जिनमें एक विध्यानुसार नागरिक अधिकार रक्षार्थ अमरीकी वकील समिति भी है। १६७७ में इस समिति के जरिए कोई १० लाख डॉलर की रकम भेजी गयी थी। जनरल वान डेन बर्ग ने विंटर को बतलाया था कि सी० आई० ए० जोरों से नये एजेंटों की तलाश कर रही है। वान डेन बर्ग ने ज़ोर देकर कहा कि "सी० आई० ए० इस दौड़ में सभी अज्ञात घोड़ों का समर्थन करती है, ताकि चाहे जो भी घोड़ा जीते, अमरीका का इनाम की रकम में हिस्सा रहेगा। और इनाम है हमारे रणनीतिक खनिज निक्षेप और सभवत इतने ही महत्व की हमारी विराट और सस्ती श्रम शक्ति।"

राष्ट्रपति रैगन के प्रशासन में दक्षिण अफ्रीकी सेवा के साथ सी० आई० ए० के सहयोग ने भी बड़ा आकार ग्रहण कर लिया। संयुक्त राज्य

रीका मे तथा अन्यत्र विरोध-प्रदर्शनो के
, १९८१ मे दक्षिण अफ्रीकी सैनिक गु
पाच उच्चाधिकारी वाशिंगटन आये और
ीय सुरक्षा परिषद तथा अमरीकी सैनिक गु
अधिकारियो के साथ विचार-विमर्श किया।
ा सघ मे सयुक्त राज्य अमरीका की प्र
 कर्कपैट्रिक ने दक्षिण अफ्रीकी सैनिक गुप्त
न, जनरल पी० डब्ल्यू० वान डेर वैस्टह्
ार्क मे अपने यहा भेट की। ह्वाइट हाउस ने
ि कहा कि उसे "मालूम नही था" कि
की आगन्तुक गुप्तचर्या अधिकारी हैं, औ
, उसने उनसे सयुक्त राज्य अमरीका
 को भी कह दिया – अलबत्ता बातचीत के
 मोज़ाबीक मे प्रतिक्रांतिकारी भूमिगत
सगठन मे दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की
ज्ञात है। और इसमे इन दोनो गुप्तचर्या से
० आई० ए० और राष्ट्रीय गुप्तचर्या से
योग प्रत्यक्ष है।

सी० आई० ए० ने मोज़ाबिक मे अपने
 देश के स्वतत्रता प्राप्त करने के बहुत [illegible]
ना शुरू कर दिया था। इस पुर्तगाली उपनिवेश
 व्यवसाइयों, पत्रकारो, वैज्ञानिको अथवा राजनयज्ञो
 रूप मे आनेवाले अमरीकी एजेंट ऐसी हर सूचना
त्र किया करते थे जो पुर्तगाली औपनिवेशिक
साम्राज्य के ढहने की सूरत मे उपयोगी सिद्ध हो
ती थी।

फ्रेलीमो (मोज़ाबीक मुक्ति मोरचा) की विज और स्वतत्रता की उद्घोषणा के बाद सी॰ आई॰ ए ने मोज़ाबीक मे प्रगतिशील शासन को अस्थिर कर और रोडेसिया तथा दक्षिण अफ्रीका मे राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन की जडे काटने के लिए रोडेसियाई और दक्षि अफ्रीकी गुप्तचर सेवाओ के साथ अपने सहयोग व और बढाया। उदाहरण के लिए, सी॰ आई॰ ए॰ एजे ने इयान स्मिथ की गुप्तचर सेवाओ को मोज़ाबी मे ज़िबाब्वेई शरणार्थी शिविरो की अवस्थिति वारे मे सूचना प्रदान की। इस जानकारी का उपयो करते हुए रोडेसियाई सेना ने मोज़ाबीक मे पूरे के पू गावो को मिट्टी मे मिलाया और उनके शान्तिप्रि निवासियो को बेरहमी के साथ मौत के घाट उतारा

वाशिगटन द्वारा दक्षिणी अफ्रीका मे मुक्ति आदोलन को "आतकवादी" घोषित किये जाने ने दक्षिण अफ्रीक नसलवादियो की हिम्मत को बढाया और स्वतत्र अफ्रीक देशो के विरुद्ध उनकी भडकावे की कार्रवाइयो क और भी उद्दडतापूर्ण बनाया। ३० जनवरी, १६८ को दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य ने कहने को तो अफ्रीक राष्ट्रीय काग्रेस के एक अड्डे को नष्ट करने के उद्देश्य से, पर अमल मे स्त्रियो, बच्चो और बूढो सहित दक्षिण अफ्रीकी शरणार्थियो के खिलाफ ताजीरी कार्रवाई करने के लिए मोज़ाबीक की राजधानी मापूतो के निकट अपने छतरी सैनिक उतारे।

बाद मे पता चला कि नसलवादियो ने अपनी कार्र-ई को सी॰ आई॰ ए॰ के साथ समन्वित किया था,

और प्रिटोरिया द्वारा इस सूचना का अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के खिलाफ सशस्त्र छेड़छाड़ की योजना बनाने में उपयोग किया जाता था।

जासूसों को एक पत्रकार सम्मेलन में पत्रकारों के सामने पेश किया गया। सी० आई० ए० का एक एजेंट मोज़ाबीकी विदेश मंत्रालय का उच्चाधिकारी होमें शीनाल मास्सीगा था। सी० आई० ए० ने उसके साथ पहले-पहल संपर्क १६६६ में, जब वह संयुक्त राज्य अमरीका में अध्ययन कर रहा था, अपने एक कर्मी के जरिए स्थापित किया था, जिसने अपने को विली कहकर परिचित करवाया था। नौ साल बाद जब मास्सीगा संयुक्त राष्ट्र महासभा में मोज़ाबीकी प्रतिनिधिमंडल के सदस्य की हैसियत से आया, तो विली ने उससे फिर संपर्क स्थापित किया, उसे पैसा देने की पेशकश की और मास्सीगा सहयोग करने को तैयार हो गया। मास्सीगा ने स्वीकार किया कि वह मापूतो में सी० आई० ए०-कर्मियों को नियमित रूप से गुप्त सूचनाएं दिया करता था।

अल्मीडू चिवीते एक और सी० आइ० ए० एजेंट था, जो मोज़ाबीकी जनरल स्टाफ के सैनिक रसद विभाग का प्रधान था। उसे १६७८ में भरती किया गया था और मोज़ाबीकी सेना द्वारा प्रयुक्त हथियारों की किस्मों की पूरी सूची तैयार करने और सैनिक इकाइयों की संख्या, प्रशिक्षण तथा अवस्थिति के बारे में और मोज़ाबीक में स्थित ज़िबाब्वेई तथा दक्षिण अफ्रीकी मुक्ति आंदोलन के सशस्त्र दस्तों की गतिविधियों के

किये गये एक वक्तव्य में कहा गया है कि "सी० आई० ए० स्वतंत्र अफ्रीकी देशों में अस्थिरता लाने के उद्देश्य से दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य का प्रतिक्रांतिकारियों और दस्यु-दलों के मुख्य अड्डे की तरह उपयोग करती है। यह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि दक्षिणी अफ्रीका में दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य साम्राज्यवाद की ध्वंसात्मक रण-नीति का मुख्य उपकरण बन गया है।"

मोज़ाबीक में सी० आई० ए० के जासूसी जाल के रहस्योद्घाटन ने वाशिंगटन को नाराज़ कर दिया। अमरीकी प्रशासन ने जासूसी के आरोपों को एकदम अस्वीकार करते हुए और मोज़ाबीक को सज़ा देने के उद्देश्य से उसे खाद्य पदार्थों की पूर्ति सहित सभी तरह की सहायता के निलंबन की घोषणा कर दी।

मोज़ाबीक के विदेश मंत्री भोआकीम चिस्सानो ने इस अमरीकी निर्णय को स्वतंत्र अफ्रीका के विरुद्ध आर्थिक युद्ध का अभिन्न अंग बताया। रैगन प्रशासन ने मोज़ाबीक लोक गणराज्य के खिलाफ, जिसने सी० आई० ए० पर हाथ उठाने की जुर्रत की थी, ये प्रतिषेध लागू करने का निर्णय कितनी आसानी और जल्दी से ले लिया! ये निद्य कदम उठाने में अमरीकी सरकार को सिर्फ कुछ ही दिन लगे। दूसरी तरफ, नसलवादी दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आर्थिक प्रतिषेधों का लगाया जाना रोकने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका ने भरसक सभी कुछ किया है और किये जा रहा है।

मोज़ाबीक में सी० आई० ए० का भंडाफोड़ हुए अभी कुछ ही महीने हुए थे कि उसका एक नया कार-